शिक्षा अध्ययन की परम्परागत प्रणालियां

१ शिव-संकल्प व्याख्या 09 03 1986

जीते रहो! देखों मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा कल्याणकारी है वह हमारा देवों का देव है। इसीलिए उसे हमारे यहाँ देवों का देव कहा जाता है।

परमात्मा का शिव स्वरूप

तो हमारे यहाँ, उस महामना मेघ्रा स्वस्ति ब्रहा मानो वृष्टि करने वाला है। हम उस परमपिता परमात्मा, जो कल्याणकारी शिव कहलाता है, हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा, अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहते हैं, और हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महानत्ता का वर्णन करता रहता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप माने गए हैं क्योंकि जब वह कल्याणकारी हैं तो वह स्रोत कहलाते है। तो इसीलिए आज हम उस महामना, अपने प्यारे देव की महिमा का गुणगान गाते चले जा रहे थे, और हमारा वेदमन्त्र ये कहता है कि हमें शिव की उपासना करनी चाहिए। प्रत्येक मानव को व्रती रहना चाहिए। क्योंकि जो व्रती मानव है वही तो महामना, उस देव की उपासना कर सकता है और जिसके द्वारा मानो व्रत नहीं होता, जो व्रतों का स्वामी है, वह इसको विश्वास नहीं कर सकता। तो इसीलिए हमारा वेदमन्त्र यह कहता है हे मानव! तू अपने को व्रती बना। क्योंकि व्रत करने वाला मानव संसार में महान् कहलाता है। मानव जब व्रती बनता है, तो अपनी अन्तरात्मा की जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती रहती है, उन ध्वनियों के साथ में मानो देखो, अपनी प्रवृत्तियों का समन्वय करता रहता है, और जब उन ध्वनियों का मिलान होता है तो मानव व्रती बना करता है।

संकल्पवादी शिव

मुझे स्मरण आता रहता है ऋषि-मुनियों का जीवन। बेटा! एक-एक वेदमन्त्र को लेकर वे यह व्रत को धारण करते रहे है। और वह अपने में व्रती बना करते हैं। जैसे हमारे यहाँ याज्ञिक, याग करने वाला, यज्ञमान अपने में व्रती बना रहता है और जब वह व्रती बन जाता है तो उसकी अन्तरात्मा की जो पवित्र ध्वनि है, वे परमपिता परमात्मा को अग्रणीय बनाते हुए, अपने में महान बना करती है। संसार का कोई भी प्राणी हो, सबसे प्रथम वह व्रती बनता है, संसार में जब माता-पिता अपने में व्रती बनते हैं, तो उसके पश्चात् वह महानता की प्रतिभा को जन्म देते है। उस महानता का जब जन्म हो जाता है, तो उसका नामोकरण पवित्र बन जाता है। तो इसीलिए वेद का मन्त्र कता है, हे मानव! तू शिव, उस परमपिता परमात्मा की उपासना कर। मानो जिससे, अनादिकाल से जिसकी ऋषि-मुनि उपासना करते रहे हैं और शिव-संकल्वादी बने है। क्योंकि शिव कहते हैं जो संकल्पवादी हैं, उसका नामोकरण शिव कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ जो रात्रि को अन्धकार से प्रकाश में लाने वाला है, मानो वही तो शिव कहलाता है। तो हमारे आचार्यों ने बेटा! जब शिव की उपासना करनी प्रारम्भ की, मानो शिव नाम हमारे वैदिक-साहित्य में, भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में बेटा! उसका रूपण किया गया है। क्योंकि शिव नाम परमपिता परमात्मा का है और जहाँ शिव परमात्मा को कहते हैं वहाँ शिव नाम बेटा! सूर्य को कहा जाता है। वह सूर्य मानो अन्धकार से प्रकाश को उत्पन्न करने वाला है, प्रकाश को लाने वाला है। वह स्वतः अपने में प्रकाशित रहता है। तो मानो देखो, शिव नाम बेटा! हमारे यहाँ सूर्य को कहा जाता

है।

मैंने बहुत पुरातन काल में कुछ चर्चाएं की हैं और विचार दिया है कि हमारे यहाँ बेटा! जब देखो, ये सूर्य अपने में प्रकाश देता है तो रात्रि के मानो देखो, अन्धकार को अपने में धारण करने लगता है। इसी प्रकार जैसे अन्धकार को धारण किया जाता है, ब्रह्मे वर्णा प्रीहि वृत देवाः मेरे प्यारे! यह जो सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है, यह अन्धकार को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। माने देखो, यह पृथ्वी जो विष उगलने लगती है, ये ऊष्णा बन जाती है, तो यह सूर्य ही अपनी आभा में विष को निगल जाता है और वृष्टि का प्रादुर्भाव हो जाता है। वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है और वृष्टि के मूल में मेरे पुत्रो! अमृतमयी होता है। जिस अमृत को पान करने के पश्चात् मुनिवरों! देखो, वह मानवीय आभा में सदैव मानव रत्त रहने लगता है और पृथ्वी अपना विष उगलना शान्त कर देती है।

तो मुनिवरों! देखो, हमें विचारना यह है, कि हम मुनिवरों! देखो, हम विष को अपने में धारण न करें। अमृत को लाने का प्रयास करें। हम स्वतः अमृतमयी बनने का प्रयास करें। तो बेटा! देखो, हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है? वेदमन्त्र यह कहता है कि हे शिव! तू कल्याणकारी है, तू कल्याणमयी आनन्द को प्रदान करने वाला है। इसीलिए बेटा! उस महा देव को हमारे यहाँ शिव कहा जाता है। इसीलिए मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे कई काल में वर्णन कराया कि शिवरात्रि आती है और शिवरात्रि क्यों कहा जाता है? हमारे यहाँ, परम्परागतों में, अतीत के काल की नाना प्रकार की शिव की महानता की गाथाएं आती रहती है। परन्तु देखो, ये गाथाएं अपने में अद्वितीय मानी जाती है। मैंने पुरातन काल में इन गाथाओं को कई काल में प्रकट करते हुए कहा है क्या मुनिवरों! देखो, कि शिव नाम जो अन्धकार को नष्ट करने वाला है, प्रकाश में मानो देखो, जो समाज को लाने वाला है उसका नाम शिव है पुरातन काल में हमारे यहाँ शिव नाम के राजा हुए हैं और वह शिव, नाम के राजा मेरे प्यारे! देखो, अपने राष्ट्र का शुद्धिकरण करते रहते थे। अपने राष्ट्र में मानो वेदों की प्रतिभा को प्रतिभाषित करते रहते थे। शुद्धिकरण करते हुए उसको महानता की वेदी पर लाने का प्रयास करते रहते थे। तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, शिव नाम यहाँ राजा को कहा गया है। तो राजा, अपने राष्ट्र में अपने को शिव-संकल्पवादी बनाता है। शिव नाम जो कल्याणकारी है परमपिता परमात्मा का नामोकरण कहा जाता है। वही शिव मेरे प्यारे! देखो, हमें एक महानता की ज्योंति को प्रदान करने वाला है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें देने नहीं आया हूँ। मैं केवल ये चर्चा तुम्हें प्रगट करने के लिए आया हूँ कि हमें मुनिवरों देखो, अपने में महान् और विचित्र बन करके, परमपिता परमात्मा के मानो देखो, संकल्प को धारण करना है, जिस संकल्प के द्वारा, हमारी मानसिक प्रवृत्तियां ऊँची बन जाएं। और राजा के राष्ट्र का वर्णन प्रायः हमारे प्रायः वैदिक साहित्य में आता रहता है कि मानो देखो, राजा का नामोकरण भी शिव कहा जाता है। वह जो शिव हमारा कल्याणकारी है। मुनिवरों! देखो, शिव नाम पिण्ड को भी कहा जाता है। जो वह पिण्ड कौन-सा है जब सृष्टि का प्रारम्भ होता हे तो मुनिवरों! वे परमपिता परमात्मा जो शिव कहलाते हैं जो कल्याणकारी है मानो देखो, उसकी आभा में बेटा! उसका जन्म होता रहता है। विचार-विनिमय क्या? मेरे प्यारे! इस पिण्ड का आकार बना करता है। और पिण्डाकार का मानो देखो, जब अपने में उसका जब महत्तत्व से उसका समन्वय होता है तो उसकी भिन्न-भिन्न प्रकार की विभक्त क्रियाएं बन जाती हे और वह भिन्न-भिन्न स्वरूपों में परिणत होता रहता है तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है कि हमें अपने में बेटा! देखो, शिव संकल्पवादी बनना है और परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड को हमे मानो देखो,

पिण्डाकार में हमें दृष्टिपात करना है जैसे मानो देखो, पिण्डाकार वाला यह जो ब्रह्माण्ड है यह अपनी आभा में बेटा! एक-एक परमाणु बेटा! पिण्डाकार बना हुआ है। वह मानो पिण्डाकार बन करके अपनी आभा में निहित हो रहा है। आओ, मेरे प्यारे! आज हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है क्या हम मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए उस परमपिता परमात्मा को, अपना उपास्य देव स्वीकार करके हुए इस संसार सागर से पार होने का हमें प्रयास करना है।

आओ मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र हमें एक ऊँची प्रेरणा दे रहा है, ऊर्ध्वा में गति बना रहा है क्योंकि यह संसार अपने में अद्वितीय रूपों में रत्त होने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, यह आज का हमारा जो विचार है मानो देखो, यह उद्गीत गा रहा है कि हमें उस परमपिता परमात्मा के विशुद्ध रूप का अपने में वरण अपने में शिव संकल्पवादी बनना चाहिए, जिससे हमारा मन मानो पवित्रता की वेदी पर रत्त हो जाए। हे प्राण स्वरूप! हमारा जीवन, अपने में उद्गीत गाने वाला महानता की आभा में रत्त रहने वाला हो। आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा जो वैदिक साहित्य है, वह हमें अपने में पुकार रहा है। वैदिक साहित्य यह कहता है क्या हे मानव! तू अपने में याज्ञिक प्रतिक्रियाओं में रत्त होता चल। यज्ञं ब्रह्मा लोकां विप्रं ब्रह्मे कृतं लोकाः वाचन्नमः दिव्यां गताः मेरे प्यारे! देखो, वह जो गतेषु बनना है उस परमपिता परमात्मा की उपासना करनी चाहिए। हमारे यहाँ रजोगुण, तमोगुण की आभा में भी प्रायः बेटा! ऐसा हुआ करता है। रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण ये तीन गुण कहलाते हैं। तो मानव को बेटा! अपने में सतोगुणी बनना है। हमें सत्य को धारण करना है। सत्य को धारण करते-करते, मेरे पुत्रों! देखो, हमें शिव संकल्पवादी बनना है और शिव संकल्पवादी बन करके अपने में अपनेपन की धारा को अपना करके इस मुनिवरों! देखो, इस सागर से पार हो सकते है। हममें विवेक की मात्राएँ उत्पन्न हो जाती है। जब विवेकी बन जाते हैं तो मुनिवरों! संसार का जितना क्रियाकलाप हो रहा है, वह कहीं रजोगुण में हो रहा है, कहीं सतोगुण में हो रहा है, कहीं मानो देखो, अपने में तमोगुणी बना हुआ है और मुनिवरों! देखो, अपनी आभा में नियुक्त हो करके वह मानव इस संसार सागर से पार हो जाता है।

तो आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं विवेक की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। विचार केवल यह देना चाहता हूँ क्या परमपिता परमात्मा बेटा! विज्ञानमयी शिव संकल्पवादी है। वह विज्ञान मानो देखो, आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने में आध्यात्मिक धारा को प्रायः जन्म देते रहते हैं। बेटा! वही तो प्राण स्वरूप कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें ऋषि-मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बेटा! देखो, ऋषि-मुनि अपने में विद्यमान हो करके उस शिव की उपासना करते रहे हैं मानो देखो, जो शिव हमारा कल्याणकारी है। हमें मानो एक प्रेरणा देता है। हमें एक महानता का दर्शन कराता है। हम तुम्हें उसी ऋषि-मुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहते हैं जहाँ मुनिवरों! देखो, अब ब्रह्मे ब्रहा मेरे पुत्रों! एक समय महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा कुछ मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनि पहुंचे और और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से कहा कि महाराज! हम वेदों को ये अध्ययन करते रहते हैं कि यह शिव क्या है? यह शिव कल्याणकारी कहलाता है। शिव क्या है? मेरे प्यारे! देखो, महाराजा वशिष्ठ मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके, कहा कि यह जो शिव है यह हमारा कल्याणकारी कहलाता है। आप के विचार में शिव क्या है? वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा कि यह जो शिव है यह हमारा कल्याण करने वाला है। क्योंकि शिव उसे कहते हैं जो अन्धकार से प्रकाश में लाने वाला हो। इसीलिए अन्धकार को मानव को त्यागना चाहिए। तो कुछ ब्रह्मचारियों ने यह कहा ब्रह्मे वर्णा व्रतं देवाः क्या महाराज! यह अन्धकार क्या है और प्रकाश क्या है? मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज क्या बोले अन्धकार

तो कहते हैं रात्रि को और दूसरे रूपों में अन्धकार कहते हैं अज्ञान को। इसीलिए मानव को अन्धकार को त्याग देना चाहिए और प्रकाश को लाना चाहिए। आज जब हम प्रकाश की विवेचना करने लगते हैं तो प्रकाश में ब्रह्माण्ड की प्रत्येक चर्चाएं आ जाती हैं। मुनिवरों! देखो, कहीं आध्यात्मिकवाद को हमारे यहाँ मानो देखो, प्रकाश कहा जाता है, कहीं मुनिवरों देखो, प्रकाश एक मानो देखो, ऊर्ध्वा में जो ज्ञान है, उसको हमारे यहाँ प्रकाश कहा जाता है। परन्तु वेद का ऋषि यह कहता है कि प्रकाश उसे कहते हैं जहां मुनिवरों! मानव अपने ही प्रकाश में रत्त हो जाता है। अपनी अन्तरात्मा जो प्रकाश दे रही है, प्रत्येक इन्द्रियों को जो विषय है उसमें मानो जो समाहित हो जाता है, वही प्रकाश कहा जाता है। हमें उस प्रकाश के लिए सदैव रत्त रहना चाहिए। वही प्रकाश मुनिवरों! देखो, हमारा एक मानवीयता जीवन कहा जाता है। तो मुनिवरों! वेद का विचारक कहता है, ऋषि-मुनि कहते हैं कि वशिष्ठ मुनि महाराज ने अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में साधको के मध्य में यह कहा कि वही प्रकाश है जो मानव की अन्तरातमा में निहित रहने वाला है। हम उस प्रकाश के लिए प्रयास करें। उसके प्रयासता में लगे रहें, जिससे वह प्रकाश हमारे समीप आ जाए। वही शिव संकल्पवादी, एक प्रकाश कहा जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने वर्णन करते हुए, एक आचार्य ने, एक ऋषि ने यह प्रश्न किया कि महाराज! शिव नाम तो राजा को कहते हैं। उन्होंने कहा कि उस राजा का नाम भी शिव है, जो राजा अपनी कुशलता से, अपने ज्ञान से और विज्ञान से इस प्रजा में शान्ति की स्थापना कर जाए। उसका नामोकरण भी शिव कहा जाता है। क्योंकि जिस राजा के राष्ट्र में, इतने ऊँचे विचारों वाली प्रजा होती है, जैसे मानो देखो, हिमालय अपने में ऊर्ध्वा में रहता है इसी प्रकार प्रजा में जब इस प्रकार के विचार होते हैं, मानो देखो, ऊर्ध्वा में विचार होते हैं तो उस प्रजा को जो स्वामी है, नेतृत्व करने वाला उसका नाम शिव कहा जाता है। जैसे मुनिवरों! देखो, विद्यालय के ब्रह्मचारियों को आचार्य अध्ययन कराता है, और प्रकाश में लाने का प्रयास करता है तो मानो देखो, वह एक शिव संकल्पवादी अपने में धारणामयी बना हुआ है। तो विचार क्या, वशिष्ठ मुनि महारजा ने भी इसका यह मन्तव्य दिया कि मानव को प्रकाश में जाना चाहिए। मेरे प्यारे! वह सूर्य अपने में प्रकाशक कहा जाता है। वह सूर्य अपने में शिव मानो कहा जाता है जो पृथ्वियों को, उसके विष को अपने में निगलने वाला है। मानो देखो, जब पृथ्वी की माला बनती है उस माला को अपने में धारण करने वाला, यह शिव कहलाता है। यह कौन शिव? सूर्य को कहा जाता है। वशिष्ठ मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में यह कहा कि मानो देखो, शिव नाम सूर्य का है मानो देखो, इसके अन्तर्गत गति करने वाली, नाना पृथ्वियां हैं और वे पृथ्वियों की माला बना करके अपने में धारण कर रहा हैं यह पृथ्वी हमारा देवता है। यह नाना प्रकार के गुरुत्व पदार्थो को हमें प्रदान करने वाला है। मानो देखो, वही गुरुत्व परमाणु प्रत्येक लोक-लोकान्तरों में प्रायः प्राप्त होते है। क्योंकि बिना गुरुत्व के कोई भी लोक लोकान्तर का निर्माण नहीं होता। तो मानो देखो, वह जो शिव है अमृतं ब्रह्मा वह सूर्य है वह अपनी ऊर्ज्वा से नाना पृथ्वियों को अपने में धारण कर रहा है। उन पृथ्वियों की माला बना रहा है और माला बना करके उनको अपने में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वही पृथ्वियों को सांत्वना देने वाला है। जब मानो देखो, ग्रीष्म ऋतु का काल आता है और ग्रीष्म ऋतु में यह पृथ्वी तपायमान हो जाती है और जब यह अपने में विशाल तपायमान हो जाती है तो यह अपने में विष उगलने लगती है, इस विष को कौन धारण करता है? देवताजन उपासना करते हैं और यह कहते हैं हे शिव! आओ, तुम हमें अमृत की वृष्टि करो। यह पृथ्वी अपने में विष उगलने लगी है मानो देखो, तो वही शिव अपने में मेघों की उत्पत्ति करता हुआ, वह अपनी किरणों से, ऊर्ज्वा से, अपने में जल को मेरे प्यारे! वह धारण करके, धीमी-धीमी वृष्टि कर देते हैं। उस वृष्टि का

मूल कारण यह बनता है कि यह पृथ्वी विष उगलना शान्त कर देती है और वह जो विष उगला हुआ उसको सूर्य अपने में धारण करने लगता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हें कुछ सूक्ष्म सी माला की चर्चाएं की है। विचार-विनिमय क्या? मेरे प्यारे! पिण्डाकार जो शिव है, उसकी हमें उपासना करनी है और उपासना करके हमें, अपने में व्रती बनाना है जैसे सृष्टि के प्रारम्भ में यह सूर्य व्रती बना हुआ है, और सूर्य अपने व्रत को धारण करके इस संसार को तपाता रहता है। ये पृथ्वी व्रती बनी हुई है, ये नाना प्रकार की ऊर्ज्वा को प्रदान करने वाली है। नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को, अपने में संकल्पवादी बन करके, मानव के जन-जीवन, प्रत्येक प्राणी के जन-जीवन को ऊँचा बनाने वाली है। तो मेरे प्यारे! विचार क्या? हमें अपने में महान् बन करके उस मानो देखो, देव की उपासना करके बेटा! इस संसार सागर से पार होना है। मैं इन मालाओं की चर्चा तो, तुम्हें करता ही रहूँगा। कल बेटा! मैं यह चर्चा करूंगा, कि यह सूर्य मानो देखो, विष और अमृत को कैसे इस पृथ्वी पर भिन्न-भिन्न करता है। यह चर्चाएं बेटा! मैं कल प्रगट करूंगा और राजा और प्रजा का कैसे विष को भिन्न-भिन्न किया जाता है। यह चर्चाएं कल प्रकट करेंगे। आज के विचार उच्चरण करने का अभिप्राय क्या? कि हम परमपिता परमात्मा शिव संकल्पवादी बनें। आज मैं बेटा! अपने विचारों की भूमिका बनाने के लिए आया हूँ, एक भूमिका मैंने बनायी है। ये चर्चाएं कल बेटा! इसके आगे की प्रगट करेंगें।

आज का वाक् ये क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते रहें और ऋषि-मुनियों का जो निश्चिय किया हुआ, जो शिव संकल्प है उसे अपने में धारण करते हुए ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ते रहें। परमपिता परमात्मा का जो यह जगत् है, यह बड़ा अनूठा है। अपने में महानता का प्रदर्शन करता रहता है। ये है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि प्रत्येक प्राणी अपने में व्रती बनें और अन्धकार को समाप्त करके प्रकाश में अपने को लाने का प्रयास करें। प्रकाश ही मानव का जीवन है। अन्धकार ही मानव की मृत्यु है। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रकट करेंगे।

२ शिक्षा देने का किसको अधिकार है? 10 03 1986

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि संसार का जितना भी यह मानवीय जगत् है, मानो इसमें जो मानवीय दर्शन हैं वह अपने में महान् और पवित्र कहलाता है। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, नाना प्रकार का अनुसन्धान होता रहा है। नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहा है, और उसके ऊपर नाना प्रकार की विचारधाराएं, अपने-अपने मन्तव्य के आधार पर उन्होंने प्रकट की है। परन्तु एक ही मानवीय दर्शन है और उसमें जो मानवीय दर्शन है वह अपने में महान कहलाता है।

मानवीय समाज का कर्म

बहुत पुरातन काल हुआ, जब ऋषि-मुनियों की सभा हुई, परन्तु उस अनुपम सभा में यह निर्णय होने लगा कि मानवीय समाज को कैसे ऊर्ध्वा में लाया जाए? परन्तु नाना ऋषि-मुनियों ने, बेटा! एक मानवीय समाज का एक क्रम बनाया। यह जो मानवीय समाज का क्रम है उसमें नाना प्रकार की विचारधाराएं, प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आती रहती है और कुछ वेदमन्त्रों की प्रतिभा, प्रायः इस प्रकार की मानी जाती है, जिसमें मानवीय जीवन की प्रतिभा का प्रायः दर्शन होता है। मैंने बहुत पुरातन काल में, नाना ऋषि-मुनियों की चर्चाएं की। आज भी मुझे स्मरण आ रहा है बेटा! बहुत पुरातन काल हुआ, नाना विद्यालयों ने अपना एक क्रम बनाया पठन-पाठन का। उस पठन-पाठन के कर्म में आचार्यों ने ब्रह्मचर्य जीवन को एक महान् दिशा में ले जाने के लिए उन्होंने बेटा! मानवीय दर्शन दिया और उस मानवीय दर्शन के आधार पर मानव के जीवन की प्रतिभा उसी आधार पर एक आभा में परिणत होने लगी। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है मैं जब वशिष्ठ मुनि महाराज और नाना ऋषि-मुनियों की चर्चाएं, जब स्मरण आने लगती है, मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं, और ज्ञान और विज्ञान में जो एक मानवीय दर्शन निहित रहता है। क्योंकि विज्ञान और विज्ञान में ही तो मानवीय दर्शन रहता है मैंने बहुत पुरातन काल में कहा है, वेद का एक-एक वेदमन्त्र यह गाथा गा रहा है कि संसार में प्रत्येक जो परमाणु है मानो जो अणु रूप में गति कर रहा है, उसमें नाना प्रकार की विभक्त क्रियाएं रहती हैं वह जो नाना क्रियाएं हैं वह अपने में विभक्त होती रहती है और उनके विभाजन के साथ ही तीन वस्तुएं हमें प्राप्त होती है। बेटा! उसमें सबसे प्रथम उसमें गुरुत्व है, और द्वितीय द्वितीय उसमें आकुचंन है और तृतीय उसमें हमें तेजोमयी का भास होता है। तो मेरे प्यारे! यह तीन प्रकार की प्रतिभाएं मानो सर्वत्र इस ब्रह्माण्ड में, चाहे वह किसी भी लोक-लोकान्तरों में चला जाए, उसमें वह हमें प्रतीत होती रहती है। मुनिवरों! मानव के जीवन से इनका समन्वय रहता है और मानवीय जीवन जब इनसे कटिबद्ध होता है तो एक मुनिवरों! अनुपम विचार हमारे समीप आता है।

मैंने बहुत पुरातन काल में कहा कि संसार में यदि प्रत्येक मानव अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए तत्पर हो जाता है जैसे मुनिवरों! हमारे यहाँ, प्रत्येक पदार्थ अपने में कर्त्तव्यवाद में लगा हुआ है मुनिवरों! देखो, जैसे इससे पूर्वकाल में हमने प्रकट कराया कि सूर्य समय से उदय होता है और उदय होते ही ऊर्ज्वा देना प्रारम्भ कर देता है। वह पितरों की कोटि में माना गया है। वह हमारा पितर कहलाता है। क्योंकि वह हमें प्रकाश देता है, ऊर्ज्वा देता है, मानव के जीवन की प्रतिभा का एक दर्शन करा रहा है। तो मेरे प्यारे! वह कहीं

से एक अनुपम प्रकाश दे रहा है जिस प्रकाश को ले करके मुनिवरों देखो, मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है। तो इससे हमे यह सिद्ध होता है यह प्रतीत होता है कि प्रत्येक मानव एक दूसरे से कटिबद्ध है। मानवीयता किसी में पिरोयी हुई है। इसीलिए उस पिरोए हुए सूत्र को हमें विचार-विनिमय करना है।

चार भागों में मानव समाज

तो आओ मेरे प्यारे! मैं उच्चारण कर रहा था मानव के जीवन के ऋषि-मुनियों ने मेरे प्यारे! देखो, चिन्तन करने के लिए, चार विभाग में मानव के जीवन को परिवर्तित किया है। चार भागों में मानव के जीवन को विभक्त किया है। सबसे प्रथम बेटा! ब्रह्मचरिष्यामि मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम जब यह मानव ब्रह्मचरिष्यामि बनता है और ब्रह्मचर्य का पालन करने लगता है तो आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके, मेरे प्यारे! देखो, आचार्य को अपने गुरु की कोटि में परिणत करने लगता है और कहता है यह मेरे पूज्यपाद गुरुदेव हैं। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक मानव को यह विचार-विनिमय करना चाहिए गुरुत्तम ब्रह्मे वाचो देखो, कि गुरु की मीमांसा यह है कि संसार में जो अन्धकार को प्रकाश में लाने का प्रयास करता है, वह मानो देखो, गुरुतव कहलाता है। गुरुजन कहलाते हैं बाल्यकाल में जब आचार्यकुल में ब्रह्मचारी प्रवेश करता है तो मानो देखो, वह अज्ञानी है, शिशु है। तो मेरे प्यारे! देखो, आचार्य उसे अपने में धारण करके उसे प्रकाश में लाने का प्रयास करता है। वह प्रकाश में लाता है। और वह प्रकाश में ला करके मुनिवरों! देखो, उसके चरणों में विद्यमान हो करके, सबसे प्रथम तो मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ, यह माना गया है कि माता हमारे यहां विशिष्ठ मानी गयी है। परन्तु माता के जीवन का जो एक समूह है वह बड़ा विचित्र रहा है परम्परागतों से।

मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं मानो देखो, त्रेता के काल में क्या, द्वापर के काल में जब मैं प्रवेश करता हूँ तो मुझे प्रतीत होता है नाना माताओं का जीवन स्मरण आने लगता है। जब मैं पूर्व काल में जाता हूँ तो माता कौशल्या और उससे पूर्व काल में जाता हूँ तो माता मल्दालसा का जीवन मुझे स्मरण आने लगता है। मानो देखो, इससे पूर्व काल में और भी नाना माताएं इस प्रकार की ऐसी हुई हैं जिन्होंने अपने जीवन काल में तप किया है। क्योंकि बिना तप के, परमाणु मानो तपा नहीं करता है। मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिकजन जब अपनी स्थलियों पर विद्यमान होते हैं। तो ये परमाणु गति करता रहता है। अन्तरिक्ष में वह भरण होता रहता है और उसी परमाणु को एक-दूसरा परमाणु अपने में गृसित होता रहता है और वही परमाणु तपों में परिणत हो करके मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में शिशु के रूप में प्रवेश करता रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा है, आज भी मैं इस निर्णय को देने के लिए तत्पर हूँ। बेटा! जब मैं द्वापर के काल में जाता हूँ, द्वापर के काल का वह साहित्य मुझे स्मरण आने लगता है जहाँ मुनिवरों! माता कुन्ती का जीवन मुझे स्मरण आता है। माता कुन्ती मानो जब बाल्यकाल में, आचार्य कुल में अध्ययन करती रहती थी। अध्ययन की भूमिका हमारे यहाँ पूर्वकाल में ऋषि-मुनियों ने एक मानव का कर्म बनाया। माताओं को वह कर्म मानो देखो, बाल्यकाल में, ब्रह्मचारियों को शिक्षा प्रदान की गयी, कि तुम इस प्रकार अपने जीवन को बनाने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, माता कुन्ती ने जब बाल्यकाल में अध्ययन करती रहती थी तो अध्ययन करते-करते मुनिवरों! देखो, उनका जीवन एक मानो देखो, शिरोमणी बना। और वह नाना प्रकार की तरंगों को अपने में धारण करती रहती थीं मेरे प्यारे! देखो, जिस भी काल में माता के गर्भ में शिशु का जहाँ प्रवेश हुआ उसने उसी देवता की तपस्या प्रारम्भ कर दीं, जिस देवता के गुणों को वह अपनी सन्तान में जन्म देना चाहती थी। मेरे प्यारे! देखो, मुनिवरों! देखो, वह

कहीं पवन की उपासना कर रही है। कहीं सूर्य की उपासना उन्होंने की, कहीं इन्द्र की उपासना की। मुनिवरों! देखो, कहीं अश्विनी कुमारों की उपासना की। अश्विनी आभा में युक्त रहने वाले देवता हैं। मेरे प्यारे! देखो, अश्वाम् ब्रह्म वाचो देवाः ऐसा वेद की आख्यायिका भी कहती रहती है। जब मैं उस काल में प्रवेश करता हूँ, तो मुझे ये स्मरण आता रहता है कि माता अपने में महान तपस्वी रही है और तपस्या करने के पश्चात् मेरे प्यारे! वह जब माता के गर्भस्थल में, जब शिशु का प्रवेश हुआ तो वह इन्द्र की उपासना करने लगी, और इन्द्र से वार्त्ता प्रकट करती रहती थीं मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र नाम के हमारे यहाँ नाना प्रकार पर्यायवाची शब्द माने जाते हैं। इन्द्र नाम मेरे प्यारे! देखो, वायु को कहा जाता है, इन्द्र नाम विद्युत् को भी कहा जाता है। तो मुनिवरों! देखो, इन्द्र नाम के राजा भी हुए हैं। परन्तु देखो, माता अपने में इन्द्र की तपस्या करने लगी और इन्द्र के तपों में परिणत हो करके, वह यह कहा करती थी इन्द्रो भवा सम्भवा लोकां मानो देखो, हे इन्द्र! तू आ, मेरे में प्रवेश कर। मानो देखो, इन्द्र नाम बेटा! परमात्मा को भी कहा जाता है। यहाँ इन्द्र नाम मेरे प्यारे! देखो, यहाँ विद्युत् को माना गया है क्योंकि देवताजन मानो उसकी उपासना करते रहते है। माता कुन्ती ने अपने में तपस्या की और शिशु को इसी प्रकार का संस्कार देने लगी, मेरे प्यारे! देखो, अर्जुन जैसों का जन्म हुआ। मानो देखो, वह धर्म ब्रह्मा धर्म की उपासना करना, धर्म किसे कहा जाता है? मैंने धर्म के सम्बन्ध में मानो देखो, धर्म की भूमिका बनाना प्रारम्भ हो गया। माता कुन्ती ने बेटा! अपने में धर्म की उपासना की और वह धर्म उपासना करते-करते, इतनी मानो गम्भीरता में परिणत हो गयी, कि जो कहा जाए, वही सत्य हो जाए। मुनिवरों! देखो, इस प्रकार की उन्होंने अपनी धारा बनायी। तो इसी प्रकार पांचों पुत्रों में से तीन अपने पुत्र थे, और दो माद्री के पुत्र थे। पांचों सन्तानों को जन्म देना, मेरे प्यारे! देखो, जन्म देना ब्रह्मवाचो कहा जाता है। परन्तु देखो, माद्री ने भी अपने में तपस्या में परिणत हो जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, आचार्य कुल में, इसके पश्चात् बालक में प्रवेश करता है। आचार्य उनके जो संस्कार है वह जो परमाणु हैं जो तरंगों में परिणत हो रहे हैं उन परमाणुओं को वह जागरूक कर देते हैं। शिष्य चरणों में विद्यमान हैं और विद्यमान हो करके वह तपस्या के फल दे रहा है और प्रश्नों का अध्ययन करा रहा है और वह कहता है, हे ब्रह्मचारी! तू अपनी इन्द्रियों को मुझे प्रदान कर। प्रत्येक इन्द्रियों को उन्होंने, उन्हें प्रदान कर दिया। इन्द्रियों का शोधन करना यह आचार्य का कर्त्तव्य कहलाता है। तो जब बाल्यकाल में आचार्यकुली में ब्रह्मचारियों को शिक्षा आचार्य प्रदान कर देते हैं तो वह महान् और पवित्र बन जाता है। विचार क्या? माता पवित्र हो और माता के पश्चात् माता-पिता जब पवित्र होते हैं, आचार्यों के अनुसार बरतते रहते हैं, ब्रह्मचारी अपने में व्रता वृत्तियों में परितण होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आचार्य उन ब्रह्मचारियों को महान् बना देते हैं। उसके पश्चात् जब कर्त्तव्यवाद इस प्रकार का बन जाता है तो बेटा! एक समाज पवित्र बन जाता है। समाज में एक महानता का दर्शन होने लगता है।

आचार्य का कर्तव्य

तो मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार आज का विचार हमारा क्या कह रहा है? हम तुम्हें कहीं और दर्शन में ले जाना चाहते थे। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र बेटा! यह कहता है हे माता! तू अपने में महान् बन करके ऊर्ध्वा की उड़ान उड़ने का प्रयास कर। हे आचार्य! तू ब्रह्मचारियों को उस आसन पर ले जा, जहाँ मानो देखो, यह अशुभ संस्कारों को अपने में न पनपा सके, विचित्र बना सके। मानो जब वह बाह्य जगत् में आता है प्रवेशिका में प्रवेश करता है, वह अपने गृह के आँगन में प्रवेश करता है, तो अपने में उद्धार और तपस्यावादी जीवन उसका बना रहे, तो जीवन में वह मानवीय दर्शन कहलाता है। आज जब हम मानवीय दर्शन अपने में

धारण करते है। मानव दर्शन किसे कहते हैं? आचार्य जब गृह में प्रवेश होता है, तो मुनिवरों! देखो, आचार्य जो गुरु है, जो मुनिवरों! देखो, संस्कार कराता है जो संस्कार में परिणत करा देता है, जो संस्कार की भूमिका में लाता है, मेरे प्यारे! देखो, वह जो नियम अव्रते ब्रह्मे वाचाः जो नियमावली बना देता है उसको धारण करना यह बेटा! उनका एक कर्त्तव्य माना जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या? मेरे प्यारे! परम्परागतों से यह हमारे यहाँ एक मानवीय जीवन माना गया है। जब माता अपने में महान् बनती है। पितर अपने में महान बनता है और मुनिवरों! देखो, गृह में प्रवेश हो करके मानो ब्रह्मचारी को माता जन्म देती है। अभ्योदय कर देती है वही आचार्य भूमिका बेटा! उसी प्रकार बनी रहती है। तो विचार विनिमय क्या? आगे चल करके मुनिवरों! वही ब्रह्मे व्रतो ब्रह्मा जब प्रणाली जब भ्रष्ट हो जाती है तो प्रणालियों में, मेरे पुत्र ने एक समय मुझे यह वर्णन कराया कि आधुनिक काल में वो प्रणाली नहीं रही है। उस प्रणाली में परिवर्तित हो गया है। मानो देखो, पुरातन काल में जो ब्रह्मचारियों को अथवा ब्रह्मचारिणियों को जो शिक्षा प्रदान की जाती है वह गृह से, ब्रह्मचर्य से तप करके गृह में प्रवेश हो करके, उसके पश्चात् गृह को पति-पत्नी त्याग देते है। और त्याग करके उनका एक महान् तपस्वी जीवन बनता है। विद्यालय में मुनिवरों! देखो, जितना भी शुद्ध और उपराम हुआ तपस्वी होगा, उतना ही ब्रह्मचारियों को ऊँचा बना सकता है। मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। मैं उस काल में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

विचार केवल यह उच्चारण करने के लिए कि वानप्रस्थ ले करके, जो दीक्षा ली जाती है केवल बुद्धिमानों से, वह स्वयं बुद्धिमान होते हैं और वह विद्यालयो में ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी को शिक्षा प्रदान करते हैं। अपने अनुभव प्रगट करते है। अपनी विचारधारा देते हैं, दर्शनों का गुथा हुआ ज्ञान देते हैं, तो बेटा! देखो, वह महानता में परिणत होता है मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें एक वाक्य प्रकट किया था। ओर वह वाक् मुनिवरों! देखो, सर्वोपरि सिद्ध कहलाता है। वह वैज्ञानिक आभा में।

महाराजा अश्वपति का राज्य

मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ ऋषि-मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ और ऋषि-मुनियों ने यह निर्णय किया कि ऊर्ध्वा में देखो, पठन-पाठन का जो क्रम बनाया। एक मानो आचार्य पठन-पाठन के आश्रम में प्रवेश हुआ जिनका नवीन मानो संस्कार हुआ, जब संस्कार हुआ, जब संस्कार हुआ तो उसको एक पठन-पाठन का वृत था जो मानो देखो, वह तो दीक्षा ले करके जो वानप्रस्थी थे उनका संसार के नाना वासनाओं से मानो हृदय तृप्त हो गया था, उनका मानसिक जो चलन था, वह बड़ा विचित्र रहा। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे ऐसा स्मरण है जब ऋषि-मुनियों का एक समूह एकत्रित हुआ। इन ऋषिओं में महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणुवृत्तिका ये सब उसमें विद्यमान थे और भी नाना ऋषि थे। तो मुनिवरों! देखो, रेणुवृत्तिका एक वैज्ञानिक उनके यहाँ थे। उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया था, जिस यन्त्र में ये विशेषता थी कि मानव शब्दों का उच्चारण कर रहा है और वह शब्दों का चित्र बन करके चित्रावली में दृष्टिपात आ रहा है। उसका जो चयन है जो शब्द है, जो क्रियाएं हैं जो ब्रह्मचारियों को उद्गीत गाया जा रहा था मानो देखो, वह चित्र बन-बन करके उन यन्त्रों में दृष्टिपात हो रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, जब यन्त्रों में दृष्टिपात कराया, तो मुनिवरों! देखो, महाराजा अश्वपति से कहा ऋषि-मुनियों ने कि महाराज! जिनका संस्कार युवापन में हुआ हो, तो वह आचार्य विद्यालय में नहीं होने चाहिए। उन्होंने इसका जब विरोध किया, तो महाराजा अश्वपति ने कहा, क्या इसका प्रमाण क्या इसका प्रमाण यह है क्या आचार्यकुल में जब आचार्य युवक होगा अथवा मानो देखो, नवीन

संस्कारवादी होगा, नवीन पत्निवादी होगा, तो मानो उसकी तरंगें ब्रह्मचारियों को स्पर्श किए बिना रह नहीं सकती। ये वाक्य उन्होंने प्रकट किया। जब यह वाक् उन्होंने प्रगट किया तो मुनिवरों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता रहा है, मुझे भी सौभाग्य प्राप्त होता रहा है, अध्यापन का। तो मानो देखो, महाराजा अश्वपति ने जब मानो इस विरोध को स्वीकार किया और इस विरोध को जाना, तो जानने के पश्चात उन्होंने ऋषि-मुनियों का एक समाज एकत्रित किया। और उन्होंने यन्त्रों में, उनकी वाणी को मुनिवरों! देखो, भरण कराया, तो यन्त्रों में देखो, शब्दों का विभाजन कर रहा था। जब शब्दों का विभाजन चल रहा था तो मुनिवरों! देखो, नवीन संस्कारवादी आचार्यों का चित्र जब उसमें दृष्टिपात आने लगा तो वह उसकी तरंगें ब्रह्मचारियों को स्पर्श कर रही थी, ब्रह्मचारियों का अन्तर्हृदय था उस आचरण में प्रवेश नहीं कर सका, जो वास्तव में होना चाहिए था। मानो देखो, यही कारणादि ब्रह्मादि देखो, जब इस प्रकार के आचार्य विद्यालयों में प्रवेशं ब्रह्मा, शिक्षा देते हैं तो ब्रह्मचारी जब विद्यालय से अवकाश पाता है तो वह ब्रह्मचारी जिस भूमिका में वह पनपा है, जिस भूमिका में रहा है, वह भूमिका विद्यालय से बाह्य जा करके वह भूमिका भ्रष्ट हो जाती है। जब वह भ्रष्ट हो जाती है तो वह बाल्यकाल में देखो, आचार्य के यहाँ भय से और देखो, अणुवृत्तियों से मानो देखो, उसी वस्त्रों में रहना, वहीं मानो देखो, चरण-वन्दना करना, वह केवल चरण वन्दना स्थायी नहीं रहती। वह स्थायी उस काल में रहती है जबकि मानो देखो, निष्पक्ष होने वाले, वानप्रस्थी, पति-पत्नी जब दीक्षा ले करके वह शिक्षा प्रदान करते हैं तो वह ब्रह्मचारियों के हृदय को पवित्र बना देते है। उनकी जो भूमिका है, अथवा वेश है, भूषा है, वह स्थायी बन जाती है। चरण-वन्दना उनकी स्थायी हो जाती है। तो मानो देखो, उस समय विद्यालय सफलता को प्राप्त होते हैं।

मैंने बहुत पुरातन काल में मानो निर्णय देते हुए कहा था, मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे वर्णन कराते हुए कहा था कि आधुनिक काल में, राष्ट्र में इस प्रकार की धारा है, जब राजा के मन में ये विचार आ जाता है कि मुझे तो मानो देखो, ब्रह्मचारियों को, विद्यालय में शिक्षा अपने राष्ट्र कोष में आर्थिक स्थिति, अपठित प्राणियों को देनी है तो उस राजा का राष्ट्र-राष्ट्र नहीं रहता। मानो देखो, राजा का राष्ट्र जब रहता है जब मुनिवरों! देखो, दीक्षा दिए हुए वानप्रस्थी देखो, विद्यालयों में ब्र्ह्मचारियों को देखो, वानप्रस्थी शिक्षा देने वाले होते हैं। और ब्रह्मचारिणीयों को, जो मेरी प्यारी माता है, जो ब्रह्मचर्य से व्रत ले करके शिक्षा में परिणत हुई है, जब शिक्षा देना प्रारम्भ करती है तो उनका जो कर्म है, उनकी जो धाराएं है वह स्थायी रहती है, जो वह देते हैं वह स्थायी बनी रहती है, आज मानो देखो, मुझे एक समय मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे प्रगट कराया, कि विद्यालयों से ब्रह्मचारियों को जब अवकाश प्राप्त होता है और वह बाह्य जगत् में आते हैं तो बाह्य जगत् में आ करके वह ऐसे बन जाते हैं जैसे उद्दण्ड प्राणी होते है, इस प्रकार का विचार बेटा! मैंने बहुत पुरातन काल में प्रकट किया। महाराजा अश्वपति की चर्चा चल रही थी। महाराजा अश्वपति ने उन विचारों को लिया, जिनका नवीन संस्कार हुआ है। वह केवल विलासिता के क्षेत्र में प्रवेश कर गया है, और वह ब्रह्मचारियों को शिक्षा दे रहा है। तो उसकी जो मन की प्रवृत्ति है, वह तरंगित हो करके, ब्रह्मचारियों को स्पर्श कर रही है इसी प्रकार ब्रह्मे वाचा ब्रह्मा लोकां वृत्ति देवां अोर वृत्ति ब्रह्मो और ब्रह्मचारिणीयों को भी इसी प्रकार की प्रवृत्तियां बन जाती है। परन्तु वह शिक्षा लिया हुआ, वानप्रस्थी, जब शिक्षा देने लगा, तो उनके चित्र जब यन्त्रों में आए, तो मानो देखो, मग्न हो रहे है। मग्न हो करके, तरंगें मग्न हो रही हैं और वह हृदय में स्थायी हो करके, पुरातन जो संस्कार मानव के मानव के हृदयों में मानो देखो, परमाणुवाद में परिणत हो रहे हैं। वह जागरूक हो रहे है। जब वह जागरूक होते दृष्टिपात आने लगे, तो महाराजा अश्वपति ने इस वाक् को स्वीकार किया इस वाक् को स्वीकार कर लिया

कि वास्तव में हमारे यहाँ एक यह कर्मबद्ध होना चाहिए। महाराजा अश्वपति ने सर्वत्र राष्ट्र में यह घोषणा कर दी, क्या युवकों को कोई और क्रियाकलाप दिया जाएं, क्या शिक्षा का जो विभाग है, शिक्षा की जो प्रणाली है वह वानप्रस्थियों को प्रदान कर देनी चाहिए। मानो देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ जब यह घोषणा हुई, तो मानो देखो, राष्ट्र में वह नियमावली बन गयी। इसी प्रकार भगवान राम के राष्ट्र में भी इसी प्रकार की नियमावली बनी।

आज मैं राष्ट्रीय चर्चा में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचारधारा केवल यह प्रकट करना चाहता हूँ, कि प्रत्येक मानव को, राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाना है। तो यह ऊँचा उस काल में बनता है जब राष्ट्रीय प्रणाली पवित्र बन जाए और विज्ञान अपने में अनूठा बन करके रहता है। प्रत्येक मानव विज्ञान की आभा में प्रवेश करना चाहता है। वैज्ञानिक मानवीय जीवन, का जो एक मानवीय दर्शन है, वह केवल देखो, विज्ञान की आभा में निहित हो रहा है। तो इसीलिए आज का हमारा यह वाक् क्या कहता है? आज का हमारा यह विचार यह कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, मानवीय दर्शन को, मानो देखो, समाज में लाना चाहते हैं और मानवीय दर्शन क्या है? मेरे प्यारे! देखो उसका जिसका आचरण है, उसकी एक भूमिका है। उसके आन्तरिक विचारों को बाह्य जगत् में आना है। वह अवश्य आयेंगे। परन्तु वह जिसे भी स्पर्श कर जाते हैं, वह महान् बन जाता है और द्वितीय परमाणु जिसे स्पर्श कर जाते हैं, उसका अन्तर्हृदय, अन्तरात्मा मृतक बन जाता है। तो इसी प्रकार हमें विचारधाराओं को, अपने में महान् बनाने के लिए मानो देखो, एक अपना एक कर्म बनाना चाहिए।

बुद्धिजीवी प्राणियों से राष्ट्र

हे मानव! तू राष्ट्रीयता को ऊँचा बना। हे राजन्! तू मानो देखो, अपने में महाराजा अश्वपति की भांति जो स्वयं कला कौशल करते हुए, द्रव्य को अपने में पान किया जाता है वही तो महान् बनेंगे। परन्तु देखो, जहाँ इस प्रकार की आभा में नियुक्त रह करके, वह बाह्य जगत् में पहुंचेगा, तो वह अपने मानवीय जीवन को बिखरा हुआ स्वीकार करता है। तो यह नहीं होना चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में मानो निर्णय दिया, आज भी मैं यह निर्णय दे रहा हूँ कि ऋषि-मुनियों का समाज एकत्रित होता है, और राजा को यह बाध्य करता है कि इस प्रकार के नियमों को लाने का प्रयास कर। जिससे मानो तेरा राष्ट्र पवित्र बन करके और प्रत्येक मानव कर्त्तव्य की वेदी पर आ जाए। क्योंकि देखो, यहाँ प्रत्येक परमाणु अपने में मानो देखो, भास रहा है। और इन्हीं परमाणुओं को ले करके वायुमण्डल बनता है। इन्ही परमाणुओं को ले करके गुणों का निर्माण होता है इन्हीं परमाणुओं को ले करके, राष्ट्रवाद की भूमिका का निर्माण होता है। मानो उसी से विचारधारा को ले करके ऋषि-मुनि अपने में महान् बना करते है। तो विचार-विनिमय क्या? आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव को अपने में महान् बनने के लिए, मानव समाज को ऊँचा बनाने के लिए मानो देखो, प्रत्येक मानव को अपने में महान् बनना होगा और राष्ट्र को पुकारना होगा हे राजन्! तू इस प्रकार अपने राष्ट्र की भूमिका को बना, मानो देखो, जिससे तेरे राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी हों और बुद्धिजीवी प्राणी हो करके ही मानो तेरा राष्ट्र ऊँचा बन सकता है।

मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में निर्णय दिया कि महाराजा अश्वपति महाराज ने अपने में यह स्वीकार किया और अपने में आश्चर्यचकित हो करके कहा। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है हमारे यहाँ भगवान् मनु ने जब राष्ट्र का निर्माण किया था, तो मानो देखो, यह उन्होंने भूमिका बनायी कि वानप्रस्थ का जितना

समाज है, गृहस्थ से जो तृप्त होने वाला है उसे त्याग देना चाहिए, क्योंकि जब राजा वेदान्तों को लेकर चलता है, तो उसकी विचारधारा राष्ट्र के प्रति जाती है तो राजा महान् बन जाता है। मुझे इस संसार को दृष्टिपात करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहता है। मैं प्रायः गौरव से यह कहा करता हूँ, हे मानव! तू अपने को महान् बनाना चाहता है तो मानो तू अपने जीवन के जो चार भाग हैं, मानो ब्रह्मचर्यवत् में तू अपने को महानता की वेदी पर ले जा। और उन्हीं विचारों से मानो तू गृह में प्रवेश होगा, गृह को ऊँचा बनाता चल और उन्ही से तू त्याग प्रवृत्ति में परिणत हो करके, जब तू अपने को विद्यालयों में ले जायेगा, विद्यालय पवित्र बन करके मानो देखो, ब्रह्मचर्य की आभा में यह समाज परिणत हो जायेगा। उसके पश्चात् वही मानव अपने में मानो देखो, संन्यस्थ को प्राप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे! यह चर्चाएं तो मैं तुम्हें कल ही प्रकट करूंगा, एक-एक भूमिका का वर्णन करता रहूँगा। आज का विचार हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, मानो हमें अपनी जो परम्पराएं हैं, ऋषि-मुनियों का जो एक विचार है, वह आज हमने तुम्हें प्रकट किया है। मानो देखो, यह चर्चाए, मैं मानो देखो, ब्रह्मचर्य और इन चर्चाओं को तो मैं प्रायः करता रहता हूँ। कल कुछ संन्यास की चर्चाएं और विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश हो सकेंगे। आज का विचार-विनिमय क्या? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, आज मैं बेटा! माता का कर्त्तव्य प्रायः निहित करता रहता हूँ और आचार्यों के कर्त्तव्यवाद में जब परिणत होता हूँ, तो अपने में महानता की वेदी पर अपने को ले जाता हूँ तो मुझे वह अतीत के काल मुझे स्मरण आते रहते हैं।

तो बेटा! आज का विचार-विनिमय क्या है? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। हम परमपिता परमात्मा को महान् विज्ञानवेत्ता जो विज्ञानमयी स्वरूप कहा जाता है, उस देव की हम प्रार्थना करके बेटा! इस संसार सागर से हम पार हो जाएं। यह है आज का वाक्। कल मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें, आज का वाक् समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए हे माता! तू अपने में तपस्वी बन करके तू अपने ब्रह्मचारी को ऊँचा बना। तेरा कर्त्तव्य पूर्ण हो जाए। गृह में वास करने वाले, गृह स्वामी-स्वामिनी! तू अपने को महान् बना। हे वानप्रस्थ में जाने वाले! दीक्षा ले करके अपने विचारों को अपने अनुभव को विचारणीय बनाता है तो यह समाज पवित्र बन जाता है। यह ऋषि-मुनियों की निश्चित की हुई शिक्षा-पद्धति है। मैं शिक्षा-पद्धति की चर्चाएं कल ही प्रकट करूंगा।

आज का वाक् मुनिवरों! समाप्त होने जा रहा है। आजह के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्। अब शेष चर्चाएं कल प्रकट करेंगे।

३ राष्ट्र का निर्माण विद्यालयों में होता है। 11 03 1986

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनुपम है। जितना भी ये जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। आज हम, जब उस परमपिता परमात्मा की महिमा को, मानवीय दर्शन में दृष्टिपात करते हैं तो प्रायः हमारा हृदय ये पुकारने लगता है कि ये परमपिता परमात्मा की एक अनुपमता है। मानव उसकी एक आभा है। उसका एक मानवीय अभ्यो वर्णित कहलाया जाता है प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, नाना प्रकार को उड़ानें उड़ता रहा है। जिस भी काल में, ऋषि-मुनि विद्यमान हो करके और अपने में विचार-विनिमय उन्होंने करना प्रारम्भ किया तो उनका विचार एक अनूठा बन करके रहा है। उन विचारों को मानो देखो, राष्ट्रीयवाद में और वैज्ञानिकों ने, उन्हीं विचारों को ले करके अपने जीवन की प्रतिभा अथवा अपने मानवीय जीवन का एक कर्म बनाया, जो मैंने बहुत पुरातन काल में, निर्णय देते हुए तुम्हें कहा था।

राष्ट्रवाद का निर्माण

आज भी मुझे वह वाक्य स्मरण आते रहते हैं, इससे पूर्वकाल में बेटा! हम यह उच्चारण कर रहे थे, कि हमारे ऋषि-मुनियों ने, विद्यमान हो करके, एक मानवीय चिंतन किया, और उन चिन्तन वेत्ताओं ने मानो कही वेदों में, वेद के मन्त्रों में मानो कुछ ज्ञान और विज्ञान और वही मानव के विचारों में उद्बुद्ध हो करके आता रहता है। परन्तु इसी प्रकार वही विचार, ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में, एक आत्मीय आभा में नियुक्त होता रहा है। मैंने बहुत पुरातन काल में पुत्र! तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था, कि हमारा जो जीवन है, हमारे मानव जीवन की जो रचना है, मानो उसमें सबसे ऊर्ध्वा में जो स्रोत है वह प्यारा प्रभु कहा जाता है। परन्तु यदि हम यह विचारते हैं कि राष्ट्रीयवाद ही इसका दायित्व माना गया है मानो ये विचार मेरे में समाहित नहीं हो रहा है। क्योंकि राष्ट्रवाद की रचना तो उस काल में होती है जबकि मानव समाज में उद्दण्डता का प्रति स्रोत हो जाता है अथवा उद्दण्डता उत्पन्न हो जाती है उस समय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति हुआ करती है। भगवान् मनु ने जब राष्ट्र का निर्माण किया तो उन्होंने नाना ऋषिवरों का एक समूह और गोष्ठियां होती रहती थीं। उन गोष्ठियों में यह प्रश्न किया गया कि हम अपने राष्ट्र की भूमिका और मानो देखो, निर्माण व्रतं ब्रह्मा हम अपने राष्ट्र में एक क्रियाकलाप बनाना चाहते हैं वह हमारा कैसा होना चाहिए?

ऋषियों की राष्ट्र की चर्चाएं

तो उन्होंने मुनिवरों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि ऋषि-मुनि जब विधान को निर्माणित करने लगे, धारयामी बनाने लगे और यह विचार आने लगा कि राष्ट्रवाद का निर्माण करना है और राष्ट्र किसे कहते हैं? ये भगवान् मनु से यह प्रश्न किया गया, महर्षि सोमवृत्तिका मुनि ने ये प्रश्न किया कि महाराज! तुम राष्ट्रवाद कहते हो, राष्ट्रवाद कहते किसे हैं? मेरे प्यारे! उन्होंने वेद की पोथी और वह वेद के मन्त्रों को उद्बुद्ध करने लगे और वेद में राष्ट्रवाद की चर्चा आयी। तो भगवान् मनु से प्रश्न किया गया क्या यह राष्ट्रवाद की ही तुम्हारे हृदय में प्रेरणा क्यों उत्पन्न हुई?

तो भगवान् मनु ने यह कहा कि प्रजा को मैं एक सुचारू रूप से जीवन देना चाहता हूँ। मेरे हृदय में

एक विचार आ रहा है, मैंने वेदों का अध्ययन किया है। दर्शन शास्त्र को अपने में मैंने विचार विनिमय किया है। परन्तु मेरे हृदय में यह वाक्य आता रहता है कि मैं एक समाज के विचारों को ऊँचे क्रिया-कलापों को विभक्त करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उस समय सोमवृत्तिका ने कहा कि हे भगवन्! आप ऐसा क्यों चाहते हैं? मेरे विचारों में यह नहीं आ रहा है कि आपके विचारों में यह भाव क्यों उत्पन्न हो रहा है कि मैं समाज को विभक्त करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा सोमवृत्तिका ने यह कहा हे मनु! आज इस भूमिका को तुम रचाने जा रहे हो। मानो यह अन्तिम चरण में, इस प्रकार की भूमिका बन जाएगी कि मानव-मानव के रक्त का पिपासी बन जायेगा। मेरे प्यारे! देखो, ये वाक् महात्मा सोमवृत्तिका ने भगवान मनु ने कहा। तो भगवान मनु ने कहा नही भगवन! मेरा विचार कहता है तो उन्होंने अपनी लेखनियां बद्ध की। उन्होंने कहा प्रभु! मेरा विचार यह है कि यह जो बुद्धिमान समाज है इसको ब्राह्मणत्व में परिणत किया जाए, और मानो देखो, सबसे प्रथम माता को स्थान दिया जाए। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा क्या कोई स्थली अब तक ऐसी प्राप्त नहीं हुई है, जहाँ माता का अस्तित्व न हो। क्योंकि जिस स्थलियों में निर्माण हुआ करता है उनका तो अस्तित्व सदैव ऊँचा बना ही रहता है। परन्तु रहा यह वाक् कि उसमें ज्ञान और विज्ञान की सूक्ष्मता होती रहती है।

तो मुनिवरों! देखो, जब भगवान मनु से यह वाक्य कहा गया तो भगवान् मनु ने मंगलम वाचो सम्भवा वेद की आख्यायिका को प्रगट करते हुए कहा भगवन्! माता ही मानो देखो, जननी कहलाती है। मेरे राष्ट्र में मैंने वेदों में कुछ सूक्तों की रचना की है और उनको निकासा है। मेरा हृदय यह कहता कि माता जैसे परम्परागतों से अध्ययनशील रही है, उनका अध्ययन बड़ा विचित्र होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि व्रातकेतु मुनि महाराज ने भी मानो देखो, गृह सूत्रों का निर्माण किया था। गृह सूत्रों का निर्माण मानो करोड़ों वर्षो पूर्व इनकी रचनाएं हुई और यह कहा गया कि विद्यालयों में, ब्रह्मचारी का अध्ययन होना चाहिए। मानो देखो, माताए, कन्याएं अपनी स्थलियों पर जब अध्ययन करना प्रारम्भ करती हैं, गृह सूत्रों का, तो गृह सूत्रों में उन्हें ब्रह्माण्ड और पिण्ड की रचना का ज्ञान कराया जाता है। पिण्ड क्या है? और ब्रह्माण्ड क्या है।

माताओं की शिक्षा

मुनिवरों! देखो, सबसे प्रथम माताओं को मेरी पुत्रियों को यह निर्णय कराया जाए। आज देखो, मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे कई काल में राष्ट्रवाद की चर्चाएं की हैं परन्तु मैं उस राष्ट्रवाद की चर्चाओं में न जाता हुआ यह कहता रहता हूँ कि सबसे प्रथम यह राष्ट्रवाद नहीं होना चाहिए। सबसे प्रथम मेरी पुत्रियों को, मेरी कन्याओं को विद्यालय में, गृह सूत्रों का ज्ञान कराया जाना चाहिए। मानो देखो, उन्हें पिण्ड और ब्रह्माण्ड की रचना का ज्ञान कराया जाए। आचार्यो का यह कर्त्तव्य है मानो देखो, मेरी आचरणं ब्रह्मे व्रतां देवाः जो वेद के मर्म को जानने वाले होते हैं उन्हें यह ज्ञान होता है, मेरी पुत्रियों को इस प्रकार का ज्ञान और विज्ञान और ब्रह्मचारियों को भी विद्यालय में इस प्रकार का ज्ञान होना चाहिए। मानो देखो, उसमें आयुर्वेद भी आता है और उसमें ज्ञान और विज्ञान भी है। उसमें मानो देखो, वेदों के अभ्योदय होने वाला जीवन है। क्योंकि मैं विचारता रहता हूं, क्योंकि मुझे स्मरण है, मैंने इसी मनु के विचारों को, महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में मानो इनका बड़ा अध्ययन किया और अध्ययन कराने से मानो जब आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके, ब्रह्मचारिणी अपना अध्ययन कर रही है और अध्ययन करती हुई उन्हें मानो देखो, आचार्य पिण्ड और ब्रह्माण्ड की चर्चा कर रहा है कि पिण्ड क्या है और ब्रह्माण्ड क्या है?

मेरे प्यारे! देखो, इसी वाक् को लेकर के हमारे यहाँ पूर्व काल में जो उपनिषद, वेद का पठन-पाठन

करने वाले हैं, उनमें यह वार्त्ता आती रहती है। हमारे यहाँ एक-एक वेदमन्त्र को ले करके इसकी विवेचना होती रही और यह वर्णन कराया। क्या कन्याओं को देखो, पिण्ड और ब्रह्माण्ड की कल्पना हमारे यहाँ देखो, जब कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की रचना हुई। मानो देखो, रचना क्या है? उसमें देखो, कि इसी शुक्ल पक्ष में और कृष्ण पक्ष में मानव का, समाज का जीवन व्यतीत होता रहा है।

शुक्ल और कृष्ण पक्ष का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन कराया कि शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष क्या है यह वाक् मैंने बहुत पुरातन काल में निर्णय दिया कृष्ण पक्ष कहते हैं अन्धकार को और मुनिवरों! देखो, शुक्ल पक्ष कहते हैं प्रकाश को। बाह्य जगत् में चन्द्रमा से और सूर्य से इसका समन्वय होता है। परन्तु जब हम आध्यात्मिकवाद में या मानवीय दर्शन में जाते हैं तो मानव दर्शन में कृष्ण पक्ष नाम अन्धकार को माना है, अज्ञान को माना है। अज्ञानी मानव ही मानो कृष्ण पक्ष में परिणत होता है। कृष्ण पक्ष किसे कहते हैं? एक समय बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है, हमारे यहाँ देखो, एक श्वेतकेतु कान्ता नामक विदुषी थी महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में। वह मानो इस प्रकार की विवेचना करती रहती थी। कान्ता से कहा गया हे कान्ता! हम यह जानना चाहते है क्या मानव के जीवन का कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष से क्या समन्वय है? तो मुनिवरों! देखो, कान्ता ने कहा विद्यालय में ब्रह्मचारिणीयों के मध्य में विद्यमान हो करके कहा कि कृष्ण पक्ष कहते हैं मानव में जहां प्रमाद होता है, जहाँ मानव में आलस्य होता है, जहाँ मानव में तमोगुण छाया रहता है उस काल को या उस अवस्था का नाम हमारे यहाँ मुनिवरों! देखो, कृष्ण पक्ष कहा जाता है। वही कृष्ण पक्ष है जिसमें मानव सदैव रत्त रहता है। परन्तु यही वाक् लेकर के जब उनसे कहा कि शुक्ल पक्ष क्या है? उन्होंने कहा कि शुक्ल पक्ष में आलस्य रहित जो प्राणी होता है, ज्ञान की उड़ान उड़ने वाला होता है, प्रत्येक वस्तु में ज्ञान का दर्शन करता है, मानवीय दर्शन करता है तो मानो देखो, वह उसके लिए शुक्ल पक्ष कहलाता है। जब कान्ता ने इस प्रकार का उपदेश दिया, तो उन्होंने एक वाक् और कहा कि मानो देखो, प्रत्येक पक्ष में पन्द्रह दिवस के जो पक्ष हैं इन पक्षों में अपना-अपना महत्व माना गया है। उन्होंने वर्णन करते हुए कहा, बेटा! हमने भी यह अध्ययन किया कि हमारे यहां जब मेरी पुत्रियां जब मानो देखो, रजो अप्रो से परिणत होती हैं तो मानो देखो, तीन रात्रियां हमारे यहाँ मानो देखो, कृष्ण पक्षों को कही जाती हैं। मानो इस विद्या का अध्ययन कराने वाले जब आचार्यजन होते हैं तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारियों को भी ब्रह्मचारिणीयों को भी बेटा! देखो, गृह आश्रम में आने से स्वर्ग की स्थापना हो जाती है। तो मानो देखो, जब कन्याओं को यह उपदेश दिया जाता है क्या तुम्हें सन्तान को आगे जन्म देना है। मानो जन्म देने वाला तो महा प्रभु कहा जाता है और परन्तु माता केवल जब अपने में गृह सूत्रों का पठन-पाठन करती है तो मानो उनके विचार बड़े भव्य और पवित्र बने रहते हैं इन्हीं पवित्र विचारों से मानो देखो, सन्तानों को जन्म देती रहती है। ऐसा मुझे स्मरण है एक वेदमन्त्र यह कहता है ममं ब्रह्मा आत्मा रथं ब्रह्मे आत्मां लोकां मेरे प्यारे! देखो, वह माता का शुक्ल पक्ष कहलाता है जब माता अपने गर्भ के, आत्मा से चर्चा वार्त्ता प्रकट करती है। मेरे प्यारे! देखो, कान्ता ने यह उपदेश दिया। क्या मानो उस समस देखो, जब मौन हो करके, शान्त रहो, जब अपने गर्भ में होने वाला बाल्य होता है उससे अन्तर्मुखी हो करके, वह मानो देखो, अपने में चर्चा करती है और वह कहती है हे आत्मा! मानो देखो, तू जो इस शरीर में आया है, तेरी जो प्रवृत्तियां हैं, वह बिखरने वाली है कुछ प्रवृत्ति मुनिवरों देखो, नेत्रों से बिखरी रहती है, कुछ प्रवृत्ति मानव की वाणी से बिखरती रहती है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, श्रोत्रों से प्रवृत्ति, त्वचा से प्रवृत्तियों का मानो देखो, छिन्न हो जाती हैं वह जब छिन्न हो जाती है

हे आत्मा! तू इस पिण्ड वाले शरीर में आने का उद्देश्य क्या है? मेरे प्यारे! देखो, वह आत्मा, जो माता के गर्भस्थल में विद्यमान है, वह आत्मा माता की आत्मा से, माता के उन विचारों से, मानो अपने विचार उत्पन्न करती रहती है।

गर्भस्थ शिशु से वार्ता

मेरे प्यारे! देखो, मैं आज बड़े आश्चर्य की वार्त्ता तुम्हें प्रकट करा रहा हूँ। परन्तु मेरे प्यारे! देखो, माता अध्ययन करती है और वह अध्ययन करती हुई दर्शनों का और वह कहती है हे आत्मा!! तू मुझे कोई उत्तर नहीं दे रही है। मैं तुझे उत्तर देना चाहती हूँ। तूने मेरे गर्भ से जन्म लेना है। मेरे गर्भाशय को तुझे दूषित नहीं करना होगा। जब तू बाह्य जगत् में आएगा, तो मानो तेरा ज्ञान-विज्ञान इतना विशाल होना चाहिए जिससे मेरा नामोकरण ऊर्ध्वा में परिणत होता रहे। तो यह गृह सूत्रों की मानो एक विचित्र ज्ञान की धारा है जो मुनिवरों! देखो, कान्ता अश्वपति के राष्ट्र में अपना उपदेश देती रहती थी, विद्यालयों में अपने विचार देती रहती थी और उन्हीं विचारों को लेकर के बेटा! उनका राष्ट्र, उनका महान वह समाज पवित्र बनने लगा।

तो विचार क्या मुनिवरों! यह कर्म उन्होंने किया। उसके पश्चात् लोरियों का पान कराना है। लोरियों का पान कराती माता का शुद्ध हृदय होना चाहिए। आहार पवित्र होना चाहिए। वेद के ऋषियों ने तो बेटा! यह कहा है एक समय त्रेता के काल में महाराजा पिप्लाद वाचकेतु मुनि की पत्नी ने वैद्यराज सुधन्वा से एक समय यह कहा कि महाराज! मैं कौन-सा आहार प्राप्त कर सकती हूँ। उन्होंने बेटा! औषधियों का निर्णय दिया और कहा कि अमुक समय में इस प्रकार के विचारों से मानो अमुक दिवस मानो इस प्रकार की औषध को पान किया जाए तो मानो देखो, ये विचार तुम्हारे हृदय में परिणत हो जायेगा। मेरे प्यारे! देखो, यह आचार्यो का कथन है। आज मैं आचार्य कुल में नहीं जाना चाहता हूँ। विचार केवल देना चाहता हूँ कि मेरे प्यारे! देखो, माता शुद्ध और पवित्र हृदय से पांच वर्ष तक बालक को ब्रह्मवेत्ता बनाने की शिक्षा दे देती है। राष्ट्रवाद की शिक्षा दे देती है। इसी प्रकार वह पितरों के युग में प्रवेश करता है।

आचार्य की परमात्मा से वार्ता

मेरे प्यारे! देखो, जब पितर अपने जीवन की प्रतिभा का वर्णन कराता है तो वह आचार्यकुल में प्रवेश कर दिया जाता है। आचार्य कैसा हो? वेद का ऋषि कहता है कि आचार्य कैसा हो? वेद का मन्त्र कहता है आचार्य वर्णं प्रह्वा वाचन्नमं ब्रह्मे जो मानो देखो, जो ब्रह्मचारी हो, आचार्य ब्रह्मवेत्ता हो। जो ब्रह्म की मानो देखो, प्रतिभा को जानने वाला हो, और आचार्य मानो देखो, मुनिवरों देखो, तीसरा गुण जो आचार्य परमात्मा से वार्त्ता प्रकट करता हो। यह बड़ा विचित्र वाक्य है कि आचार्य देखो, परमात्मा से कैसे वार्त्ता प्रकट करता है? आचार्य वह पवित्र होता है जो परमात्मा से वार्त्ता प्रकट करता है जो सांयकाल को (पुस्तक से लिया गया वाक्य) कहता है हे प्रभु! मैं आपकी शरण में आया हूँ। आपने मुझे यह कर्त्तव्य दिया है बाल्य, मेरे आश्रम में विद्या का अध्ययन कर रहे हैं और अध्यापन का कार्य मेरा क्रियाकलाप बन गया है। आचार्य जब इस प्रकार प्रभु से अपनी वार्त्ता प्रकट करता है। वेदमन्त्र के कथन में अपनी विवेचना करने लगते हैं तो वह (शब्द ध्वनि से लिया गया) आचार्य तीन प्रकार की विद्या को प्रदान करता है। सबसे प्रथम जो विद्या है उसका नाम है ब्रह्मज्ञान। ब्रह्म कैसा है? और तुम्हारी इन्द्रियों में कैसे समाहित रहता है। द्वितीय वह ज्ञान कराता है कि तुम्हारा व्यवहार पवित्र होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, व्यवहार को कुशलता में लाता है और तीसरा उसें वेद का विज्ञान होना चाहिए। बेटा! वेद का जो विज्ञान है, वह एक महान है, वेद का जो विज्ञान है, वह मानव को एक महानता का दर्शन

कराता है। मेरे पुत्रों! देखो, वेद का भाष्यकार भी वही होता है, जो व्यवहार को जानता है, जो यौगिकवाद को जानता है और विज्ञान को जानता है बेटा! वही वेद का भाष्य कर सकता है। अन्यथा देखो, वेद की जो चहुमुखी जो विद्या है इसका जो अध्ययन करने वाला हो, वही बेटा! देखो, वेद की प्रतिभा को ऊँचा बनाता रहता है।

पूज्य स्थली वेद

मैंने वेद के सम्बन्ध में, बहुत-सी चर्चाएं की है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे कई काल में यह वर्णन कराया कि महाभारत काल का जो समय व्यतीत हो गया, उसके पश्चात् का, जो काल है वह मानो देखो, रूढ़िवाद में परिणत हो गया। हिंसक प्राणियों ने वेद की प्रतिभा को नष्ट कर दिया। परन्तु यह मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे एक समय यह प्रकट कराया था, मैं आज उनके प्रश्नों का उत्तर यह देना चाहता हूँ क्या मानो इनका जो वाक्य था, वह बड़ा प्रिय रहा है, मैं इसका उत्तर इन रूपों में दे सकता हूँ क्या मानो देखो, यौगिक नही रहे, यौगिक व्यवहार और विज्ञान जब नहीं रहता है, जब विज्ञान को वेद में से मानो दूरी कर देते हैं, केवल अपने उदर की पूर्ति का एक साधन बना लेते हैं तो वेद की प्रतिभा को अपने से दूरी कर देते हैं। ये वेद हमारा पूज्य स्थली है और पूज्य में क्या-क्या वार्त्ता आती हैं मानो देखो, व्यवहार, जिसका पवित्र होता है वह पूज्य होता है और जिसके द्वारा विज्ञान होता है वह पूज्य होता है और जिसके द्वारा यौगिकवाद होता है वह मानो देखो, प्राण और मन को जब एकाग्र करके मानो देखो, वह अपनी हृदय स्थली में, वेद के मन्त्र को चिन्तन में लाता है, श्वास की, तरंगों में, उसे गति करने लगता है। वेद का वह योगी अर्थ करने में वह सफलता को प्राप्त होता है। मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा अध्ययन करता रहा हूँ, बेटा! वह काल मुझे स्मरण है और लाखों-करोड़ों वर्ष व्यतीत हो गए मुनिवरों! जब ऋषि-मुनि यौगिकवाद में प्रवेश करते थे। और यौगिकवाद किसे कहते हैं? जहाँ मानव का दर्शन होता है, जहाँ आत्मा का विज्ञान मानव के समीप उभर करके आता है वही मुनिवरों! देखो, यौगिकवाद कहलाता है। विज्ञान की सीमा समाप्त हो जाती है।

आत्मा का गृह

तो विचार-विनिमय क्या, कि यौगिकवाद जिसके समीप होता है मानो देखो, एक वाक्य आया है कि जब शरणं वर्णे वर्णा की सुस्ता विवेचना हमारे समीप आती है तो विचार आता है कि सदन तो गृह को कहते हैं। अब मेरे प्यारे! देखो, गृह के सम्बन्ध में, भिन्न-भिन्न प्रकार की विचारधाराएं हैं। व्यवहार में बाह्य जगत में मानो सदन कहते हैं जो गृह है, उस गृह का नाम सदन है। इस वाक्य को ले करके जब उसमें विज्ञान आता है तो उस विज्ञान में एक परमाणुवादी सदन आता है। क्योंकि जिस गृह में हम वास कर रहे हैं उस गृह में परमाणुवाद गति कर रहा है। उस गृह में अणुवाद गति कर रहा है। वह श्वास के साथ में मानो शरीरों में प्रवाह गति कर रहा है। उन्हीं परमाणुओं को ले करके मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिक अपने गृह में चित्रों का दर्शन कर रहा है। तो वह विज्ञान बन गया और विज्ञान की आभा बन करके रहती है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में यौगिकवाद बनेगा क्या, इसमें आत्मा से जो तरंगे उत्पन्न हो रही हैं प्रत्येक मानव के जो गृह हैं ब्रह्मा सदनम् मेरे प्यारे! देखो, वह व्यवहार में गृह बन गया, बाह्य जगत् में। विज्ञान में वह परमाणुओं की स्थली बन गयी और मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवाद में यह बाह्य जो गृह है मानो ये न होने के तुल्य बन करके आत्मा का जो गृह है यह हमारा मानव शरीर माना गया है। यह आत्मा का गृह बन गया और इस गृह में आत्मा कैसे वास कर रहा है?

यौगिकवाद

मेरे प्यारे! देखो, हृदय में नाना प्रकार की तरंगों की तन्तुओं की धारा प्रारम्भ हुआ करती हैं। नाना प्रकार के जो तन्तु है, वह हृदय से उत्पन्न होते हैं। मानो देखो, आत्मा सूर्य का प्रतीक कहलाता है। वह मानो परमाणुओं के चित्रों का विभाजन करता रहता ये जो सदन है हमारा जो मानव शरीर है, यह प्रकृति के, पंच महाभूतों का समूह माना गया है। और हम इस पंच महाभूत समूह में, मेरे प्यारे! देखो, आत्मा आत्मा विद्यमान है वह सदन बनाए हुए है। वह पंच महाभूत तो आत्मा का सदन कहलाता है। वही तो आत्मा का गृह माना गया है। मेरे प्यारे! उन्हीं के आधार पर जब प्रभु ने मानव शरीर की रचना की जो पांच ज्ञानेन्द्रियों की रचना की है और इनके साथ में पांच प्राणों की रचना की है और वह जो पांचों प्राणों से इन्द्रियों का समन्वय है, मेरे पुत्रों! देखो, वह सदन के पंच द्वार हैं। और पांचों द्वारा से ही सदन का प्रादुर्भाव होता है। यौगिकवाद कहते है कि उन तरंगों को विशुद्ध रूप देना। उन तरंगों को दूषितपना ना देना, मानो उनको नियन्त्रण में जाने का नाम यौगिकवाद कहलाता है मेरे पुत्रों! देखो, वही यौगिकवाद वेद की आभा को परिणत करता है। यह मानव की विवेचना मुझे कोई प्रिय नहीं लग रही है कि आज मैं यह उच्चारण करने लगूं मानो देखो, वेद भिन्न-भिन्न रूपों में, भिन्न-भिन्न आश्रमों का एक-एक वेद हैं वेद तो ज्ञान कह रहा है। वेद व्यवहार कह रहा है, वेद मेरे पुत्रों! देखो, यौगिकवाद की व्याख्या कर रहा है। ये वेद की प्रतिभा कहलाती है जितना भी ज्ञान और विज्ञान है वह वेद के मानो देखो, माध्यम से प्रारम्भ होता है।

वेद की तीन तरङ्गे

मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने पुरातन काल में यह वर्णन कराया था कि मध्यकाल इस प्रकार का हुआ, उसमें वेद केवल पूजा की स्थली माने गए, ब्राह्मण समाज ने, बुद्धिमानों ने पूजा की स्थलियों को उच्चारण किया कि ऐसा नहीं, मैं इसका खण्डन नहीं कर रहा हूँ। मैं इसका मण्डन करता हूँ कि वेद प्रकाश है और प्रकाश पूजा का स्रोत है परन्तु उस प्रकाश में तीन प्रकार की तरंगों का प्रादुर्भाव होता है और वह तीन प्रकार की तरंगें क्या हैं, व्यवहार है, विज्ञान है और यौगिकवाद कहलाता है। ये तीन प्रकार की तरंगें मानो वेद रूपी प्रकाश से उत्पन्न होती हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब मेरी प्यारी माता वेद का अध्ययन करती है और गृह सूत्रों का पठन-पाठन करती हैं, तो वह सन्तान को ऊँचा बनाती हैं। व्यवहार में ऊँचा बना देती हैं। ब्रह्मवेत्ता बना देती हैं।

मेरे प्यारे! देखो, मैंने इस काल को बहुत, मैं माता की लोरियों का पान करता था बेटा! वह काल भी मुझे स्मरण है, माता का नामोकरण उच्चारण करते ही शृङ्गेरी माता, मुझे भयंकर वनों में यह कहा करती थी हे बाल्य! यह मानो देखो, प्रकृति है। इस प्रकृति में दर्शनों का तुम्हें अध्ययन करना है। मानो इसमें मानव दर्शन का अध्ययन करते हुए इसमें विचित्रतता को लाना है। तो मुनिवरों! विचार यह कि वेद का यदि प्रकाश लाना है, वेद के ज्ञान को लाना है और रूढ़िवादी को समाप्त करना है तो मानो देखो, माताओं को गम्भीर अध्ययन कराना होगा और वह अध्ययन मुनिवरों! देखो, वानप्रस्थी जन जैसा मैंने पूर्वकाल में वर्णन किया है, वानप्रस्थ जब गृह आश्रम, से माता-पिता उपराम हो जाते हैं और ज्ञान को अपने अनुभवों को ले करके विद्यालयों में पठन-पाठन कराते हैं। मानो देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ इस प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण हुआ, वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण करते थे उन्होंने मानो इस प्रकार की धाराओं का वर्णन किया। मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान इस प्रकार का भी नही, पुरातन काल में राष्ट्रीय विज्ञानवेत्ताओं ने और भौतिक विज्ञानवेत्ताओं ने अपना-अपना वर्णन किया है। जब मानो देखो, इस प्रकार आभा में नियुक्त होने वाला प्राणी मात्र अपने में प्राणी अप्रतं मानो दर्शन करता है तो बेटा! देखो, यह मानवीय दर्शन अपने में महान् और प्रकाशमयी बन करके रहता है। आज मैं इस विचारों

को इसलिए दे रहा हूँ कि महाराजा! अश्वपति के यहाँ विज्ञान अपने में अनूठा माना गया है। विज्ञान की अपनी-अपनी धाराएं हैं।

तरङ्गों का प्रभाव

एक समय बेटा! देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ गाड़ीवान रेवक मुनि आए और गाड़ीवान रेवक ने कहा कि प्रभु! मैं आपके यहाँ विद्यालयों में भ्रमण करना चाहता हूँ, तो वह विद्यालयों में जब भ्रमण करने के लिए पहुंचे तो वहाँ उनकी धाराएं बड़े विशुद्ध रूपों से वर्णन हो रही थी। तो मानो देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज, एक सौ पांच वर्ष तक गाड़ी के नीचे वे तपस्या करते रहे। गायत्री का जपन करते रहे। अनुष्ठान करते रहे। प्राणायाम करते रहे। तो मानो देखो, उस समय जब वह महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में आए तो देखो, एक कन्या विद्यालय में प्रवेश किया, जहाँ कन्याएं अध्ययन कर रही थीं। मेरे प्यारे! देखो, वानप्रस्थ शिक्षा लेने वाली देवियां उन्हें अध्ययन करा रही थीं, तो अपने में जब एक अध्यापन का आचार्य क्रियाकलाप कर रही थीं, उनके समीप आए तो गाड़ीवान रेवक मुनि ने कुछ चर्चाएं की। जब चर्चा की तो मानो देखो, चर्चा करते ब्रह्मवाचो ब्रह्मा व्रताः मुनिवरों! देखो, गाड़ीवान ने जब चर्चाएं कीं तो मानो देखो, उसकी जो विचारधारा थी, जो अध्यापन का कार्य कर रही थी, आचार्यजन थी मानो उसके हृदय की तरंगें गाड़ीवान रेवक मुनि के हृदय में प्रवेश कर गयीं। जब हृदय में प्रवेश कर गईं, तो प्रवेश होते हुए मानो देखो, वे तपस्वी थे, एक क्षण समय, वेद की आभा को ले करके मौन हो गए और जब मौन हो गये तो वह तरंगे कौन-सी थी? मानो देखो, उसके हृदय में यह विचार आया कि यदि मुझे ऐसे ऋषि गृह आश्रम में प्रवेश हो जाते, तो मैं एक मानो देखो, तपस्वी बालक को जन्म दे देती। ये तरंगें उसके हृदय में समाहित हुई।

मुनिवरों! महाराजा अश्वपति ने, जब विद्यालय का अध्ययन कराया, तो गाड़ीवान रेवक मुनि से कहा, कहो भगवन्! आपको यह मेरा विद्यालय कैसा प्रतीत हुआ? उन्होंने कहा तुम्हारा विद्यालय बहुत ही पवित्र है, परन्तु यह जो अध्यापन का कार्य करा रहा है आचार्य, जो देवी है, उसका नाम शकुन्तकानी था यह शकुन्तकानी जो देवी है, इस योग्य नहीं है इन ब्रह्मचारिणीयों को यह सफलता को प्राप्त करा सके। मेरे प्यारे! आश्चर्य में बोले, क्या महाराज! मैं तो मनु सिद्धान्त का अध्ययन करता रहता हूँ। उन्होंने कहा इसके हृदय में यह विचार आया। जब यह वार्त्ता प्रकट कर रही थी, मैंने अपने हृदय में तपस्या के बल से वह दृष्टिपात किया। तो मानो देखो, उसका आकार बन करके, मेरे हृदय में समाहित हो गए। और यह इनके विचारों में जो इस प्रकार की तरंगों का प्रादुर्भाव होता है तो जिन कन्याओं को यह विद्या अध्ययन कराएगी, यह परमाणु उनके हृदयों में समाहित हो जाएंगे। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक्य महाराजा अश्वपति ने श्रवण किया तो उस विदुषी को निमन्त्रण दे करके कहा तुम्हारे हृदय में यह विचार आए। उन्होंने कहा प्रभु! ऋषि के चरणों में ओत-प्रोत हो गई ओर ऋषि से कहा, प्रभु! मेरा प्रायश्चित क्या होगा? उन्होंने कहा सामवेद का अध्ययन करो। सामगान का अध्ययन करो। और अध्ययन करके तुम देखो, लगभग छः माह तक अनुष्ठान करो। तब इन तरंगों का मानो तुम्हारा प्रायश्चित हो सकता हैं मेरे प्यारे! देखो, उसने इसी प्रकार अनुष्ठान किया।

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या है? यह शिक्षा की जो तरंगें हैं यह बड़ा सूक्ष्मतम रहस्य माना है। विचार है जो बेटा! मैंने बहुत पुरातन काल में इस अध्ययन की प्रणाली को बहुत अध्ययन किया है। मैं इसको वर्णन करता रहूँ, तो वर्षो समाप्त हो जाएंगे। मैं इस ज्ञान में जाना नही चाहता हूँ यह बड़ा सूक्ष्म ज्ञान है मेरे पुत्र महानन्द जी यह कहते रहते हैं कि आधुनिक काल का जो राष्ट्र है, शिक्षा का माध्यम है, वह बहुत दूरी

जा रही है। मैं यह कहा करता हूँ कि कन्याओं को गृह सूत्र दें और आयुर्वेद का अध्ययन करने से राजा का राष्ट्र पवित्र बन सकता है। समाज की प्रणालियां पवित्र बन सकती है। संसार में राष्ट्र की आवश्यकता नहीं है। मानव को कर्त्तव्यवादी बनने की आवश्यकता है और यदि देखो, कर्त्तव्यवादी मानव बन जाता है, एक-दूसरे का सहायक बन जाता है तो यह जो राष्ट्रवाद है एक-दूसरे के विचारों को नष्ट कर रहा है, जो अपनी स्वार्थपरता में समाज को मूर्ख बना रहा है, देखो, अपठित बना रहा है। ऐसे राष्ट्र की आवश्यकता नहीं रहती।

तो विचार क्या, कि राष्ट्रवाद तो अनुशासन है। अनुशासन में रहना अपनी प्रवृत्तियों में जब मानव जब अपनी इन्द्रियों को अनुशासन कर लेता है अनुक्रमणिका बना लेता है अपने आहार को पवित्र बना लेता है, तो उसका राष्ट्र मानो देखो, महान सजातीय बन जाता है। मैंने मानो देखो, यह वर्णन करते हुए बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करता रहा हूँ। उस अध्ययन की जो प्रणाली है वे बड़ी विचित्र रही है, जब एक प्राणी अपने में शुद्ध आहार करता है, शुद्ध व्यवहार में लगा हुआ है उसका जीवन एक महान् बना रहता है। मैं आधुनिक काल की चर्चा नहीं करता, मेरे प्यारे महानन्द जी वर्णन करते रहते हैं। समय मिलेगा तो उनकी यह चर्चाएं होंगी।

आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है? क्या मुनिवरों! देखो, भगवान् मनु से श्वेतकेतु मुनि की यह चर्चाएं हुई क्या हे प्रभु! आपके मन में यह विचार कैसे आया? तो भगवान् मनु ने कहा कि मैं समाज को मानो देखो, एक ब्रह्मचर्य काल में, एक गृह काल में, एक वानप्रस्थ काल में परिणत कराना चाहता हूँ। तो मानो देखो, इस प्रकार बेटा! उन्होंने माता के जीवन को एक मानवीय स्रोत बनाना चाहा। तो विचार क्या? संसार में मेरी प्यारी माताओं का आदर्श ऊँचा होना चाहिए। माता अपने में तपस्वी बन करके, अपनी गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रकट करने लगे, जैसे आचार्य ब्रह्मचारी के अन्तर्हृदय को जान करके उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश कर देता है। जैसे मानो देखो, प्रति वाचो जब इस प्रकार के विचार मानव के बन जाते हैं तो उसका जीवन बिखरता नहीं। उनका विचार सुगठित हो जाता है।

मानो देखो, बहुत पुरातन काल की वार्त्ता है माता मल्दालसा अपने ब्रह्मचारियों को ब्रह्मवेत्ता बना रही है, तो मानो देखो, माता ब्रह्मवेत्ता ही दृष्टिपात करती रहती। वह ब्रह्मवेत्ता बन गए। जीवन बिखरता नहीं है। प्राण को, मन को सुचारू रूप से अपने में परिणत कर लेते हैं।

तो बेटा! आज का विचार यह अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक्य उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या है हमारा अभिप्रायः यह है कि हम समाज को मानो परम्परागतों के, जो अतीत का काल था, उस समाज को मानो देखो, दृष्टिपात करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है, जिन्होंने मानो अपने जीवन को महान् बनाने का प्रयास किया। देखो, इससे पूर्व काल में, मैं गृह की चर्चा करते हुए आज मैंने कुछ गृह की चर्चाएं की हैं। मुनिवरों! देखो, आचार्य जब ब्रह्मचारी को देखो, इस प्रकार की शिक्षा देता है, वह गृह में ना करके अपने जीवन को खिन्न नहीं कर रहा है। वह प्राणायाम कर रहा है, साधना में भी है, क्रियाकलापों में भी लगा हुआ हैं, संसार के भी क्रियाकलाप कर रहा है, तो मानो देखो, वह पृथ्वी की भूमि में बीज की स्थापना भी कर रहा है और उससे अन्नाद को ले करके अपने उदर की पूर्ति और समाज को भी ऊँचा बनाने का प्रयास करता है। इसी प्रकार हमें अपने जीवन को बनाना है और बना करके मुनिवरों! देखो, गृह-आश्रम में माता अपने पुत्रों! को कैसे शिक्षा दे, यह चर्चा मैं कल प्रकट करूंगा।

मानो देखो, आज का विचार, अब यह समाप्त होने जा रहा है आज मैंने अपने विचारों में कुछ गम्भीर

वाक्य, कुछ मानो देखो, वृत्तियों के वाक्य प्रकट किए हैं। कल समय मिलेगा तो कल बेटा! भगवान मनु के राष्ट्र में कैसे समाज अश्वपति के राष्ट्र में माता अपने पुत्रों को बाल्यों को पंक्ति लगा करके कैसे उपदेश देती थी यह चर्चाएं मैं कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

४ माताओं की अपने ब्रह्मचारियों को शिक्षा 12 03 1986

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद-मंत्रों का, गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का, प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप माने गए हैं। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा का गुणगान गाने वाले, परम्परागतों से ही, बेटा! उस महान् देव की उड़ाने उड़ते रहते हैं। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर, वर्तमान के काल तक, एक ही विषय पर मानव अन्वेषण करता रहा है और नाना प्रकार की लेखनियां बद्ध करता रहा है और वे परमपिता परमात्मा के स्वरूप को जानने के लिए तत्पर रहे है।

मौलिक ज्ञान

दूसरा जो विचार है, मानव के जीवन का जो क्रियाकलाप है, मानव के जीवन की जो चर्या है, उसके ऊपर भी नाना आचार्यो ने, नाना अनुसन्धान वेत्ताओं ने, अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार दिए हैं। आज मैं उन विचारों को ले करके, हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है, क्योंकि वेदमन्त्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार की, प्रायः चर्चाएं आती रहती हैं। वास्तव में मौलिक ज्ञान तो तीन ही वाक्यों में निहित रहता है, ज्ञान, कर्म और उपासना के रूप में परिणत रहता है। प्रत्येक मानव की यह उड़ानें रही हैं कि हम ज्ञान और विज्ञान के उस स्वरूप में जाना चाहते हैं, जिस ज्ञान और विज्ञानवेत्ता ने मानो इस ब्रह्माण्ड की रचना की है और जो ज्ञान और विज्ञानवेत्ताओं ने ब्रह्माण्डवेत्ता को जानने के लिए तत्पर रहे हैं। तो दोनों प्रकार के विचारों में मानव परम्परागतों से बेटा! रत्त रहा है। आज मैं कोई विशेष चर्चाएं देना नहीं चाहता हूँ। क्योंकि मैं विज्ञान की उड़ाने भी नहीं उड़ना चाहता कि अणु परमाणु कैसे मानव के हृदयों में तरंगित होता रहा है। मानवीय मस्तिष्कों में नाना प्रकार की जो जागरूकता होती रही है उसके ऊपर बेटा! हम प्रयः विचार-विनिमय करते रहते हैं।

हमारे यहाँ राष्ट्र वेत्ताओं ने, अपने राष्ट्र को त्याग करके और भयंकर वनों में जा करके, ब्रह्म ज्ञान की दीक्षाएं प्रायः ऋषि-मुनियां से लेना प्रारम्भ किया और इन दीक्षाओं को ले करके उन्होंने जो मार्ग दर्शाया, उसी मार्ग के आधार पर, मानव ने अपने जीवन को बनाने का प्रयास किया। तो आओ मेरे प्यारे! मैं बहुत, गम्भीर चर्चा तो तुम्हें नहीं देना चाहता हूँ। आज मैं तुम्हें बेटा! उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ माताएं अपने पुत्रों को जन्म दे करके अथवा पुत्रियों को जन्म दे करके और उनको महान् बनाने के लिए प्रयास करती रहती थीं।

मुझे नाना ऋषि-मुनियों का जीवन स्मरण आता रहता है, मैं कागभुषुण्ड जी की जब चर्चा करता हूँ, तो मानो उनकी माता की चर्चा करता हूँ तो मेरा हृदय गद्गद् हो जाता है और यह कहा करता हूँ कि माता निर्माणवेत्ता तो मेरा प्यारा प्रभु है परन्तु जिन तन्तुओं से निर्माण होता है, उन तन्तुओं में मानो जो एक विचार की धारा है, तरंगों की धारा है उन तरंगों का उसमें प्रादुर्भाव होता है और वह मानो देखो, उन्हीं तरंगों से तरंगित होने वाली जो जीवन सत्ता है वे उसे प्राप्त हो जाती है। तो आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेषता में नहीं केवल विचार-विनिमय क्या मेरी प्यारी माता अपने ब्रह्मचारियों को पालना करने के पश्चात, वह पांच वर्ष के पूर्व नाना प्रकार की प्रतियोगिताएं और उनके प्रति जो सदभावना उन्होंने दी, उसको पुनः से संचित करते हुए एक पंक्ति में विद्यमान हो करके, उनसे नाना प्रकार के प्रश्न कर रही है माता। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है तो मैं हृदय अगम्य बन जाता है माता-सीता के द्वारा दो ही पुत्र थे। मानो उस देवी ने अपने दोनों बाल्यों को प्रातःकाल

में ऋषि के आश्रम में, भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा देती रहती।

प्रातःकालीन प्रभु का दर्शन

केवल सीता का जीवन ही ऐसा नहीं था, मुनिवरों! देखो, माता स्नेहलता का जीवन भी प्रायः ऐसा था मुनिवरों! कोण्डली ब्रह्मचारी और कागभुषुण्ड जी और रेणकेतु ये तीन बाल्य थे, माता के पुत्र। परन्तु माता प्रातःकालीन पंक्तियां लगा करके ब्रह्मचारियों को शिक्षा दे रही है और यह कहती है हे बाल्यो! तुमने मेरी, लोरियों का पान किया है, तुम्हें महान् और पवित्र बनना है। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् माता उच्चारण कर रही है कि तुम्हें अपने विचारों को कैसा बनाना है? मेरे प्यारे! देखो, माता उच्चारण कर रही है, प्रातःकालीन तुम मानो अपनी स्थलियों से पृथक हो करके, अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो जाओ, और निवृत्त हो करके तुम मानो देखो, एक पंक्ति में माता विद्यमान करा करके, और भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा दे रही है, मानो देखो, हमारे यहां वेदमन्त्र का उद्घोष करती माता कहती है, हे बाल्य! ये मानो पंच यज्ञों का चयन तुम्हें करना है। सबसे प्रथम मानो देखो, प्रातःकालीन ब्रह्म की सृष्टि का, ब्रह्म की रचना का विचार-विनिमय तुम्हें करना है और उस रचना में, उस प्रभु का दर्शन करना है और उस रचना में तुम्हें अपना भी दर्शन करना है।

ओ३म् रूपी सूत्र में प्राण

प्रभु का दर्शन कैसे होता है? मेरे प्यारे! देखो, प्रातःकाल का जब सूर्य उदय होता है तो उदय होते ही प्रकाश आता है और उस प्रकाश में जो-जो विभक्त क्रिया मानो पृथ्वी से समन्वय हो करके, हो रही हैं उन विभक्त क्रियाओं पर मुनिवरों! देखो, माता कहती है पुत्रो! तुम्हें विचार-विनिमय करना है और वह तुम मेरे से श्रवण करो। मेरे से तुम मानो उन वाक्यों को अपने हृदय में धारण करो। तो माता कहती है हे बाल्य! यह जो प्रभु का ब्रह्माण्ड है, प्रभु का जो एक माला के सदृश्य जगत् मुझे प्रायः दृष्टिपात आ रहा है। यहाँ एक-एक मानव की माला बनी हुई है। विचारों की विचारों से माला बनी हुई है। उस माला को तुम्हें विचारना है। और वह जो मनके हैं, और धागा है, उनका दोनों का तुमने समन्वय करना है। जैसे मुनिवरों! देखो, मानव का श्वास गति कर रहा है। हे ब्रह्मचारियों! तुम्हारा श्वास गति कर रहा है और प्रत्येक श्वास में तुम मनके में पिरोना चाहते हो, ओ३म् रूपी सूत्र में, ओ३म् रूपी धागे में तुम इसे पिरोना चाहते हो। ब्रह्मचारी शान्त मुद्रा से इसे ग्रहण कर रहे हैं। माता जब लोरियों का पान करा देती है उसमें ओज और तेज का भरण कर देती है तो मानो देखो, ब्रह्मचारी अपने में महान् बन जाता है। इसीलिए हमारे यहाँ ब्रह्मयाग का वर्णन आता रहता है। ब्रह्मयाग किसे कहते हैं? ब्रह्म का चिन्तन करना हैं और माता यह कहती है, हे ब्रह्मचारी! तू उस प्रभु को प्रत्येक स्थली में दृष्टिपात कर। माता यहाँ नाना मन्त्रों का अध्ययन करा देती है और मन्त्रों का अध्ययन करा करके, ब्रह्मचारी उसके पश्चात् आचार्यकुल में प्रवेश हो जाते हैं।

आचार्यकुल में ब्रह्मचारी

जब आचार्यकुल में प्रवेश होते हैं तो आचार्य मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी को मानो देखो, अपना करके कहता है आओ, ब्रह्मचारी! मानो तुम अपनी इन्द्रियों के विषयों को मुझे प्रदान कर दो। मेरे प्यारे! माता तो ब्रह्मज्ञान की चर्चा कर रही है। एक पंक्ति में विद्यमान करा करके कहती है, हे बालक! तुमने आचार्य कुल में क्या अध्ययन किया है? मानो देखो, कुछ ब्रह्मचारी इस प्रकार का ही आचार्य कुल में विद्या का पठन-पाठन कर रहे हैं मानो वह गृह में प्रवेश करना नहीं चाहते। परन्तु माता का दायित्व उसके पश्चात् भी बना रहता है। तो मुनिवरों! मानो देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, माता कहती है, हे ब्रह्मचारी! तुम देव पूजा करो। देव पूजा का

अभिप्राय क्या है? तुम्हें देवताओं का पूजन करना है। आचार्य कुल में जब तुम प्रवेश करोगे, तो आचार्य तुम्हारा देवता है। वह चैतन्य देवता है। अपने उद्गारों से तुम्हें वह पवित्र बनाता है, अपने उद्गारों से महान् बनाता है। तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार माता जब शिक्षा देती है तो बाल्य देखो, आचार्य कुल में प्रवेश हो करके आचार्य प्रत्येक इन्द्री को अपने में धारण कर रहा है। प्रत्येक इन्द्रिय को अपने में मानो देखो, सहवासी बना रहा है मेरे प्यारे! देखो, आचार्य कहता है, हे ब्रह्मचारी! तुम्हें ब्रह्म मानो देखो, ब्रह्मचारी बनना है। तुम्हें ब्रह्म का चिन्तन करना है। देवपूजा में तुम्हें जाना है।

पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा अध्ययन

देवपूजा का अभिप्राय मुनिवरों! देखो, क्या है? मुझे एक समय मेरे पुत्र महानन्द जी ने यह प्रकट कराया, कि यह जो आधुनिक काल व्यतीत हो रहा है, इसमें मानव समाज ने देवपूजा का अभिप्राय यह स्वीकार कर लिया है कि हमें देवताओं का पूजन करना है और यहीं तक वेद की विद्या का मानो सद्गम्य हो जाता है। मैं यह कहता हूँ नहीं ऐसा नहीं है। मुझे महाराजा अश्वपति के यहाँ प्रायः बहुत समय तक वेदों के पठन-पाठन कराने का प्रायः सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय दते हुए कहा है अपना विचार देते हुए कहा है आचार्य कहता है तुम देवपूजा करो, देवपूजा किसे कहते हैं? देवपूजा के सम्बन्ध में हमने बेटा! बहुत-सा अपना विचार दिया। परन्तु आज की देवपूजा है उसे कहते हैं जहाँ चैतन्य और जड़ दोनों की पूजा का हमारे समीप एक वाक्य आता है। बेटा! देखो, वह चैतन्य देवता तो आचार्यजन हैं, पितरजन हैं। मानो देखो, पितरों की व्याख्या तो बड़ी विचित्र है। हमारे यहाँ पितर उसे कहा जाता है, जो हमें देता है, जो हमे स्नेह करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, केवल पितर वही नहीं है। हमारे यहाँ चैतन्य भी पितर कहलाते हैं और जड़वत भी पितर कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, यह पृथ्वी हमारी माता और पितर कहलाती है। मानो देखो, यह आपो हमारा पितर और देवता कहलाता है। अग्नि हमारी माता और पितर कहलाती है। मेरे प्यारे! ये हमारे देवता हैं। ये हमारे देवत्त्व में रत्त रहने वाले हैं। जब बेटा! देखो, हम आपो पर विचार करते हैं, या हम पृथ्वी पर विचार-विनिमय करते हैं तो यह पृथ्वी हमारी माता है। और यह में जीवन प्रदान करने वाली है। मानो देखो, इसके गर्भस्थल में वैज्ञानिक प्रवेश करता है तो विज्ञानवेत्ता बन जाता है। मानो देखो, जब उसके गर्भ में, मैं प्रवेश होता हूँ तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि माता के गर्भस्थल में क्या-क्या वस्तु विद्यमान हैं? मुझे स्मरण आता रहता है द्वापर के काल का वाक्य भी आता है, त्रेता का काल भी मुझे स्मरण आता है जब माता कौशल्या जी मानो देखो, तप करती थी, तो मुनिवरों देखो, वह तप करती हुई यह पृथ्वी से कहती थी कि हे पृथां ब्रह्मे हे पृथ्वी! तू ब्रह्मा के तुल्य है। हे पृथ्वी! तेरे गर्भस्थल में नाना प्रकार का परमाणुवाद गति कर रहा है और वही परमाणुवाद मानो हमारे प्राण के द्वारा हमारे में प्रवेश करके हमें वह जन-जीवन दे रहा है। हमें वह महानता प्रदान कर रहा है। मानो देखो, जैसे पृथ्वी के, एक-एक कण में जीवन सत्ता विद्यमान होती है और वहीं जीवन सत्ता के मूल में नाना प्रकार का अन्नाद विद्यमान होता है। नाना प्रकार का खनिज विद्यमान होता है। जब विज्ञानवेत्ता इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करते हुए, माता के ऊपर चयन करते हैं अथवा अनुसन्धान करते हैं और उसमें देवत्व को जानने में लग जाते हैं तो बेटा! ऐसा प्रतीत होता है, कि यह जो पृथ्वी है, यह मानो देखो, हमारी जननी है। हमारे में नाना प्रकार के पदार्थो का पान कराने वाली हैं ये जो पृथ्वी है इसी के गर्भ में बेटा! याग होता है। मुनिवरों! देखो, यह बालक की नाभि बनी हुई हैं, यह विचारों की नाभि बनी हुई है। मुनिवरों! देखो, नाभ्यां ब्रह्मवाचो पृथाः मेरे प्यारे! यह पृथ्वी मानव के विचारों की नाभि है। विज्ञान के विचारों की नाभि है

और यह नाभि में विद्यमान हो करके जब चक्र गति करता है, बेटा! देखो, नाना प्रकार के विज्ञान में मानव रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब पृथ्वी के गर्भस्थल में, विद्यमान हो करके मानव मुनिवरों! देखो, देवपूजा करता है और पृथ्वी की पूजा करता है, पूजा का अभिप्राय क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, इसका सदुपयोग करना हैं इसको सत्य में लाना है, विचारों में लाना है। मानो देखो, ये पृथ्वी एक माला है। एक माला बनी हुई है।

मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण है मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने यह वर्णन कराया है एक समय आधुनिक काल का जो विज्ञानवेत्ता है, वर्तमान का जो विज्ञानवेत्ता है, वह तेरह लाख पृथ्वियां जान सका है। परन्तु जब यह विचार आता है कि यह पृथ्वी तो इससे भी विशाल, विस्तृत मानी गई है। हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने, वैज्ञानिकों ने समाधिष्ठ हो करके मानो परम्परा के काल से लेकर के, आधुनिक काल तक, मेरे प्यारे! उस काल के वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण किया और समाधिष्ठ हो गए, वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश हो गए। तो विचारने से यह प्रतीत हुआ, कि लगभग तीस लाख पृथ्वियां जानने का प्रयास किया। तीस लाख पृथ्वियां अब तक जानी हैं। और उन तीस लाख पृथ्वियों का ऐसे समन्वय रहता है सूर्य से जैसे बेटा! देखो, सूर्य की नाना प्रकार की रश्मियां उत्पन्न हो रही हैं और ये रश्मियां अपना-अपना नृत्य कर रही हैं। इसी प्रकार नाना चहुमुखी मुनिवरों! देखो, यह जो सूर्य है और सूर्य की जो किरणें हैं, उन्हीं किरणों के आधार पर बेटा! यह पृथ्वियां अपने में प्रतिष्ठित हो रही हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऐसा एक चक्र बना हुआ है जैसे भगवान कृष्ण ने मुनिवरों! देखो, द्वापर के काल में, अपने सुदर्शन चक्र का निर्माण किया था। और सुदर्शन चक्र की भांति यह सूर्य चक्र है और पृथ्वी उसके आरे लगे हुए हैं, इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड का चक्र प्रारम्भ हो रहा है।

तो विचार आता है क्या तीस लाख पृथ्वियों के आरे बने हुए हैं क्या यह एक माला बनी हुई है जैसे शब्द से शब्दों का निर्माण होता है और वह एक माला बन जाती है उसी प्रकार मुनिवरों देखो, यह भी एक माला कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, माता कहती है आचार्य कहते हैं अपने बाल्य ब्रह्मचारियों से हे ब्रह्मचारियो! तुम वैज्ञानिक बनो और तुम कैसे विज्ञानवेत्ता बनो? मानो तुम्हारे हृदय में एक दूसरे के प्रति सहयोग होना चाहिए। क्रोधाभास है नहीं होना चाहिए। यह जो क्रोधाभास मानव के जीवन को अपंग बना देता है मानो यह जो तुम्हारा विज्ञान है, अनुसन्धान है ये तुम्हारे जीवन को प्रकाश में ला देता है। हे बाल्य! ब्रह्मचारियों! तुम्हें प्रकाश में आना है और प्रकाश के लिए तुम्हें सदैव रत्त रहना है।

मेरे प्यारे! देखो, आचार्य कुल में जब इस प्रकार से शिक्षा या माता एक पंक्ति में विद्यमान करा करके इस प्रकार की शिक्षा को उच्चारण करने लगती है, वह सबसे प्रथम मानव को मानव दर्शन देती है। मानव दर्शन भी इसी से प्राप्त होता है। हमारे जीवन का सम्बन्ध मेरे पुत्रों! देखो, एक-एक परमाणु से रहता है अथवा अणु से रहता है। अणु और परमाणुओं का समूह ही तो मानो सत्य माना गया है। मानवत्व माना गया है। तो इसी प्रकार, हमें विचार-विनिमय करना है। हमें अपने में अन्वेषण करना हैं, हम मुनिवरों! परम्परागतों से विचारते रहे हैं, आचार्यो ने विचारा है। मेरे पुत्रो! देखो, ऐसे-ऐसे लोक-लोकान्तर हैं परमात्मा के राष्ट्र में, इस ब्रह्माण्ड में, परमात्मा के राष्ट्र में, जिनको एक-एक सहस्त्र सूर्य उसे प्रकाश देते हैं कैसा अनुपम यह ब्रह्माण्ड है प्रभु का? आज मैं ब्रह्माण्ड की कल्पना नही करने जा रहा हूँ।

विचार क्या, वेद का ऋषि कहता है, माता कहती है, हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें देवपूजा करनी है और पूजा का अभिप्राय यह उसमें जड़ और चैतन्य दोनों जो देवता हैं, उन देवताओं की तुम्हें पूजा करनी है क्योंकि वह हमें जीवन सत्ता प्रदान करते हैं। वह जीवन देते हैं। हमारे मानवतत्व को ऊँचा बनाते हैं। मेरे प्यारे! मानो देखो,

माता-पिता कहते हैं, आचार्यजन कहते हैं कि तुम सुदृष्टि को पान करने लगो, मानो देखो, संसार के विज्ञान में तुम प्रवेश करोगे, या देव पूजा में प्रवेश कर जाओगे तो मानो तुम्हें ये संसार तुम्हें देवत्व में दृष्टिपात आएगा।

प्रातःकालीन याग

मेरे प्यारे! यह उपदेश मेरी प्यारी माता दे रही है। आचार्य विद्यालय में दे रहा है और कहता है तुम प्रातःकालीन याग करो। मेरे प्यारे! देखो, याग से क्या प्राप्त होता है? मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा है। नाना प्रकार की रूपकमयी चर्चा हुआ करती है और ओर मुनिवरों! देखो, रूपकमयी चर्चा में यह होता है कि यह जो हमारा मानवत्व है, मानो देखो, इसमें ब्रह्माण्ड की नाना प्रकार की तरंगों को पिरोया, हमें अपने में प्राप्त होता रहता है। उस अपने को प्राप्त करना है। हमें अपने जीवन को एक महानता की वेदी पर ले जाना है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है माता अपने में यह उपदेश दे रही है ब्रह्मचारी को महान् बनाने के लिए। तो मुनिवरों! देखो, वह देवपूजा का अभिप्राय क्या है? देवताओं में ये पृथ्वी है, जो नाना प्रकार का खनिज देती है। देखो, यह आपो है, जो मानव को प्राणसत्ता प्रदान करता है। मुनिवरों! देखो, केवल प्राणी मात्र को यह प्राणसत्ता देता है। कृषक की कृषि मानो सुखद् हो रही है और जब यह आपो आ जाता है तो यह जीवन दे देता है और वह जीवन पा करके मुनिवरों! देखो, महान बन जाती है, अन्नाद के रूप में परिणत हो जाते हैं इसी प्रकार हमें विचारना है कि क्या हम मुनिवरों देखो, देवताओं की पूजा करें। पूजा का अभिप्राय यह है कि उसका सदुपयोग करें। मेरे प्यारे! देखो, यही तो आपो अन्तरिक्ष में रहता है। यही तो आपो मानो समुद्रों में प्रवेश करता है। यही आपो जब इसमें नाना प्रकार के धातु पिपाद का या औषधियों का मिश्रण हो जाता है, यही मुनिवरों! देखो, आपो बन करके इसी में शिशु प्रवेश हो करके माता के गर्भ में बिन्दु प्रवेश करके वहीं तो मुनिवरों! पुत्र के रूप में उत्पन्न हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, प्रभु का कैसा अमूल्य यह जगत् है। ब्रह्माण्ड की कल्पना करते ऋषि-मुनियों ने कहा है, उसी एक मानो जीवाणु में संसार का मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड निहित रहता है। परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड की कल्पना जब मैं करता हूँ, देव पूजा की चर्चाएं होती रहती हैं। हे आपो! तू तो मेरा जीवन है। हे आपो जब यजमान जब अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता है तो आपो को ले करके वह आचमन करता रहता है। क्यों करता रहता है? कि तू शीतल है, अमृत है, महान् है, विज्ञान है श्रोत्रीय है और तू ही आपो बन करके बिन्दु रूप कहलाता है तू ही बिन्दू रूप कहलाता है जिसको जान कर, मानव एक महानता की वेदी पर लाता है।

तो मेरे प्यारे! यह पितरजन, आचार्यजन, मातृजन इस प्रकार की ब्रह्मचारियों को शिक्षा देती रहती है और यह कहती रहती है कि तुम्हें मोक्ष को जाना है तुम्हें ब्रह्म की उपासना करनी हैं तुम्हें ब्रह्मचर्वोसि में प्रवेश होना है। मानो तुम्हें अपने को ब्रह्म में ही स्वीकार करना है। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का जब विचार मानव के समीप आता है तो ज्ञान और विज्ञान दोनों मानव के समीप आ जाते हैं। तो आओ मेरे प्यारे! विचार क्या, मैं यह दे रहा हूँ आचार्यजनों की भाषा में और मुनिवरों! देखो, माताओं की पवित्र भाषा में यह उपदेश दे रहा हूँ कि यदि माता यह चाहती है मेरे पुत्र में दुर्भावना न आए। कोई भी शब्द ऐसा नहीं है जो दूरिता भावना वाला बन जाए। क्योंकि जब उसको विचार पर विचार प्राप्त होते रहते हैं, विज्ञान में विज्ञान प्राप्त होता रहता है, तो अपने में मानो देखो, वह महानता की वेदी पर तत्पर हो करके महान बनता रहता है।

देवताओं का मुख

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विचार देने नही आया हूँ विचार केवल यह है क्या हमें विज्ञान के युग में

देवताओं की पूजा करनी है। देव याग करना है। मुनिवरों! देखो, अग्नि को देवताओं का मुख बनाना है। जब देवताओं का मुख बनाते हैं तो मेरे प्यारे! यजमान नाना प्रकार के साकल्यों की आहुति दे रहा है, और वह यज्ञमान कहता है हे पत्नि! आओ, हम मानो देखो, याग करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह याग कर रहे हैं, अग्नि को मुख बना करके अग्नि को देवताओं का मुख बना करके, उसमें साकल्य प्रदान कर रहे हैं और साकल्य दे करके कहते हैं, हे अग्नि तू महान् है, हे अग्नि! तू प्रकाश है हे अग्नि! तू विज्ञान का पुञ्ज है। हे अग्नेय! तू ही तो मेरे शब्द को देवता तक ले जाता है। तू ही तो देवपुरी बना देता है, मेरे शब्द को महान् बनाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार यजमान पत्नि से कहता है हे देवी! तुम अग्नि का ध्यान करो, हे देवी! तुम अग्नि का चयन करो। क्योंकि यही तो अग्नि तेरा जीवन है। यही अग्नि मानो देखो, देवताओं का मुख है, जो देवता, तेरे गर्भस्थल में शिशु की रक्षा करते हैं, शिशु की आभा में निहित रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह अपनी वाणी को पवित्र बनाते हुए, और वह अग्नाध्यान करते हुए और वह देवपुरी को प्राप्त होते हुए, उनका शब्द द्यौ तक चला जाता है।

मेरे प्यारे! इसी विचार को ले करके मुनिवरों देखो, हमारे यहाँ उद्दालक गोत्रीय ऋषियों ने और भी नाना ऋषियों ने बेटा! अपने पूर्वजों का दर्शन किया है। अपने पूर्वजों की महानता पर पहुंच गए हैं। मानो यही शब्द गति करता हुआ यही शब्द देवताओं की पुरी में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! देखो, यही तो आभा में नियुक्त करने वाला, एक नृत कहलाता है, जिसको ऋषि-मुनि परम्परागतों से बेटा! करते रहे हैं। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विचार न देता हुआ, मेरी प्यारी माता जब प्रातःकालीन देवपूजा करती है, और ब्रह्मचारियों को, बाल्यों को, एक पंक्ति में नृत कराती है और कहती है हे बाल्यो! आओ, तुम अग्नि का चयन करो। अग्नि देवताओं का मुख बन करके आ गया है। तुम्हारे इस शरीर में, अग्नि देवताओं का मुख है, और जो अग्नि के मुख में प्रदान करोगे उसे नाना देवता हवि के रूप में पान करेंगे। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं जब मेरी प्यारी माता लोरियों का पान कराती हुई, एक पंक्ति में विद्यमान करके उसे भरण कर देती है, तो वह बाल्य अज्ञान में क्यों आने लगा? उसे अज्ञान नहीं आएगा। वह वृद्धपन तक ज्ञान में रत्त रहेगा। उसे अज्ञान नहीं आ सकता।

मेरे प्यारे! देखो, मैं राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहा था मैं महाराजा अश्वपति की चर्चाएं कर रहा था। बहुत समय हुआ, मैंने बहुत पुरातन काल में भी यह वाक्य प्रगट किए हैं, कि महाराजा अश्वपति के यहाँ इस प्रकार की एक राष्ट्रीय घोषणा हुई थी, कि प्रत्येक गृह में देवपूजा होनी चाहिए। मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है विद्यालयों में क्या, गृहों में क्या, प्रत्येक गृह में बेटा! देखो, वेद मन्त्रों की ध्वनि आ रही है। जब राष्ट्र ध्वनित हो रहा है राजा अश्वपति मग्न हो रहा है। राजा भी याग कर रहा है और उनकी राज लक्ष्मी भी याग कर रही है। उनके पुत्र भी याग कर रहे हैं, पुत्रियां भी याग कर रही हैं। गृह में क्या, बेटा! राष्ट्र में सुगन्धि आ रही है। अपशब्द नही हैं।

मेरे पुत्रो! हमारी प्रतिभाषा में दो शब्द बड़े अशुद्ध पामर और धूर्त एक दूसरे पर आक्रमण करने के दो ही शब्द कहलाए गए हैं। एक धूर्त और ओक पामर हमारी संस्कृति का एक महान् प्रतीक माना गया है। आचार्य जब दण्डित करता है तो ब्रह्मचारी को धूर्त कहता है। और अपशब्दों में आता है तो उसे पामर कहता है। मेरे प्यारे! देखो, कोई शब्द संस्कृति में या वेद की प्रतिभा में, वेद की भाषा में कोई शब्द अपशब्दों की गणना में आता ही नहीं, जैसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने वर्णन किया है। और कल मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द

उच्चारण भी करेंगे। परन्तु आज का विचार हमारा यह है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए बेटा! विचार क्या? हमारे यहाँ आचार्य और मातृ महान् बनाने का प्रयास कर रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, अपनी प्रतिभा में मानव, अपने में मानवीयता का दर्शन कर रहा है। जिन दर्शनों को करने के पश्चात् मानव का जीवन एक महान् बन जाता है, पवित्र बन जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं क्या उद्घोष गा रहा था? वेद का आचार्य मेरे प्यारे! देखो, वेद का यज्ञमान, जब यज्ञ करता है तो अग्नि की धाराओं पर अपने पूर्वजों का दर्शन करता है। अपने पूर्वजों का महान दर्शन कर रहा है यहाँ मुनिवरों! वेद का मन्त्र एक विज्ञान के युग में भ्रमण कर रहा है, एक विज्ञान की धाराओं में रमण कर रहा है। मैंने बहुत पुरातनकाल में निर्णय देते हुए कहा कि वही वानप्रस्थ ले करके वही तो विद्यालय को पवित्र बनाते हैं। वही आचार देते हैं और वही विचार दे करके ब्रह्मवर्चोसि का पालन करते हैं।

प्राणायाम के प्रकार

बेटा! ब्रह्मचर्य की रक्षा कैसे होती है? यह बड़ा एक विशिष्ठ एक विचार हमारे समीप आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचर्य की रक्षा करने वाला श्वास पर गति कर रहा है। श्वास पर, मन का और प्राण दोनों का समन्वय कर रहा है। जब तक प्राण और मन, दोनों का विभाजन रहेगा तब तक मानव ब्रह्मवर्चोसि नहीं बन सकता। मेरे प्यारे! जब मन और प्राण दोनों का परस्पर समन्वय हो जाता है, मुनिवरों! देखो, वह एकता के सूत्र में प्रवेश हो करके, मुनिवरों! वह ब्रह्मवर्चोसि बनते हैं। तो पितरजन, आचार्यजन मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार ब्रह्मचारी को ब्रह्मचारी बनाने के लिए, प्राणायाम की शिक्षा देते हैं। एक प्राणायाम हमारे यहां खेचरी मुद्रा वाला है, हमारे यहाँ प्राणायाम भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। एक प्राणायाम हमारे यहाँ सूर्य की किरणों के साथ गति करने वाला है। एक प्राणायाम हमारे यहाँ चन्द्रमा के रूपों में गति करने वाला है। एक प्राणायाम पृथ्वी के ऊपर गति करने से प्राप्त होता है।

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है त्रेता के काल में भगवान राम को इन प्राणों के ऊपर बड़ा अधिपत्य था। जब वशिष्ठ और माता अरुणधति के चरणों में विद्यमान हो करके, राम मुनिवरों! देखो, जब अध्ययन करते थे, तो प्राणों का अध्ययन किया जाता था। वह प्राणों में पार्थिक आभा वाला जो प्राणायाम है उसे वह किया करते थे। इसीलिए पृथ्वी के परमाणुओं का उन्हें बोध था और जहाँ पृथ्वी मानो उष्ण है, अन्नाद उत्पन्न कराने वाली है, उस पृथ्वी में वह अन्नाद की उत्पत्ति के लिए प्रयास करते रहते थे। जब ये विचार हमारे समीप आता है मेरे प्यारे! देखो, वह पार्थिक आभावृत्तियाम प्राणायाम कहलाता है। एक प्राणायाम वह है, मुनिवरों! योगी बनता है और योगेश्वर बनने के लिए, हम प्राणायाम कर रहे हैं। शीतली प्राणायाम करके उसमें सूर्य प्राणायाम की पुट लगाते हैं। तो बेटा! देखो, योगी, अपने में योगाभ्यास कर रहा है, भयंकर वनों में और वह खेचरी मुद्रा से, प्राण से उन परमाणुओं को ले रहा है जिन परमाणुओं में मेरे प्यारे! क्षुधा को शान्त करने की प्रवृत्तियां होती है मेरे प्यारे! देखो, जिन परमाणुओं को, अपने उदर में प्रवेश करता है तो वह प्राणायाम कर रहा है और अपने में उन पोषक तत्त्वों को अपने में ग्रहण कर रहा है, उस अन्नाद को पान कर रहा है जिनको प्राणों की आवश्यकता है। मेरे प्यारे! देखो, आचार्यो ने यह कहा है हे ब्रह्मचारियों! यह प्राण ही तो निगलने वाला है। यह प्राण ही तो भोगता है। इसलिए प्राण को एकाग्र करके, मन को एकाग्र करके, क्योंकि मन में इस पृथ्वी का विज्ञान है, ज्ञान है और देखो, यह प्राण, उस परमाणु को गति दे रहा है। जब मन का और प्राण का दोनों का समन्वय होता है तो ऋतम्भरावी क्षेत्र में जा करके ये मौन हो जाता है। संसार को जान करके ये खेचरी मुद्रा में लग जाता हैं

और पोषक तत्त्वों को शीतली प्राणायाम के द्वारा बेटा! अपने में ग्रहण कर लेता है। उसे क्षुधा नहीं लग पाती। वह मानो अपनी आभा में रत्त हो जाता है। तो मुनिवरों! विचार यह है कि बिना प्राणायाम के प्राण और मन दोनों का समझौता बिना किए अथवा दोनों का समन्वय किए बिना ब्रह्मवर्चोसि का पालन नहीं किया जा सकता।

मेरे प्यारे! आचार्यजनों ने पुरातन काल में ब्रह्मचारियों को सबसे प्रथम प्राण क्रिया को मानो लाने के लिए ब्रह्मचारियों को एक ऊर्ध्वा में उपदेश दिया, और ये कहा आओ विराजो। मेरे प्यारे! एक पंक्ति लगी हुई है, आचार्यजन जो वानप्रस्थी जीवन को व्यतीत करने वाले हैं, वह मेरे प्यारे! विद्यालयों में शिक्षा दे रहे हैं। शारीरिक प्राणायाम और आत्मिक प्राणायाम बेटा! दोनों प्राणायाम करना है। अब इनमें बड़ा भेदन बन गया है। मेरे शारीरिक प्राणायाम वह कहलाता है मानो योग आचरणों में मानो शरीर का हम शुद्धीकरण करते हैं वह शारीरिक प्राणायाम है और आत्मिक प्राणायाम वह कहलाता है, एकान्त स्थलों में विद्यमान हो करके, खेचरी मुद्रा से प्राणायाम कर रहा है। और वह प्राणायाम करके वह अन्तरिक्ष से पोषक तत्त्वों को अपने में ग्रहण कर रहा है और प्राण को प्रणव बना करके उसमें मेरे पुत्रों! देखो, उसमें लय हो रहा है। उसमें ब्रह्माण्ड का दर्शन कर रहा है। ये मेरे पुत्रों! प्राण की बड़ी विचित्र विवेचना रही है। मैं बेटा! आज उस क्षेत्र में जाने के लिए नहीं आया हूँ। बेटा! कोई काल था, कोई समय था जब विद्यालयों में प्राणायाम के आचार्य बनने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। आधुनिक वर्तमान में इस सम्बन्ध में कोई विचार देना नहीं चाहता हूँ।

केवल विचार इसीलिए कि संकेत करना है। क्या आचार्यजन और राजा के यहाँ से घोषणा होती है, राजा कहता है विद्यालयों में मानो देखो, वह अन्नाद होना चाहिए, वह द्रव्य होना चाहिए जो द्रव्य दूषित न हो। मेरे प्यारे! ब्राह्मण को वह द्रव्य देना चाहिए, जो शिक्षा दिला रहा है, जिससे निष्पक्ष, किसी का भाग न हो। अन्नाद भी पवित्र होना चाहिए। ब्रह्मचरिष्यामि बन करके मेरे पुत्रों! देखो, अपनी आभा में नियुक्त हो जाते हैं। आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं आज इस प्राण की महत्वता क्या है? ब्रह्मचारियों को आचार्य शिक्षा देता है, क्या यह जो तुम्हारे भुज हैं, इन भुजों में पंचीकरण हो रहा है। एक-एक भुज में पंचीकरण हो रहा है। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी कहते हैं प्रभु ऐसा क्यों आपने कहा? क्या मानो देखो, हमारे एक भुज में पंचीकरण है। मेरे प्यारे! प्रवृत्तियों में पंचीकरण है। उसी पंचीकरण को ले करके, हमारे जीवन की प्रतिभा को जन्म दिया जाता है और पवित्रता की वेदी पर लाया जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ प्राणायाम कितने प्रकार के होते हैं। एक सूर्य प्राणायाम, एक चन्द्र प्राणायाम, एक संकल्प प्राणायाम, एक शीतली प्राणायाम, एक वृत्तिका प्राणायाम, एक मुनिवरों! देखो, ऊर्ध्वकेतु प्राणायाम कहा जाता है। शीतली और ऊर्ध्वकेतु प्राणायाम भी अपने में एक महत्वदायक होता है मेरे प्यारे! इन प्राणायाम को करने वाला मानो बेटा! अपने में महान बन जाता है और देवपूजा में वह रत्त हो जाता है। आओ, मेरे प्यारे! देखो, यह वायु कैसा हमारा पितर है बेटा! जब प्राण को हम वायुमण्डल में से, वायु में से, पोषक तत्त्वों को लेते हैं, हे वायु! तू हमारा देवता है। हे वायु! तू देवता बन करके हमारी रक्षा कर रहा है। तू प्राणसत्ता दे रहा है। उसी प्राणसत्ता को पाकर के हमारा जीवन, एक महान् बन रहा है। पवित्रतम बन रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, इस प्रकार जो अभ्यास करता है, अभ्यस्थ कराता है तो मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मचारी अपने में प्राणसत्ता को ग्रहण कर लेता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं एक विचार दे रहा हूँ, एक धारणा दे रहा हूँ। अपने किए हुए क्रियाकलापों की कुछ चर्चा कर रहा हूँ। महाराजा अश्वपति के यहाँ बेटा! देवपूजा का उद्घोष हो रहा है। यही उद्घोष भगवान राम के

राष्ट्र में भी हुआ कि प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। प्रत्येक गृह से वेद की ध्वनि आनी चाहिए। यही वेद की ध्वनि आ करके हमारी राष्ट्रीयता और मानवीयता पवित्र बनती है। आज मैं विचार देना विशेष नहीं चाहता हूँ। विचार तुम्हें यह दे रहा हूँ कि प्रत्येक मानव को महान बन करके, अपने विचारों को आचार्यो के चरणों में विद्यमान हो करके अपनी महानता का दर्शन करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, पंक्तियों में विद्यमान हो करके माता अपने में देवपूजा, ब्रह्मयागों की चर्चा करती रहे और मुनिवरों! देखो, अपने में, महान् बनाने के लिए पितर भी चर्चा करते रहें। आचार्यकुल में, वानप्रस्थ होने चाहिए जिससे उनके विचारों की तृप्त हुई जो तरंगें होती हैं वह ब्रह्मचारियों के हृदयों में प्रवेश कर जाएं। वह ज्ञान प्रवेश कर जाएं। मानो देखो, राजा को चाहिए कि शिक्षा पर ब्राह्मण और विद्यालयों में ब्रह्मचारियों को इस प्रकार के अन्नाद का प्रयत्न करना चाहिए जिससे मानो देखो, उसमें दूषित अन्न और द्रव्य न चला जाए। देखो, इस प्रकार का विचार, जब राजा के राष्ट्र में होता है तो राजा का राष्ट्र पवित्र बनता है। समाज में एकता का सूत्र आता है। और मानो देखो, आचार्यजन महान् बन करके राष्ट्र और समाज को कर्त्तव्यवाद की वेदी पर लाने का प्रयास करते हैं। परन्तु देखो, यौगिकवाद भी उसी में निहित होता है।

आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और वेद के वाक्यों को ले करके हम अपने जीवन को महान् बनाएं, पवित्र बनाएं। ओजस्वी बना करके और मुनिवरों! देखो, अपने में महान् बन जाएं। हमारे यहाँ पुरातन काल अतीत का जो काल है मानो वह पवित्रतम रहा है। उनमें एक विचारधारा मुनिवरों! देखो, राजा अश्वपति के यहाँ वैज्ञानिकजन अनुसंधानवेत्ता अपने में अनुसन्धान करते-करते, विज्ञान इतना ऊर्ध्वा में रहना चाहिए क्या मुनिवरों! देखो, कि अन्तरिक्ष में भ्रमण करना चाहिए और नाना लोक-लोकान्तरों की यात्रा होनी चाहिए जिससे समाज में ज्ञान और विज्ञान अपने में अनूठा बना रहे। ज्ञान और विज्ञान अनूठा बन करके जैसे माता अपने विचारों का विभाजन करके, बालक का निर्माण करती है, इसी प्रकार सूर्य की नाना प्रकार की किरणें मेरे प्यारे! देखो, नाना विभाजन करके एक दूसरे परमाणु और तरंगों को विभक्त करती रहती हैं, इसी प्रकार मेरे प्यारे! आचार्य के कुलों में अभ्यो बना रहता है। तो विचार-विनिमय क्या? आज का विचार यह कहता है क्या, हम मुनिवरों! देखो, हम पंक्ति लगा करके, एक पंक्ति में विद्यमान हो करके ही एक ही शिक्षा का विचार, एक सा ही क्रियाकलाप होना चाहिए तो राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है, महान बन जाता हैं समाज में एक-दूसरे में समावेशता के मानो देखो, तन्तुओं का जन्म हो जाता है। आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार हमारा यह कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देवपूजा करते हुए, आज हमें अपने जीवन को विचारशील (पुस्तक से) बना करके इस संसार सागर से पार हो जाएं। कल मेरे प्यारे महानन्द जी भी अपने कुछ विचार प्रकट करेंगे। वह अपनी विवेचना में बड़े उत्सुक हो रहे हैं। इनका बड़ा एक विचार बन रहा है कि मैं अपने विचार दूं। आज का विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस सागर से पार हो जाएं। शेष विचार कल प्रकट करेंगे। कल मेरे प्यारे महानन्द जी भी विचार देंगे।

५ महानन्द जी द्वारा राष्ट्रीय समाधान 14 03 1986

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय है। जो भी मानव उसका वरण कर लेता है, अथवा उसे वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! उसे तू अपना वरणीय बना, अपना वरणीय बना करके तू उसकी उपासना कर, क्योंकि वह तेरा उपास्य देव है, सृष्टि का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। तो आज हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का, अथवा उसके गुणों का गुणवादन करना प्रारम्भ करें और जो भी मानव उसका गुणवादन करता है अथवा उसे अपने को, उसके गुणों को अपने में धारण करता है जैसे परमपिता परमात्मा निरभिमानी है इसीलिए मानव को भी निरभिमानी रहना चाहिए।

परमपिता परमात्मा व्यापक है मानव को भी अपने विचारों को व्यापक बनाना चाहिए, परमपिता परमात्मा विज्ञानवेत्ता है, अणु और परमाणु में निहित रहने वाले हैं, इसीलिए मानव को विज्ञानवेत्ता होना चाहिए। परमपिता परमात्मा आत्म स्वरूप है इसीलिए मानव को भी आत्मवेत्ता बनना चाहिए। मानो वे सर्वत्र राष्ट्र के स्वामी हैं वह राष्ट्रवेत्ता है, यह ब्रह्माण्ड रूपी राष्ट्र है उसको धारण कर रहा है अथवा इसमें जो गति दे रहा है वे परमपिता परमात्मा है इसीलिए मानव को इस ब्रह्माण्ड की प्रतिभा को जानना चाहिए। मैंने तुम्हें कई कालों में, नाना प्रकार की वार्त्ताएं प्रगट करते हुए कहा था, कि विष्णु ध्रुवा है, इसीलिए माता का नामोकरण भी विष्णु है। क्योंकि एक ही वाक् मैंने बहुत पुरातन काल में निर्णय दिया, विष्णु के सम्बन्ध में, कि विष्णु पालन करने वाला है, इसीलिए मानव को अपने जीवन की पालना करनी चाहिए। परमपिता परमात्मा ब्रह्माण्ड को, अपने में धारण कर रहा है। और वह इस ब्रह्माण्ड का सूत्र बना हुआ है, इसीलिए मुनिवरों! देखो, मानव के शरीर में यह जो आत्मा रहती है वह सूक्ष्म से ब्रह्माण्ड रूपी शरीर को अपने में धारण कर रहा है। तो इसीलिए धारयामि बनना चाहिए। हमारे यहाँ तर्पण की बड़ी विशेषताएं आती हैं, मानव को तर्पयामि बनना चाहिए।

तर्पयामि का अभिप्राय यह है तर्पण करना अपनी विचारधाराओं को व्यापक बनाना है। परन्तु आज मैं इन वाक्यों में जाना नहीं चाहता हूँ।

विचार केवल यह कि माता का नाम विष्णु है जो पालन करती है परमात्मा का नाम विष्णु है जो पालन करता है। सूर्य का नाम विष्णु है जो ऊर्ज्वा पालन कर रहा है। हमारे यहाँ विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, परन्तु आज मैं उन शब्दों की विवेचना नहीं करने जा रहा हूँ। बेटा! पुरातन काल हुआ जब बेटा! नाना ऋषि-मुनियों की चर्चाएं की और उनका जो क्रियाकलाप होता रहा है, उस क्रियाकलापों की भी चर्चाएं की हैं। आज तुम्हें बेटा! उस क्षेत्र में ले जाना नहीं चाहता हूँ। मेरे पुत्र महानन्द जी मुझसे राष्ट्रवाद की चर्चाएं कर रहे थे, धर्म और मानव की चर्चा कर रहे थे, मेरी पुत्रियों की चर्चाएं कर रहे थे और महाराज अश्वपति के राष्ट्र का उदाहरण दे रहे थे। कहीं राम और अयोध्या के काल की चर्चाएं कर रहे थे। परन्तु आज उन्हें पुनः से समय प्रदान किया जा रहा है। वह अपने दो शब्द पुनः से उद्गीत गाने के लिए तत्पर हैं।

पूज्य महानन्द जी ओ३म् या सर्वं भद्राणि विशिष्ठा रूद्राः वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल अथवा भद्र समाज! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। क्योंकि

उनका एक-एक जो शब्द है वह गागर और सागर की आभा में निहित रहता है। परन्तु आज का हमारा वाक् है कि मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को नाना वार्त्ताएं प्रगट की है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव शिक्षा और दीक्षा की चर्चा करते रहते हैं, मानो शिक्षा कैसी हो? और दीक्षा कैसी हो, दोनों प्रकार की चर्चाएं करते रहते हैं आचार्य कैसा हो और ब्रह्मचारी कैसा हो माताएं कैसी हों और पितरजन कैसे हों। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यह बड़ी विचित्र वर्ताएं प्रगट करते रहते हैं क्योंकि बहुत समय की स्मृतियां स्मरण शक्ति है नाना स्मृतियां जागरूक हो जाती हैं और उन स्मृतियों का अभिप्राय, उन स्मरण शक्ति से एक ब्रह्माण्ड की आभा की विस्तृति उत्पन्न हो जाती हैं।

अज्ञान में रूढ़ियां

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से, नाना प्रकार के रूढ़िवादों की चर्चाएं की हैं और नाना प्रकार की रूढ़ि महाभारत काल के पश्चात् इन रूढ़ियों का जन्म हुआ है और मुझे यह अनुभव रहा है कि संसार में जिस भी काल में रूढ़ियों का जन्म हुआ है उसके मूल में, उसके गर्भ में अज्ञान है क्योंकि रूढ़ियों का जन्म ही जब होता है जब अज्ञान की उत्पत्ति होती है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कल बड़ा विचित्र वाक् प्रगट कर रहे थे, वह कह रहे थे कि परमात्मा निरभिमानी है इसलिए मानव को भी निरभिमानी बनना चाहिए। कितना विचित्र वाक् है परन्तु आधुनिककाल में, वर्तमान के काल में, जिन्हें हम महापुरुष कहते हैं अथवा जिन्हें हम सन्यस्थ कहते हैं, वे कहते हैं अहं ब्रह्मस्ति, हम तो ब्रह्म हैं। परन्तु मैं जब यह कहता हूँ कि तुम्हारे पिछले भाग में क्या है, तो उसका उत्तर नहीं मिलता और जब उत्तर नहीं मिलता तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि तुम ब्रह्म कैसे हो। जब तुम मानो अपने पिछले भाग को नहीं जानते तो तुम ब्रह्म कैसे बन गए?।

अशुद्ध आहार से ह्रास

परन्तु यह भी वाक् नहीं, मैं पुरातनकाल की वार्त्ताओं में ले जाना चाहता हूँ। आधुनिक काल और वर्तमान काल, दोनों की जब मैं सन्तुलना करने लगता हूँ, तो मेरे हृदय में एक दाह की उत्पत्ति हो जाती है। जब मैं विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, परम्परा के विद्यालयों में जब प्रवेश किया, तो पंक्तियों में ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मचारी विद्यमान हैं अहं ब्रह्मा वरणस्वति सुप्रजाः वह अपने में शुभकामना की कल्पना कर रहे हैं, अपने में वह महानता का दर्शन कर रहे हैं और लोक लोकान्तरों की उड़ानें उड़ रहे हैं। परन्तु जब मैं आधुनिक काल के विद्यालयों में प्रवेश होता हूँ तो विद्यालयों में ब्रह्मचर्य का ह्रास हो रहा है। आधुनिक काल के विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ तो विद्यालयों में ब्रह्मचर्य का ह्रास क्यों हो रहा है? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे प्रगट कराया कि विद्यालयों में वानप्रस्थी शिक्षा देने वाले नहीं रहे, क्योंकि युवा शिक्षा दे रहा है। उनके हृदय की जो तरंगें हैं, वह ब्रह्मचारियो के हृदयों में प्रवेश हो रही है। परन्तु उसके मूल में उनका आहार अशुद्ध बनने से, उनके व्यवहार में अशुद्ध तरंगें आने से मानो देखो, ब्रह्मचर्यव्रत का ह्रास हो गया। आज मैं कोई विशेष चर्चा नहीं करता। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अभी वानप्रस्थ क्यों नहीं रहा है? इसके मूल में स्वार्थवाद है और वह स्वार्थवाद केवल राष्ट्रवाद के लिए है। वह स्वार्थवाद राष्ट्रवाद में निहित हैं क्योंकि जब राजा के राष्ट्र में स्वाथर्वाद आ जाता है, ब्रह्म समाज में स्वार्थवाद आ जाता है, तो सबसे प्रथम विद्या का ह्रास हो जाता है। ये बहुत पुरातन परम्परागतों की चर्चाएं हैं, मैं आज उन क्षेत्रों में जाना चाहता हूँ। जब मैं माताओं के समीप जाता हूँ, तो वहां माता अश्वपति के राष्ट्र में, या भगवान राम के काल में या जब हम अपनी माताओं का स्मरण करने लगते हैं तो आधुनिक काल की माताएं उससे विपरीत प्रतीत होती हैं। मानो देखो, बाल्यों को अशुद्ध शब्दों का प्रतिपादन करा रही है। यहां एक पङ्क्ति में विद्यमान हो करके पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि कागभुषुण्ड जी की माता एक पंक्ति में विद्यमान हो करके वेद का उद्घोष कर

रही है। परन्तु मेरी पुत्रियों की, माताओं की, इसमें धृष्टता नहीं है, इसके मूल में जो धृष्टता है वह मानव समाज के अज्ञान की है क्योंकि मानव समाज में महाभारत काल के पश्चात वाममार्ग समाज आया, जैन काल का भी कुछ राष्ट्र रहा है, परन्तु उन्होंने मेरी पुत्रियों का ह्रास करना प्रारम्भ किया।

रूढ़िवाद से भ्रष्टता

मैंने पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया कि जो भी यहाँ रूढ़िवादी बना, उन्होंने याग और माताओं के ऊपर आक्रमण किया। याग को उन्होंने भ्रष्ट किया है और माताओं के सतीत्व को हनन किया है। दो ही कारण रहे हैं इस संसार में, महाभारत काल के पश्चात्, चाहे वह पारसी की परम्परा में आए हों, चाहे वह ईसा के मानने वाले हों, चाहे वह मुहम्मद के मानने वाले हों। परन्तु मैंने अभी-अभी वर्णन किया कि सृष्टि के प्रारम्भ में मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज से बहुत पुरातन काल हुआ जब एक वाक् कहा था कि सृष्टि में मानव का जन्म कैसे हुआ।

सृष्टि सृजन का वैदिक स्वरूप

जब सृष्टि का प्रारम्भ हुआ, परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया तो मानव समाज की उत्पत्ति कैसे हुई? मुनिवरों! देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया, क्या जिस समय यह ब्रह्मा की रात्रि और दिवस होता है, मानो प्रलय-काल को ब्रह्मा की रात्रि कहते हैं और सृष्टि के एक कल्प को मेरे पूज्यपाद गुरुओं ने वर्णन किया है कि उसे ब्रह्मा का दिवस कहते हैं दोनों दिवस और रात्रि इस को एक अहोरात्र कहते हैं। मानो देखो, यह सृष्टि के प्रारम्भ में पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया जब प्रलयकाल होती है तो कुछ आत्मा ऐसी होती है जो मोक्ष के निकट होती है, उनका मोक्ष नहीं हुआ, परन्तु कुछ आत्मा ऐसी होती हैं जो मोक्षवत् होती हैं। उनमें पुत्रियां, उनमें देवियां भी होती हैं, और पुरुष भी होते हैं जिन्होंने देवियों के शरीरों को धारण करके योगाभ्यास किया है, वह भी मोक्ष के निकट गई हैं और मानव भी मोक्ष के निकट गया है। मानव शरीर में, परन्तु जो मोक्ष के निकट होते हैं वह प्रकृति के प्रत्येक क्रियाकलाप को जानने वाले होते है। प्रकृति के एक-एक परमाणु को जो गति कर रहा है जैसे अग्नि का परमाणु है, वह तेजोमयी है और जल का परमाणु अपने में वृत्तियाँ कहलाता है और पृथ्वी का परमाणु गुरुत्व है और इन परमाणुओं को गति देने वाला वायु है और इनको स्थिर करने वाला अन्तरिक्ष है, जिसमें यह गति कर रहा है।

तो परिणाम यह होता है कि पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया क्या जब सृष्टि की रचना होती है और यह मानो शीतल होना प्रारम्भ होती है तो प्राण सत्ता से यह स्थावर सृष्टि का जन्म होता है। उसके पश्चात् मानव समाज का जन्म हो जाता है और योगाभ्यास के कारण मानो वह युवावस्था में अपने परमाणुओं को, अपनी यौगिक क्रियाओं से अपने शरीरों का निर्माण हो जाता है और वह जब निर्माण होता है तो युवापन में होता है। परन्तु देखो, इसी प्रकार वनस्पति के सहयोग से पृथ्वी की आभा से सबका मिश्रण हो करके और यह नाना प्रकार की और योनियां का जन्म हो जाता है। परन्तु देखो, मानव समाज का जो जन्म हुआ है वह योगाभ्यास व यौगिक परमाणुओं के द्वारा हुआ है, मानो देखो, युवा अवस्था में वह युवा हुए हैं। मानो देखो, वह आगे चल करके जो सृष्टि का कर्म है, मानो सहयोग है और देखो, बिन्दु की निर्धारितता उसी के आधार पर मानव समाज का, सृष्टि का आरम्भ हो जाता है। जब यह प्रारम्भ हो जाता है तो ऐसा माना जाता है परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक मान्यता तो यह प्रगट कराई।

सृष्टि सृजन की आधुनिकताएं

अब आधुनिक वर्तमान की मान्यताएं स्वीकार की जाएं, यहूदियों के काल में देखो, ईसा के काल में कुछ बुद्धिमानों का एक समूह विद्यमान हुआ। उन्होंने अन्न से इस मानव को अपनी परस्त वृत्तिता से इनको जानने की इच्छा प्रगट की। तो उन्होंने यह विचारा कि बाबा आदम हुए और बाबा आदम को मानो देखो, उसको बेहूत किया। उसको मानो देखो, एक आवेश में लाया गया और उसकी पंसली से मेरी पुत्री के जन्म को स्वीकार करते हैं। परन्तु यह तो वाक् यहूदी काल का रहा। इसी यहूदियों के मान्यताओं को स्वीकार करने वाले, ईसा के मानने वाले रहे और इसी वाक् को मुहम्मद के मानने वाले रहे। परन्तु देखो, इन वाक्यों को ले करके, यह समाज कुछ का कुछ बन गया। परन्तु देखो, एक महानता तो यह है कि एक पसली से मेरी पुत्री की रचना स्वीकार की जा रही है और एक महानता वह है कि योगीजनों में, जो मोक्ष के निकट है जिन्हें सृष्टि कर्म की परमात्मा से प्रेरणा प्राप्त हुई, उसी से वह युवा बन करके सृष्टि का कर्म प्रारम्भ हुआ और मानो देखो, उसमें जो विज्ञान का जो तत्त्वावधान है, मानो वैज्ञानिक वाक्यों से यह वाक् यथार्थ माना जाता है कि कि युवा युवतियों का जन्म हुआ। यह वाक् तो वैज्ञानिक सिद्ध है। परन्तु देखो, एक पसली से या एक अस्थि से मेरी पुत्री का जो जन्म स्वीकार करते हैं, उससे अज्ञान का प्रादुर्भाव होता है, उसमें अज्ञान प्रतीत होता है। जब हम देखो, वैज्ञानिक रूपों में प्रवेश करते हैं तो उसमें एक-एक अज्ञान ऐसा दृष्टिपात आता है जिसमें हम मानो मौन हो जाते है।

विचार-विनिमय क्या? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन किया और आधुनिक काल के रूढ़िवाद की चर्चाएं कीं, परन्तु देखो, इसी आभा को ले करके वाममार्ग समाज के मानो दर्शनों में यह विचार आया और यह विचार लिया जैसे एक चने का दाना होता है परन्तु वह दो विभागों में रहता है और उसमें एक अंकुर होता है उत्पन्न शक्ति वाला, जीवन शक्ति वाला तो ऐसा मानो देखो,उन्होंने देखो, वाममार्ग में उनकी विद्वानों से यह उपनिषदों में चर्चा चली। परन्तु यह वाक् मेरे विचारों में नहीं आया। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कहा क्या, ऐसा स्वीकार करते हैं कि देवियों का और मानव का जन्म ऐसे हुआ, जैसे चने का दाना होता है अथवा एक अंकुर होता है। तो यह वाक् विचारणीय दृष्टि से, दर्शनों की मीमांसा रही है। यह वाक् मेरे विचारों में नहीं आया। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मंथन भी कराया, परन्तु यह वाक् हमारी दृष्टि में अमान्य पहुंच गया, अमान्य हो गया। क्योंकि देखो, युवा-युवती अंकुर जो हैं वह दोनों के मध्य में उसके पश्चात् भी रहता है। केवल देखो, अन्न का उदाहरण देने से, अन्न में जो वह अंकुर शक्ति होती है, वह जीवन शक्ति होती है ये स्वीकार तो किया जा सकता है, परन्तु देखो, उत्पत्ति काल ऐसा स्वीकार नहीं किया जा सकता। मानो देखो, हम अन्नाद् को ले करके, अन्नाद् को पान करते हैं उसमें जीवन शक्ति है, उसी जीवन शक्ति के आधार पर, हम अपने जीवन को ऊँचा बनाते हैं अथवा महान् बनाते हैं।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने कई काल में वर्णन कराया परन्तु यह वाक् यहूदियों की मान्यता रही है और यहूदियों की मान्यताएं, मानो देखो, ईसाकाल में ईसा के मानने वालों में गई, वही विचार मुहम्मद वादियों के विचारों में गया। परन्तु देखो, यह वाक् ऐसा प्रतीत होता है, जैसा एक मानो देखो, अज्ञान की सूक्ष्मता से इन वाक्यों की रचना हुई हो। परन्तु आगे चल करके इन वाममार्ग में ही इन वाक्यों को अपनाने का प्रयास किया। जैन काल आया, जैन काल भी महाभारत काल के पश्चात् स्वीकार करते है। परन्तु देखो, जैन काल की यह मानता रही है कि कृष्ण और देखो, बलदेव जी यह दोनों जैनी कहे जाते हैं। परन्तु देखो, यह स्वीकार और उनकी मान्यताएं! क्या कृष्ण जी नरक में हैं और देखो, बलराम वह स्वर्ग में हैं वहाँ स्वीकार करते हैं। परन्तु

देखो, यह विचारा नहीं जाता, ये मान्यताएं किस अज्ञानता से इन शब्दों की रचना हुई है। वह कहते हैं राम नरक में है और लक्ष्मण स्वर्ग में है। जब यह मान्यताएं इनके जीवन की मुझे प्रतीत होती हैं तो इन भोले प्राणियों को यह प्रतीत नहीं कि नरक और स्वर्ग कहते किसे हैं? परन्तु यही नहीं माना गया है, मेरे विचार में यह आता है कि नरक कहते हैं जिस मानव का जीवन अपंग हो, जिस मानव के जीवन में अज्ञानता हो और जिस मानव के जीवन में अकर्त्तव्यवाद हो, वह नरक में चला जाता है। परन्तु देखो, जिस मानव के जीवन में केवल देखो, कर्मठता हो, महानता हो, सुदृढ़ता औत दूसरों का सहयोग करने वाले हों और मान्यताओं में अपना विचार सामूहिक देने वाले उस मानव का जीवन स्वर्ग में रहता है। वह स्वर्गगामी बना करते हैं, परन्तु जो मानव इस अपंगवाद को त्याग करके, इस माया के, इस प्रकृतिवाद को परमाणुवाद को जानता-जानता और वह एकोकी चरण में चला जाता है और प्रकृति के मण्डल को त्याग करके, वह मण्डल मुक्त हो करके वह परमात्मा के राष्ट्र में चला जाता है वह उसको आत्मवेत्ता कहते हैं। यह आत्मवेत्ता है, आत्मा में ही लीन रहने वाला है, वह मोक्ष की पगडंडी को ग्रहण कर लेता है।

परन्तु देखो, मैंने यह वाक् इसलिए कहा क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते है। परन्तु देखो, रही यह मान्यताएं, मेरे विचारों में प्रदीप्त नहीं होती, भगवान् कृष्ण का जीवन संसार में कर्मठता में रहा है और यह मूर्ख समाज उसको यह कहता है वह नरक में विद्यमान है। परन्तु यह पामरों की चर्चा नहीं तो और किसकी है, परन्तु देखो, राम जैसे सखा को जिन्होंने मानो देखो, अपने जीवन में महानता का क्रियाकलाप किया है, उसको वह नरक में कहते हैं। हनुमान जी को कहते हैं कि एक लोक में गया, तो सातवें लोक में है और मानो देखो, स्वर्ग में है। सातों लोक मानों उसके गुरुत्व से सातों लोक उसके नीचे दबे हों।

अज्ञानता में साहित्य

ऐसे-ऐसे विचार जब स्मरण आते हैं, अरे भोले प्राणियों! तुम वहीं तक सीमित रहो, जहाँ तक महात्मा महावीर ने तप किया है और तप करके, उन्होंने वेद का अध्ययन तो कराया नहीं, वेद की पोथी का अध्ययन नहीं कराया, उन्होंने अपने मनमाने विचारों को ले करके मानो तुम्हें अपंग बना दिया, तुम्हें याग से दूरी कर दिया। महात्मा बुद्ध ने वही किया, तपस्या का जहाँ तक प्रसंग है वह यथार्थ है, तपस्या उनकी बड़ी विचित्र रही है, परन्तु देखो, जहाँ उन्होंने कहा, अहिंसा परमोधर्मः अरे वेद के अहिंसा परमोधर्मः को न जान करके, इस संसार को, भारत भूमि को जहाँ उन्होंने जन्म लिया उसको मानो देखो, मुहम्मद के मानने वाले, ईसा के मानने वालों के अधीन बना दिया। मानो देखो, ये सब महात्मा बुद्ध की रचना थी। विचार आता है जो वेद के अहिंसा परमोधर्मः को स्वीकार कर लेते, वेद की पोथी का निर्माण करना वेद की पोथी से अपने समाज का निर्माण करते, तो यह समाज पवित्र बन जाता। मैं इन अज्ञानता की चर्चाएं नहीं करना चाहता हूँ, केवल यह कि वेद को मानव ने याग और वेद के ऊपर आक्रमण किया, मेरी पुत्रियों के ऊपर आक्रमण किया, नाना रूढ़िवादी आए, तो माता को नरक का द्वार उच्चारण किया और कैसे-कैसे उन्होंने उदधृत विचार दिये हैं।

साहित्य का दूषित रूप

ऐसे-ऐसे विचार कि महाभारत काल को मानो देखो, उस पोथी को दूषित कर दिया और कैसा दूषित किया। माता कुन्ती का जीवन कितना विचित्र माना जाता है, एक स्थान में तो माता कुन्ती और तारा इनको कन्या के तुल्य माना जाता है, मन्दोदरी भी उसी में आती है और देखो, जब उनके जीवन की गाथा गाते हैं वह कैसी अभद्र है क्या मानो वह कहते हैं कि देवताजन आते थे, उनसे आलिंगन करके, वह संतान देती रहती थी।

परन्तु देखो, यह स्वीकार नहीं किया जा सकता कि जो पवन देवता है जो संसार में प्राण बन करके रहता है, जो इन्द्र मानो विद्युत बन करके रहता है, जो धर्म मानव की प्रत्येक इन्द्रियों का सजातीय विचार है, सजातीय बना दिया इन्द्रियों को, परन्तु वह आ करके, आह्वान मन्त्र उच्चारण करती, वह धर्म आता आलिंगन करता, उससे धर्मराज की उत्पत्ति और देखो, इन्द्र से अर्जुन की उत्पत्ति और अश्वनी कुमारों से मानो देखो, नकुल और सहदेव की उत्पत्ति, पवन से भीम की उत्पत्ति मानी जाती है। वाह रे, कैसा जगत् बन गया, कैसा साहित्य दूषित किया है? और यह उदाहरण दिया कि पांडु को पांडुरोग, और रुग्ण के कारण मानो संतान के सुयोग्य नहीं था। परन्तु यह नहीं माना जा सकता। यह मुझे इन मान्यताओं को जब मैंने इस संसार को पुरातन काल में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे एक समय बहुत पुरातन काल हुआ, जब उस काल का भ्रमण किया, मानो देखो, पांडु रोग नहीं वह मृत्यु को प्राप्त हो गए, परन्तु पांच संतानों को जन्म दे गए थे। पांच संतानों को जन्म दिया, उसके पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हुए, परन्तु देखो, ऐसा विचार आता रहता है हमारे यहाँ पुरातन काल में और भी नाना इस प्रकार की मान्यताएं है। इन मान्यताओं का मैं खण्डन किया करता हूँ। खण्डन ही नहीं उनका मण्डन भी किया जाता है। माता कुन्ती के गर्भ में जब अर्जुन आ गए, तो इन्द्र की तपस्या कर रही है, इन्द्र देवता की विद्युत की तपस्या कर रही है, इन्द्र वायु है। हे देवताजनों! मेरे गर्भ से इन्द्र के पराक्रमों वाले पुत्र का जन्म हो। जब भीम गर्भ में हैं जैसे पवन कौशल हैं वह किसी से भी रुष्ट नहीं कर पाती, यह प्राण मानों एक सखा है, निस्वार्थ है। इस प्रकार वायु की उपासना, करना पवन की उपासना करना, उसके पवन पुत्र का जन्म हुआ। मानो यह तपस्या का प्रतिशोध है। पाण्डु जब देवी के समीप, वह भी तपस्वी थे, जहाँ बिन्दु प्रवेश हुआ देवता रक्षा करने पहुंचे, माता का विचार उसी प्रकार का बन गया, सम्भवं मानो देखो वह ब्रह्मः धर्मा ब्रह्माः जब वह धर्मराज माता के गर्भस्थल में बिन्दु रूप में शिशु आए, तो माता धर्म का निर्माण करने लगी, धर्म की चर्चा करने लगी। माता के नेत्रों में धर्म समाने लगा, तो उन्हीं तरंगों से बालक का जन्म हुआ। तो मानो देखो, यह मण्डन का एक विषय है। अश्वनी कुमार उनकी तपस्या माता कर रही है, कुन्ती माद्री से तप करा रही है, दोनों अश्वनी कुमार जो विशाल वैद्यराज माने जाते हैं उनके गुणों का आयुर्वेद में से लेती रहती, अध्ययन कराती रहती और माता माद्री को शिक्षा दे करके मानो दोनों राजकुमारों का जन्म हुआ। तो विचार तो मानो ये तो इसका मण्डन है और यह खण्डन है कि मन्त्र से देवता आते, आलिंगन करके चले जाते, यह मेरे विचार में नहीं आ पा रहा। जबकि विद्या का जो एक अंकुर है, वह यह कह रहा है कि जिस विद्या की तुम उपासना करोगे, ये विद्याएं तुम्हारे समीप आ जायेगी। परन्तु रहा यह वाक् कि हम यह स्वीकार करें कि अपने में किस प्रकार अपने जीवन को महान् बनाएं इसके ऊपर देखो, प्रत्येक मेरी माता का जीवन है, क्योंकि माताओं का आयुर्वेद का अध्ययन करना चाहिए। महाभारत काल के पश्चात् मेरी प्यारी माता, पुत्रियों का ह्रास किया गया और इनको निकृष्टता से दृष्टिपात किया। उसके मूल में कौन है एक वाममार्ग है, उसके मूल में नाना प्रकार के धर्म के ऊपर रूढियां कही जाती हैं। मुहम्मद के मानने वालों ने देवियों का तिरस्कार किया और देखो, यही विचार यहूदियों में पहुंचा, यही विचार ईसा मसीह के विचारों में चला गया। परन्तु देखो, मेरी पुत्रियों का ह्रास और याग के ऊपर आक्रमण हुआ।

सबसे प्रथम महाभारत के काल से पूर्व कोई हिंसा प्रवृत्ति नहीं थी राष्ट्र में भी। जब महाभारत काल के पश्चात् वाम मार्ग ने विद्या को न जान करके, चक्षुम्मे शुन्धामि प्राणम्मे शुन्धामि और देखो, यह प्रत्येक इन्द्रियों की शुन्धामि के वाक्यों को ले करके वह उन्होंने देखो, यागों में मांस की आहुति देना प्रारम्भ कर दिया। यहाँ

याग का ह्रास हुआ, ह्रास होने के पश्चात् अश्वमेध याग में अश्व की घोड़े की आहुति देना अजामेध में बकरी के मांस की आहुति देना, कन्या याग में कन्या के अंगों की आहुति देना। परन्तु देखो, जब इस प्रकार की अंगम् प्रवृत्ति बन गई, तो मानो देखो, ऐसा प्रतीत हुआ है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया कि इसी वाक् को ले करके बुद्ध ने अपने मार्ग को दूरी पर दूरी जाना, परन्तु उन्होंने अध्ययन नहीं किया। देखो, महावीर ने भी अपने मार्ग को द्वितीय अपनाया और वाम मार्ग ने उनकी अवहेलना नहीं की। उसका परिणाम यागों का भ्रष्ट होना ही मांसों की आहुति देना, यहाँ तक चला आया। इस काल में जो वर्तमान का काल पृथ्वी मंडल का है इसमें से सौ में से पिच्यानवें प्राणी हैं जो देखो, मांस का भक्षण करने वाले है। उसी का परिणाम है परन्तु देखो, महाभारत के काल में ये प्रवृत्तियां उत्पन्न हो गई थी। परन्तु महाभारत के काल में पचानवें प्राणी ऐसे थे जो अहिंसा परमोधर्मः का पालन और देखो, पांच प्राणी ऐसे थे जो मांस का भक्षण करते थे। राम के काल में प्रत्येक गृह में यागों की घोषणा थी। राम के काल में देखो, हिंसक प्राणी नहीं था। रावण के काल में लंकापुरी में, जो रावण का काल था उसमें हिंसा प्रवृत्ति नहीं थी, उसमें हिंसक प्राणी नहीं था। आधुनिक काल के प्राणियों में, मांस के भक्षण करने वालों ने राम के काल में, मीन देखो, मछलियों का वर्णन किया गया है, और देखो, रावण के भ्राता कुम्भकरण को जब वह छः माह को निद्रा ले करके आते थे तो वहाँ देखो, प्राणियों का, पक्षियों का, इनके श्वास के साथ चले जाए ऐसा वर्णन है। परन्तु मेरे विचार में नहीं आता।

महर्षि भारद्वाज ऋषि के आश्रम में गमन

मुझे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय भारद्वाज मुनि के आश्रम में आज्ञा दी थी कि जाओ पुत्र! तुम भारद्वाज मुनि के आश्रम में चले जाओ। मानो जब मैं भारद्वाज मुनि के आश्रम में चले जाओ। मानो जब मैं भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुंच गया तो भारद्वाज मुनि के यहाँ देखो, वहाँ महाराजा कुम्भकरण जिनका नाम सुनेत ब्रह्मचारी था वह अध्ययन कर रहे हैं और उन्होंने बारह-बारह वर्ष के इस प्रकार के अनुष्ठान किए, जो गऊओं के दुग्ध का आहार करते थे, और दुग्ध का आहार करके वह गायत्री छन्दों में अपने को ले गए और वह छः माह तक देखो, भारद्वाज के विद्यालय में वह विज्ञान की शिक्षा लेते रहते थे और छः-छः माह तक वह अज्ञातवास हो करके हिमालय की कन्दराओं में चले जाते थे, और छः-छः माह आ करके लंका में विद्यालयों में, विश्वविद्यालयों में विज्ञान की शिक्षा देते थे ब्रह्मचारियों को। परन्तु जिसका जीवन इस प्रकार का आदर्शवादी हो, इस समाज में अपने स्वार्थपरता से अपने पूर्वजों के जीवन को भ्रष्ट कर दिया। परन्तु मेरे विचार में यह आता है कि यह समाज कहाँ जायेगा, मैं यह चिन्तित हो जाता हूँ। किसी-किसी काल में कि यह समाज कहाँ जा करके इसकी सीमा बन सकती है।

रावण कालीन विज्ञान

परन्तु देखो, यहाँ राजा रावण का जीवन कितना प्रिय था। उनके जीवन में दर्शनों का अध्ययन करना, मानवता की मानवीयता उनके समीप रहती थी। परन्तु विज्ञान कितना विशल था। आधुनिक काल का वैज्ञानिक तो चन्द्रमा की यात्रा कर पाया है और रावण के काल में पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया, मुझे दृष्टिपात भी है कि एक यान इनके आश्रम से उड़ान उड़ करके और बहतर लोकों में भ्रमण करके वह यान लंका में पुनः आ रहा है। इस प्रकार का विज्ञान आधुनिक काल का विज्ञान अब तक ईकाई में नहीं पहुंच पाया, ईकाई में भी नहीं गया है परन्तु आधुनिक काल का विज्ञान मृत्यु यन्त्रों का निर्माण करता चला जा रहा है। आज के विज्ञान में मानव के जीवन का कोई यन्त्र का निर्माण अब तक नहीं हो पाया है। परन्तु देखो, मैंने बहुत वाक् पुरातन

काल में भी प्रकट किए हैं।

आधुनिक काल में स्वार्थवाद

परन्तु आधुनिक काल का जो विज्ञान है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव आज मैं वैज्ञानिकों की चर्चा करूं तो बड़ा विचित्र असुक्तियां होगी और मैं उन वाक्यों को स्वीकार करता हूँ। इन वाक्यों के उचारण करने में पुरातन काल का विज्ञान कहता है कि मानव का निर्भयता रहनी चाहिए, मानव को अवृत्त रहना चाहिए। आधुनिक काल का विज्ञान यह कहता है कि मानव को भयभीत बना करके, उन्हें त्रास दे करके और मानव समाज अपने में, अरे, कैसा निकृष्ट बन गया है। मानव मानव के भयभीत हो रहा है। इसके मूल में क्या है? इसके मूल में विज्ञान है, इसके मूल में अज्ञान है। इसीलिए अज्ञान को और देखो, इसको त्यागने का प्रयास करो। आज मैं इन वाक्यों में विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने आज्ञा दी है, आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है, जब मैं आधुनिक काल के राष्ट्रवाद में प्रवेश होता हूँ आधुनिक काल का राष्ट्र कैसा है? मानो देखो, आधुनिक काल का राष्ट्र स्वार्थवादी है, स्वार्थ में व्याप्त हो रहा है, स्वार्थ में रत्त हो रहा है। अरे यह राष्ट्र स्वार्थवाद नहीं होता है। राष्ट्र तो इसलिए होता है कि राजा के राष्ट्र में प्रजा अपने कर्त्तव्य का पालन करें, राजा स्वयं कर्त्तव्य का पालन करे और जब राजा देखो, प्रजा के श्रृंगार को हनन करके, उनके द्रव्यों को हनन करके अपना स्वयं लखपति बनता है और वह कहता है कि मैं राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता हूँ यह असम्भव है। वह राष्ट्र ऊँचा नहीं बना करता है। राष्ट्र ऊँचा जब बनता है जब राजा अहिंसा परमोधर्मी हो। जो राजा बन करके देखो, यही सूक्ष्म-सूक्ष्म प्राणियों को ले करके उन्हें अग्नि में तपा करके, उनका रस बना करके वह पान करके अपने आसन को त्यागता है, तो राष्ट्र में राम राज्य की कल्पना कर रहा है यह असम्भव है। मानो यह ऐसा एक विचित्र वाक् है कि वह अपने वेद और संस्कृति के ऊपर एक आक्रमण होता है और उसी आक्रमण से मानव समाज अपने में तिरस्कारित हो रहा है।

आज मैं विचार देने के लिए विशेष नहीं आया हूँ। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया है क्या हे प्रभु! यह जो राष्ट्र है मेरी प्यारी माताओं की जो शिक्षा प्रणाली है या मानवीय प्रणाली है यह बड़ी भ्रष्ट है। आज का प्राणी जो है, राजा को देखो, शिक्षा में उस द्रव्य को देता है। पुरातनकाल का राष्ट्र तो राष्ट्र को शिक्षा में उस द्रव्य को देता था जो अहिंसा परमोधर्मः से सना हुआ हो, जो हिंसक न हो। आज का प्राणी एक का दो बनाता है और दो के चार बनाता है उस चार वाले द्रव्य को शिक्षा प्रणाली में परिणत कर रहा है। वह कैसे मस्तिष्क का निर्माण हो, यह विचार नहीं आ रहा है। माता कौशल्या निर्माण कर रही है, गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है। माता मदालसा निर्माण कर रही है गर्भ में देखो, स्वयं कला-कौशल कर रही है। आज मेरी प्यारी माता नाना प्रकार के अशुद्ध द्रव्यों से निर्माण किया जाता हे यह बाल्य कदापि नहीं, जिस प्रणाली से जिसका जन्म होता है, वह उसी प्रणाली को नष्ट कर देता है। यह सिद्धान्त है प्रकृति का, कि जो माता जिस भावना से बालक को जन्म देती है यदि वह अशुद्ध आहार से करेगी, तो वह बालक अपने में रजोगुणी बन करके माताओं के श्रृंगार को हनन करने वाला बनेगा। परन्तु देखो, जो राजा इस प्रकार आज के राष्ट्र की जो पद्धति है वह कोई महान् पद्धति नहीं है। उसको मैं महान नहीं कहा करता हूँ। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया कि मूर्खो के समाज से, पामरों के समाज से चुना हुआ जो राजा होता है, वह भी एक पामर कोटि में कहा जाता है। परन्तु उस राजा को कदापि नहीं देखो। मुझे स्मरण है जब यहाँ महाराजा अज का निधन हो गया था तो दशरथ को राष्ट्रीय अयोध्या का राजा बनाना था। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! हम भी मानो विद्यालयों को त्याग

करके चले गए, ब्रह्मचारी व्रतेन्तु इत्यादि भी और देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज इत्यादि, हिमालय से आए महाराजा शिव आये और उनका निर्माण, जब एक सभा हुई और देखो, जब दशरथ का निर्वाचन होने लगा, तो मस्तिष्क का अध्ययन किया गया और निर्माणवेत्तओं ने, बुद्धिमानों ने, वेद के मर्म जानने वालों ने, योगियों ने, भयंकर बनों से आ करके राष्ट्र का निर्माण किया। अरे वही तो राजा महापुरुषों की सेवा कर सकता है और जो पामर प्राणियों का अज्ञानी अपठित प्राणियों का चुनौती किया हुआ राजा राजा बनेगा, वह मानो देखो, महापुरुषों की सेवा नहीं कर सकता वह अपने राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणियों को जन्म नहीं दे सकता। वह उनको उस कोटि में परिणत नहीं कर सकता। यह हमारे यहाँ चुनौती की प्रणाली परम्परागतों से मानी गई है। परन्तु बुद्धिमानों के द्वारा, योगियों के द्वारा, जो निष्पक्ष हो, उनके द्वारा राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए और जब राष्ट्र का निर्माण केवल जातीयता पर होगा और भी निकृत्तियों से होगा तो यह ऊर्ध्वा में नहीं ले जा सकते। यह समाज को चरित्र और मानवता नहीं दे सकता।

राजा का कर्त्तव्य

देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया है और यह कहा है हे पूज्यपाद गुरुदेव! यह जो मानव समाज है ये ऊँचा कैसे बनेगा? आज भी मैं इसका निराकरण दिए देता हूँ। मैंने बहुत पुरातन काल में यह वाक् प्रगट किया था। पुनः जितने भी रूढ़िवादी आचार्य हैं, रूढ़िवादियों में जितने आचार्य हैं, वेद के आचार्य हैं, इनका एक समूह एक स्थली पर विद्यमान हो जाने चाहिए। एक स्थली पर विद्यमान हो करके राजा को वेद का अध्ययन, उपनिषदों का अध्ययन करना चाहिए और ब्रह्मवेत्ता बन करके इनके मध्य में विराजमान हो करके इनका शास्त्रार्थ होना चाहिए और जब इनका शास्त्रार्थ हो और जो विज्ञान और मानवीय दर्शन से जो भी जिस रूढ़िवाद का विचार आ जाए, मानो देखो, उसी संस्कृति को अपनाना चाहिए। यह देखो, राष्ट्र की एक राष्ट्रीयता कही जाती है। परन्तु यदि राष्ट्रीयता को एक सूत्र में लाना है, तो यह विचार देखो, स्वीकार करने होंगे, अन्यथा देखो, यहाँ एक दूसरा प्राणी इस धर्म के नामों पर, परमात्मा के नामों पर, स्वार्थ की वेदी पर आ करके प्राणी प्राणी को नष्ट करता रहेगा। परन्तु देखो, राजा ऊँचा होगा, तो समाज ऊँचा बन सकेगा और जब राजा यह चाहता है कि प्रजा में संघर्ष होगा तो तेरा नामोकरण ऊँचा होगा, मानो तेरी चुनौती अच्छी बनेगी, तुझे राष्ट्रीयता प्राप्त हो गई। अरे मानव! तेरी आत्मा तो तेरे राष्ट्र में रूढ़िवाद में जब संघर्ष हो गया तो तेरा आत्मा तो वहीं मृत्यु को प्राप्त हो गया। मानो देखो, जब मृत्यु को चला गया है तेरा जीवन कहां रहा है, जीवन तो तेरा उसमें हैं कि तेरे राष्ट्र में एक ही विचार वाला प्राणी रहना चाहिए, धर्म और दर्शनों की प्रतिभा का प्राणी रहना चाहिए, जो विज्ञान की आभा में नियुक्त हो जाए। उसी सिद्धान्त को अपनाना यह राष्ट्र का कर्त्तव्य माना जाता है। आज मैं देखो, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह निराकरण की चर्चा कर रहा हूँ यदि राष्ट्र को ऊँचा बनाना हो तो इस प्रकार बन सकता है और यदि कहें कि नानक के मानने वाले हमें सहायता दे दें, मुहम्मद के मानने वाले सहायता दें मूर्ख बन करके और यदि यहूदी दें इसी प्रकार के विचारों में राजा लगा रहेगा तो एक समय वह आयेगा कि प्राणी प्राणी में देखो, रक्त की धाराओं का चलन उत्पन्न हो सकता है, होने जा रहा है, हो नहीं सकता, होने जा रहा है जो मैं दृष्टिपात कर रहा हूँ।

हे राजन्! यदि तू ऊँचा बनना चाहता है तो तुझे प्रत्येक प्राणी की रक्षा करनी है। भगवान् मनु ने मछली की रक्षा की, क्योंकि मछली समुद्र में प्राणी की रक्षा कर रही है। वह आज का प्राणी गौ को रक्षा में लगा हुआ है, प्राणियों की रक्षा में लगा हुआ है, परन्तु रक्षा नहीं हो पा रही। रक्षा करना चाहता है, रक्षा हो नहीं पा रही

है। राष्ट्र के एक राष्ट्रीय समूह बन करके, राष्ट्र में देखो, राजा को अपशब्द कहने वाला बन जाता है, इसलिए वह रक्षक होते ही उसका भक्षक हो जाता है।

तो यह विचार आज मैं इसलिए प्रगट कर रहा हूँ कि जो वर्तमान काल में हो रहा है मैं पूज्यपाद गुरुदेव को इसका मैं निर्णय देता रहता हूँ समय-समय पर। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा, क्योंकि मैंने अपने विचारों को बहुत ही प्रगट किया है। आज मैं अपने पूज्यपाद गरुदेव से यहीं विचारों का विराम देना चाहता हूँ। क्या हे प्राणियों! मेरे विचारों का अभिप्राय यह कि एक तो अपने पूर्वजों को, उस आभा उस कोटि में मत लाओ, जिस कोटि में आधुनिक समाज बना हुआ है। अपना जो साहित्य है उन साहित्यों को ऊँचा बनाने का प्रयास करो। उसके पश्चात् देखो, तुम्हारे यहाँ जो अपने पूर्वजों को किसी को पक्षी कहते हैं, किसी को गरुड़ कहते हैं उनसे मानव के राष्ट्रों की चर्चाएं हो रही हैं वह तुम्हारी मीमांसाएं आगे चल करके अशुद्ध वाक् आते हैं इसीलिए देखो, यह अशुद्धवाद न रह करके मानवीयता पवित्रता में रत्त रहना चाहिए आज अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पा रहा हूँ आज मैं वाक्यों को इसलिए उच्चारण कर रहा था क्योंकि मैंने इन विचारों को श्रवण किया है और उन्हें लाने का प्रयास किया है। अब पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने राष्ट्रीय चर्चाएं प्रगट की। परम्परागतों से ही, राष्ट्रवाद की चर्चा इसी आभा में और इसी कोटि में निहित रही है परन्तु इनका विचार बड़ा मार्मिक और एकता के सूत्र में लाने का प्रयास है। परन्तु एकता के सूत्र में आना है और न आया जायेगा। तो जैसा महानन्द जी ने कहा यह अशुद्धम्भव। परन्तु आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है। कल समय मिलेगा तो चर्चाएं प्रगट करेंगे आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

६ माताओं की महानता 15 03 1986

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है। मानो वह सर्वत्र विद्यमान है, कोई स्थली ऐसी नहीं है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। मानो वह सर्वत्र विद्यमान है, आज का हमारा वेद-मन्त्र, हमें कुछ प्रेरणा दे रहा था और हमे यह प्रेरणा दे रहा था हे प्राणां ब्रह्मा वरणस्वस्ता हे मानव! तू संसार में जितने भी क्रियाकलाप कर रहा है उन सर्वत्र क्रियाकलापों में मानो उस परमपिता परमात्मा की प्रेरणा से ही, संसार के नाना क्रियाकलापों को करता रहता है, उन क्रियाकलापों में रत्त रहता है। जितना भी ब्रह्माण्ड है और यह मानवीय जगत् है सर्वत्र ब्रह्माण्ड में एक प्राणी प्राणी से प्रेरणादायक है, वह प्रेरणा से ही प्रेरित हो रहा है, एक-दूसरा प्राणी एक-दूसरा मानव, मानव से प्रेरणा पा रहा है। एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर, विवेचना कर रहा है और वह विवेचना भी कोई प्रेरणा है। मानव उस प्रेरणा से प्रेरित हो करके, वह वेद की आभा में रत्त हो जाता है।

गौ मेध याग

आज का हमारा वेदमन्त्र हमें यह उच्चारण कर रहा था कि हे मानव! तू गौ मेघ याग करने का अधिकारी बन और तू गौ मेघ याग कर, वेद का वाक्, गौ मेघ याग के सम्बन्ध में बहुत ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ रहा है। गौ नाम के पशु के रूप में उसका वर्णन किया गया है और द्वितीय रूपों में गौ नाम इन्द्रियों के मानो वृत्तियों को गौ मेध कहते हैं और गौ मेध आगे चल करके, विचारों की रक्षा करने का नाम भी गौ मेध याग है। तो बेटा! हमारे यहाँ याग के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की चर्चाएं होती रही हैं। परन्तु मानो एक न एक वाक्यों से ही याग के वाक्यों से प्रेरित होता रहता है और उस प्रेरणा को पा करके, मानव अपने में सजातीय बन जाता है। मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं मानो एक बुद्धिमानों के काल में प्रवेश करता हूँ और माताओं के उस क्षेत्र में प्रवेश करता हूँ जहाँ मेरी प्यारी माता गौ मेध याग करती है। मानो गौ मेध याग, जो गर्भ में शिशु है उसकी जो रक्षा हो रही है उसमें जो ज्ञान की तरंगे प्रवेश की जा रही है वह भी एक गौ मेध याग है, उसको निर्वाणऽवति वाचक भी याग कहते हैं। परन्तु वेद का वाक्, गौ मेध याग की यह विवेचना कर रहा है। बेटा! हमारे यहाँ गो नाम का पशु है आयुर्वेद की दृष्टियों में वह गौ नाम का पशु, हमें मानो प्रकार के दुग्ध आहार करा करके और पय को प्रदान करके उसकी मानो पालना कर रहा है, तो वह अपने में गौ मेध याग है। परन्तु यागों का बड़ा विचित्र बड़ा विस्तृत विचार हमारे ऋषि-मुनियों ने परम्परागतों से माना गया है। याग का अभिप्राय यह है कि मुनिवरों! देखो, गौ नाम की इन्द्रियों की हमें रक्षा करनी है। जहाँ गौ नाम के पशु का वर्णन आता है वहाँ गौ नाम इन्द्रियों का भी वर्णन आता रहता है।

परन्तु आज मैं इन्द्रियों के संबंध में, कोई गंभीर विचार-विनिमय देने वाला नहीं हूँ। केवल विचार यह कि हमारे यहाँ गौ नाम के नाना पर्यायवाची माने जाते हैं।

आज मैं तुम्हें बेटा! गौ मेध याग जो विद्यालय में होता है, मैं उस विद्यालय में जाना चाहता हूँ, जिन विद्यालयों में गो मेध याग मानो ब्रह्मचारी और आचार्य अपने आसन पर विद्यमान हो करके, जो याग हो रहा है, वह कहता है आचार्य हे ब्रह्मचारी! मुझे गौ मेध याग करना है। ब्रह्मचारी कहता है प्रभु! मैं कैसे गौ मेध याग

करूं। उन्होने कहा गौ मेध याग का अभिप्राय यह है कि अपनी इन्द्रियों को तुझे संयम में बनाना है। कोई ब्रह्मचारी को कहता है, तू गौ मेध याग कर, तो याग का अभिप्राय यह कि पशु का पालन और पशु के संयम, बेटा! एक पशु जो बाह्य जगत् में है और एक पशु इन्द्रियों के रूप में विद्यमान हैं, दोनों पशुओं को मानो अपने नियंत्रण में लाना ही तेरा गौ मेध याग है। गौ मेध याग की विवेचना करते हुए, आचार्य कहते हैं कि एक पंक्ति में ब्रह्मचारियों को विद्यमान करके हे ब्रह्मचारियों! आओ, देखो, तुम गौ मेध यागी बनो। ब्रह्मचारी प्रसन्न हो रहे है। वह कहते हैं महाराज गौ मेध याग कराइए।

मुझे स्मरण आता रहता है नाना ऋषि-मुनियों का वह काल जिस काल में विद्यमान हो करके मानव ऊँची-ऊँची उड़ानें उड़ता है, विचित्र-विचित्र प्रकार की उड़ानें उड़ता है, जिन उड़ान उड़ने वालों ने, बहुत ऊँचे-ऊँचे अपने विचार दिए हैं। उन विचारों में आज मैं तुम्हें बेटा! ले जाना तो नहीं चाहता हूँ, परन्तु गौ नाम हमारे यहाँ पृथ्वी को माना है जब मानव पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करता है तो वह गौ मेधयाग कर रहा है और वह गौ मेघ याग करता हुआ अपने मानव जीवन को विचित्र और महानता की वेदी में लाने का प्रयास कर रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या कह रहा है? मेरे प्यारे महानन्द जी ने इससे पूर्वकाल में, अपने ऐसे विचार दिए, जिन विचारों को हम श्रवण भी नहीं कर पा सकते, इन्होंने अपने विचारों में माताओं की इस विद्या का वर्णन किया, जिस विद्याओं में माता देवता की पूजा करती हे, माताओं को देवताओं की पूजा करनी चाहिए और प्रातःकालीन याग करना चाहिए, प्रातःकालीन याग में परिणत रहना चाहिए। मुझे स्मरण आता रहता है मैं जब उस काल में प्रवेश करता हूँ।

माता कुन्ती का तपस्वी जीवन

हमारे यहाँ मेरे पुत्र महानन्द जी ने इससे पूर्वकाल में प्रगट किया। उन्होंने द्वापर की वार्त्ता को लेते हुए कहा है, द्वापर के काल के शब्दों को ले करके उन्होंने कहा है कि हमारे यहाँ, देखो, राष्ट्रीयकरण में महाराजा शान्तनु का वर्णन आता रहता है, राजा शान्तनु की चर्चाएं आती रहती है और उनकी देवी जो गंगोत्री थी उसकी भी चर्चाएं आती रहती थीं। मुझे महानन्द जी ने तो अपभ्रंश वार्त्ता का प्रगट किया है परन्तु मैं शुद्ध और विशुद्ध रूपों से उन्हें स्वीकार करता रहता हूँ और विचार यह दिया इन्होंने, कि गंगा के तट पर माता अपने ब्रह्मचारी को विद्या प्रदान कर रही है। एक ही वाक् नहीं है। कई कालों में मैंने तुम्हें प्रगट कराया है। हमारे यहाँ माताओं का इस संसार के ऊर्ध्वा बनाने में, गृहों को पवित्र बनाने में, राष्ट्र को ऊँचा बनाने में बड़ा सहयोग रहा है। उस सहयोग की चर्चाएं आज मैं तुम्हें करने वाला हूँ। माता कुन्ती अपनी स्थली पर विद्यमान रहती थी और माता कुन्ती जब मानो देखो, उसके गर्भस्थल में, एक समय महाराजा पांडु बोले कि हे देवी! मैं अपने विद्यालय में जब अध्ययन करता था और विद्यालय में जब मैं विचारधारा लेता रहता था तो कहीं मैंने देखा गृह वार्त्ताओं का अध्ययन किया है, गृह वृत्तियों का अध्ययन किया है कि हे देवी! मैं इस वाक् को स्वीकार करता हूँ, परन्तु आज मैं तुमसे ये जानने की इच्छा प्रगट कर रहा हूँ कि मैं यह अध्ययन किया है कि माता के गर्भस्थल में, जब शिशु का प्रवेश हो जाए तो माता को तपस्या करनी चाहिए। तो देवी! तुम तपस्वी बनो। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा हे भगवन्! हमने पुत्रयाग किया है हमारे यहाँ यागों का वर्णन करते हुए वैदिक-साहित्य में बेटा! जितने भी शुभ कर्म हैं, जितने भी पिंड और ब्रह्माण्ड से मिलान करने वाले, जितने भी शब्दों को रचना होती है उन सर्वत्र रचनाओं में मानो देखो, इस याग का वर्णन आता है। हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने परम्परागतों से ही, बेटा! एक वाक् बहुत प्रिय कहा है कि सर्वत्र विचारों को याग से उन्होने बेटा! कटिबद्ध किए हैं, याग से उनका

समन्वय किया है। जैसे सूर्य की नाना प्रकार की जो किरणें हैं उन किरणों का समन्वय हमारे यहाँ इस पृथ्वी से होता है, पृथ्वी प्रेरणा पाती है सूर्य से और सूर्य अपने में मानो प्रकाशवान् है।

इसी प्रकार पंडकेश्वर ब्रह्मा प्रणयः देखो, महाराजा पांडु वह कहा करते थे, उनका नाम ही पंडकेश्वर कहलाता था, पंडकेश्वर नामक उनका नामोकरण था। परन्तु मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे प्रगट कराया था, इन्होंने वर्णन कराया कि वह पांडु रूग्ण में रहते थे। परन्तु पांड उनके यहाँ रूग्ण नहीं था, उनका पांडकेश्वर नामोकरण कहा जाता था। जो अपने में देखो, तपस्वी हो, पंडकेश्वर मानों जो पंचमहाभूतों को अच्छी प्रकार अंग और उपांगों से जानने वाला हो, उसका नामोकरण पंडकेश्वर कहा जाता है। देखो, पांडु का बाल्यकाल, का नाम श्वेतकेतु था, अहा बाल्यकाल का नाम श्वेतकेतु और विद्यालय में उनका नाम पंडकेश्वर नियुक्त किया गया परन्तु देखो, उनको पांडु नामों से उद्गीत गाने लगे। जब इस प्रकार का उद्गीत गाया जाने लगा तो कुछ मुझे ऐसा स्मरण है कि वही पंडकेश्वर अपने गृह में प्रवेश हुए और गृह में प्रवेश हो करके कुन्ती से तपस्विनी ब्रह्मवर्चोसि का पालन करने वाली ब्रह्मयागी जो पुरुष होते हैं उनमें बड़ी विचित्र एक विशेषताएं होती है। बेटा! वह पंडुकेश्वर देखो, दोनों अपने में बुद्धिमान थे, कुन्ती अपने में बुद्धिमान, जब गर्भ में शिशु का प्रवेश हुआ तो मानो देखो, सबसे प्रथम धर्मराज युधिष्ठिर का धर्मम्ब्रह्मः जो धर्म क मर्म को जानने वाले थे, उनका जब प्रवेश हुआ तो वह प्रत्येक इन्द्रिय को सजातीय बनाने लगी प्रत्येक इन्द्रिय को सजातीय बनाते हुए मानो धर्म में इन्द्रियों को पिरोने लगी और जो भी अन्नाद् पान करती वह भी धर्म है। मानो धर्म किसे कहते हैं? धर्म कहते हैं उन गुणों को अपनाने को जो उसमें इस प्रकार के गुण होते हैं जो धर्म है। धर्म कहते हैं जैसे वाणी का धर्म है, सत्य उच्चारण करना है और मुनिवरों! देखो, श्रोत्रों का धर्म सत्य को निहारना है और श्रोत्रों का धर्म ही सत्य को श्रवण करना है और इसी प्रकार त्वचा का धर्म क्या है? सम्भूति ब्रह्म लोकां हिरण्यं रथा वह अपने में एक महा पवित्रता की वेदी कही जाती है जब माता इस प्रकार प्राणम् मे प्राहि, चक्षुम्मे पाहि, प्राणम् मे पाहि, श्रोत्रों मे पाहि, और घ्राणां पाही त्वचा में पाहि वह सब में धर्म ही देखता है। हे माता! जब तू अपने में इन इन्द्रियों में धर्म ही देखती रहती है तो मानो तेरे गर्भस्थल से धर्मराज पुत्र का जन्म होता है। मानो ये विद्या तू जानती है इसी प्रकार के मंत्रों का अनुष्ठान करना और देखो, उसी प्रकार का आहार करना, आहार भी धर्म से पिरोया हुआ होना चाहिए, राष्ट्रीय जो अन्नाद् है, वह हमें रसातल की वृत्तियों में ले जाता है परन्तु जो धर्म से पिरोया हुआ होता है वह यज्ञ, वह अन्नाद् हमारे लिए पवित्र माना गया है।

मैं अपने पुत्र महानन्द जी के विचारों पर टिप्पणी तो देना नहीं चाहता हूँ, परन्तु विचार यह कि जो महाभारत काल में माताओं का कितना सहयोग रहा है। तो माता कुन्ती ने अपने में तपस्वी बन करके मानो पांचों पुत्रों को जन्म दिया। इसी प्रकार अग्रणीय बन करके मुनिवरों! आगे वेद का आचार्य कहता है, सम्भूति ब्रह्म वाचो देवं ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, माताएं अपने में सहयोगी बन करके उसका उद्गीत गा रही है, उसकी आभा में परिणत कर रही है जिससे हमारा जीवन, एक महानता की वेदी पर रत्त हो जाए। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, माता कुन्ती इस विद्या को जानती थी, वह कैसे मानो प्रातःकालीन रात्रिकालीन कैसे अपने को तपस्या में ले जाए और अपने गर्भ के आत्मा से धर्म की गाथा प्रगट करने वाली हों। परन्तु देखो, मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने जैसा प्रगट कराया, कल इनके विचारों में, यह वाक् आ रहा था, ये विचार आ रहा था, उन विचारों में एक महावृत्तियां आ रही थी कि वह देवताओं का नियोग माना जाता है देवां ब्रह्मा वृणां वृहे मानो वह देवताओं की चर्चा में रत्त रहा है, ऐसा मुझे स्मरण कराया है। परतु मैं इन विचारों को नहीं दे रहा हूँ केवल

विचार यह है कि यह एक पुनः एक विद्या है, इस विद्या का अध्ययन करना, विचारों में लाना, महानता का दर्शन करना, एक मानवीयत्व माना गया है।

लिंगन रहित आत्मा

परन्तु मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक वाक् बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रगट किया था कि सृष्टि की जब रचना हुई तो सृष्टि की रचना में इन्होंने एक वाक् कहा है कि कुछ मोक्ष के निकट आत्माएं, कुछ पुरुष और कुछ देवियां, मेरा अभिप्राय यह है कि यह जो आत्मा है मानो यह स्त्री और पुलिंग नहीं कहलातीं, यह आत्मा तो एक रस रहने वाली है, इसमें कोई लिंगन नहीं होता है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने उसको लिंगन किया है, देखो, कुछ देवियां, कुछ माताओं की आत्माएं, कुछ पुरुष आत्माएं, परन्तु आत्मा पुरुष और देवी नहीं होती, आत्मा तो एक रस रहने वाला है। हां यह कह सकते हैं कि कुछ माताएं ऐसी हुई हैं जिन्होंने मोक्ष को प्राप्त किया है, कुछ माताएं ऐसी हुई हैं, जिन्होंने मोक्ष को लिया है। तो मेरे प्यारे महानन्द जी का कथन यह है कि आधुनिक विद्वान या उससे पूर्व के विद्वान् यह स्वीकार करते हैं कि देवियों की मुक्ति न हो। परन्तु यह वाक् यथार्थ है जब उनका शरीर धारण है और वह जन्मदाता है पुत्र को जन्म दे देती हैं तो इनका जीवन तो कोई महापुरुष उत्पन्न हो जाए तो माता का नामोकरण तो वैसे ही पवित्र बन गया।

माता कौशल्या पर रावण का आक्रमण

परन्तु मुझे स्मरण आता रहता है, माता मदाल्सा के जीवन की घटनाएं मैंने तुम्हें कई कालों में प्रगट की है और देखो, माता कुन्ती की चर्चा चल ही रही है कि जिस समय धर्मराज मानो कहीं उद्गीत हो करके और वह यशोगान गाते थे और वह कहते थे कि यह माता का मुझे सहयोग है, माता स्वर्ग में कैसे जाती है, यह आज मैं तुम्हें वाक् प्रकट करना चाहता हूँ कि माता स्वर्ग में नहीं, मोक्ष में कैसे चली जाती है। यह वाक् आता है देखो, विद्वानों ने यह कहा है कि यह माताएं पतित रहती हैं, इसलिए ये मोक्ष नहीं जा सकती। यह वाक् उनका यथार्थ है कि माताएं पतित नहीं होती है। माताओं को पतित किया जाता है। मानो माताओं को पतित कैसे किया जाता है? मानव समाज में सदियों से मानो देखो, ये वाक् माना गया है कि इनके ऊपर नाना प्रकार का आक्रमण होता है, जैसा महानन्द जी ने कहा है। यह आक्रमण जो प्रणाली है। देखो, त्रेता के काल में भी कहीं-कहीं उन पर आक्रमण हुआ है। मैं यह नहीं कहता हूँ कि आधुनिक काल में आक्रमण विशेष हुआ है, परन्तु उस काल में आक्रमण एक मानो अपवाद में माना गया है। जैसे हमारे यहाँ कौशल्या का देखो, राम के काल में जीवन आता है। माता कौशल्या का जो जीवन था बड़ा पवित्र और विदुषी जीवन था। राजा रावण ने कहीं यह जान लिया कि यह जो कौशल्या है, इसके गर्भ में तेरे मृत्यु के मूल का जन्म होगा। तो उस समय कौशल्या को उन्होंने राजा के यहाँ से, कौशल देश में जा करके राजा के यहां से कन्या को मानो एक आसन पर विद्यमान करके उसे देखो, एक संदूक वृत्तियों में बन्द करके और समुद्र में त्याग दिया था। जब समुद्र में त्याग दिया तो कैकेई और राजा दशरथ कहीं युद्ध में गये और वह उन्हें प्राप्त हो गई। तो उसमें से वह राजा के यहाँ उस कन्या का आगमन हुआ और राजा दशरथ से उसका संस्कार हुआ। इस प्रकार के अपवाद तो माने जाते है, परन्तु उसके पश्चात् जो कौशल्या का सहयोग रहा है, जो कौशल्या का तप रहा है, वह मुझे स्मरण है। वह बड़ा अद्वितीय कहा जाता है।

महर्षि कागभुषण्ड जी का जीवन

तो इसीलिए मैं माताओं की चर्चा क्या, मैं एक वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ। परन्तु मानव अपने स्वार्थ में आ

करके आक्रमण कर सकता है, अपने प्रभुत्व में आ करके आक्रमण कर जाता है। परन्तु उस आक्रमण में भी कोई न कोई रहस्य होता है। तो विचार क्या? देखो, मेरे पुत्र ने पूर्वकाल में यह प्रगट किया था कि आत्माओं का मोक्ष होना, मानो देखो, मेरी देवियों ने भी कई कालों में, जैसे देखो, मैत्रेयी का जो जीवन था और वह बड़ा विचित्र था। मैत्रेय जब तपस्या करती रहतीं, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विद्यालय में तप करते रहते थे और माता मैत्रेयी अपने को भयंकर वनों में, वह तपस्या में गायन में रत रहती थी। मुझे स्मरण कराया महानन्द जी ने कि मध्यकाल में ऐसा हुआ है, पश्चात् काल में ऐसा हुआ कि मेरी पुत्रियों को वेद के शब्दों का अधिकार नहीं रहा। तो यह आक्रमण किसने किया है? यह पामर प्रवृत्तियों वाले प्राणियों ने आक्रमण किया है। मैं महानन्द जी के शब्दों की विचारधारा प्रगट कर रहा हूँ। विचार क्या मेरे पुत्र ने यह वर्णन कराया मानो देखो, इस प्रकार के जब आत्मा होते हैं तो समाज में कुरीतियां आ जाती हैं, इनके संतानों का जन्म नहीं होता है। उनके संतान का जन्म जब होता है जब माता स्वतन्त्र रूप से तपस्वी होती है और तपस्या करने वाली होती है। कैसे तपस्या करती हैं? देखो, मुझे कागभुषुण्ड जी की वार्त्ता स्मरण आ गई है। महर्षि कागभुषुण्ड जी की जो माता थी, स्नेहलता, मानो वे उनकी लोरियों में बालक पान आनन्द लेता रहता था, मधुर अमृत को पान करता रहता था, तो माता एक पंक्तियों में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारियों को महान बनाना और कागभुषुण्ड जी को माता ने प्रीति में आ करके उसको कागा कहा करती थीं उनका नाम तो कोंडली ब्रह्मचारी था बालक नाम कोंडली ब्रह्मचारी और देखो, जब वह प्यार प्रीति में आती थीं तो माता उसे कागा कहा करती थी। वह कागा क्यों कहती थी, क्योंकि बाल्यकाल में जो दो विधाता और थे उनके अन्न को भी वह पान कर जाता था। जब वह उनके अन्न को पान कर जाता था तो माता मग्न हो करके यह कहती तू कागा है, तू कागा प्रवृत्ति वाला है। तो माता ने जब ऐसा कहा तो उनका नाम कागा हो गया, परन्तु देखो, कागभुषुण्ड जी उनके नामों को उच्चारण करने लगे। भुषन्डी उस काल नामोकरण, यह लोमश मुनि ने उनका नाम भुषण्डी रख दिया। देखो, कागा तो माता का दिया नाम था और भुषन्डी वह महर्षि लोमश जी कहते थे और वह क्यों कहते थे मानो जब वह विद्यालय में अध्ययन करते थे, तो महर्षि लोमश और महर्षि कागभुषुण्ड जी के मानो गुरु थे आचार्य श्रुति ऋषि महाराज। श्रुति ऋषि महाराज के द्वारा जब अध्ययन करते थे तो वह दोनों संग-संग प्रीति से योगाभ्यास करते थे। जब योगाभ्यास करते, व्याकरण का अभ्यास करते, शब्दों की रचना करते रहते थे और परमपिता परमात्मा के स्वरूप का दर्शन करने लगते थे। तो मानो वह उनको भुषण्डी जी कहते थे और भुषण्डी जी क्यों कहते थे क्या उनकी बुद्धि किसी-किसी काल में मानो निर्धन हो जाती थीं जब बुद्धि निर्धन हो जाती तो मानो देखो, उसको लोमश जी भुषण्डी जी कहते थे मग्न हो करके। तो इस प्रकार के नामोकरणों की रचनाएं हुई, जब रचनाएं हुई, इन्हीं रचनाओं का प्रादुर्भाव यह हो सकता है, कि समाज में उनको कागभुषुण्ड जी, एक कागा के नामों से उसके अर्थो का अनुमोदन करना प्रारम्भ कर दिया हो।

माता गार्गी का जीवन

परन्तु देखो, इस वाक्य को न लेता हुआ विचार क्या, कि इस प्रकार मेरे प्यारे! महाननद जी ने यह उच्चारण किया, कि कुछ माताओं का आत्मा का मोक्ष हुआ है। मातां मोक्ष को गई हैं और वह मोक्ष के निकट भी गई हैं जैसे हमारे यहाँ देखो, चाक्राणी गार्गी का वर्णन आता है, तो चाक्राणी गार्गी को मोह नहीं होता था। एक समय उसके पिता भी विद्यमान थे और विद्यमान हो करके पिता ने अपने में प्राणायाम करके अपने शरीर को त्याग दिया। तो चाक्राणी गार्गी अपने पिता को अग्नि के मुख में प्रवेश करके और यह कहा हर्ष ध्वनि करते

हुए, कि जैसे तेरा अन्तरात्मा गया है चित्त के मण्डल को पार करके, ऐसे मेरा आत्मा चला जाए। वह मोह ममता में नहीं एक संकल्प कर रही है। तो गायत्रियों का जपन कर रही है और उनकी वृत्तियां इस प्रकार की थीं कि सर्पराज उनकी ध्वनि को श्रवण कर रहा है, मृगराज जो हिंसक है, वह ध्वनित हो रहा है। तो मानो उसकी वाणी में कितना तप होगा, बेटा! यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता। किसी-किसी में कोई ऐसी जो अप्रत्तियां हैं कि जिसके मापदण्ड से मापा नहीं जा सकता, इन वाक्यों को, मानो ये उच्चारण कर सकते है। जिसकी वाणी में इतना तप हो, उसकी प्रत्येक इन्द्रियों में तप है, वह धर्म और मानवीयता से सजातीय है। तो मानो देखो, जब चाक्राणी गार्गी का प्राणान्त होने लगा, जाने लगी, तो मानो वह वेद का गान गा रही है, सामगान गा रही है। सामगान उन्हें बड़ा प्रिय लगता था, जब वह सामगान गाती थीं तो तरंगें आती रहती थीं। देखो, चन्द्रमा की आभा उनमें निहित होती रहती थी। मानो देखो, जब वह गान गाने लगीं, तो वहीं भयंकर बन में सर्पराज है, मृगराज हैं, वहीं सिंहराज विद्यमान हैं, महर्षि स्वाति मुनि महाराजा भी विद्यमान हैं। वह कहती है अपने प्रभु से वेदवाणी का उद्गीत गाती हुई, मैं तेरी ही पगडण्डी को पान करना चाहती हूँ। मानो ये उच्चारण करते-करते मानो प्राण सखा उस आत्मा को ले करके, चित्त के मण्डल में, चित्त के मण्डल से अपने प्राणों में प्रवेश करके, मानो देवी का मोक्ष हो गया। मोक्ष का अभिप्राय क्या, कि जिसके जितने व्यापक विचार बन जाएं, जो मानव में, मनुष्य में और देखो, सर्पराज में, हिंसक और अहिंसक में, किसी प्रकार मतभेदन नहीं रहता है विचारों में, उस मानव का आत्मा पवित्र बन जाता है, आत्मा एकरस रहने वाला है। एक रसता में जब परिणत हो जाता है तो प्रभु! की पगडन्डी को प्राप्त कर लेता है।

संकल्पमयी जगत्

परिणाम क्या है? मेरे प्यारे महानन्द जी ने कहा है कि यह देवियां मानो कुछ मोक्ष के निकट थीं, कुछ मानव ऋषि-मुनि निकट थे, उन्होंने अपने पांचों तत्त्वों के आभा को अपने में ग्रहण कर लिया। आत्मतत्वों में सत्ता होती है मानो इतनी एक संकल्प शक्ति बनी रहती है और संकल्पमयी जगत् होता है। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के जगत् होते हैं, एक रचनात्मक जगत् होता है, एक हमारे यहाँ सकल्पोमयी जगत् होता है। मानो देखो, मानव अपने को पवित्र बना लेता है, तो संकल्प आया कि मेरी देवी पवित्र बन जाए, तो वह देवी पवित्र व संकल्पमयी से उसके कर्म की आभा को अपने अन्तःकरण में निहार लेता है।

तो परिणाम यह संकल्पमयी सृष्टि है, एक संकल्पमयी क्रिया-कलाप है, एक मानव विद्यमान है, वह प्राणों का संकल्प कर रहा है, प्राण आ रहा है, प्राण जा रहा है, वह संकल्पीमयी प्राणायाम् कहलाता है। **जब इतना मानव का संकल्प विचित्र बन जाता है कि एक एक प्रहर का एक-एक श्वांस की गतियां प्रबल बन जाती है। तो जिस समय वह योगेश्वर अपने शरीर को त्यागता है, तो वह भी मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण को लेता है।** तो परिणाम क्या? एक व्यापक विचारों का बनाना है, हमें संकीर्णता से इस संसार को निहारना नहीं है। विचार क्या है, मानो देखो, इस प्रकार मेरी प्यारी माता अपने जीवन को क्रियात्मक बना लेती है।

संकल्प शक्ति से महान आत्मा का जन्म

एक समय मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण है माता वृहे वस्तुतम् ब्रह्मा माता मैत्रेय के हृदय में यह संकल्प जागा, एक समय मधुविद्या का पान करा रहे थे, याज्ञवल्क्य मुनि महाराजा। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से देवत्व मध्यरात्रि में बोली कि हे प्रभु! मैं अपनी आत्म तृप्ति के लिए पुत्र याग करना चाहती हूँ। उन्हांने कहा बहुत प्रिय, तो मानो मैत्रेयी ने पुत्र याग किया और नौ माह उसके पश्चात् उनके गर्भ से एक बालक का जन्म हुआ। तो

माता मधुविद्या का अध्ययन कर रही है, मधुविद्या का अध्ययन करते हुए संसार के सम्पर्क में नहीं है, केवल प्रभु से, आत्मा से वार्त्ता प्रगट कर रही है। वही ब्रह्मचारी आगे चल करके मुनिवरों! देखो, महर्षि श्वेतकेतु के रूप में बना, वही आगे चल करके गोरवृत्ति देखो, ऋषि बना, और वही आगे चल करके रेणकेतु मुनि बन गया।

माता मल्दालसा का जीवन

तो विचार क्या मुनिवरों! माता तो जन्म देती है, पालना करने वाली है और पालना में भी ज्ञान देती है और ज्ञान दे करके, जब माता इस प्रकार की होती है, तो वह माता अपने को धन्य है मोह ममतामयी नही कर रही है, प्रीति कर रही है और प्रीति में जीवन होता है, प्रेम में जीवन होता है, मोह में मृत्यु होती है। इसलिए मानव को विचारना है, माता यह जानती थी मैत्रेयी कि तुझे प्रेम करना है, मानव तुझे मोह ममता नहीं करनी है, मोह नहीं करना है, ममता नही करनी है, प्रीति करनी है, प्रेम करना है। क्योंकि देखो, प्रेम से जुड़ा हुआ यह संसार है, ये प्रेम से संकल्प हो रहा है। परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में, जब मानव प्रकृति से अपनी प्रीति की, तो यह जगत् पिंड बन गया, जब मानो देखो, और प्रीति की तो उग्रगति आ गई, उग्रगति से इस संसार का विभाजन हो गया। ये ब्रह्माण्ड के रूप में दृष्टिपात आने लगा। मानो देखो, इसका नाम है प्रेम, इसका नाम है स्नेह। स्नेह और प्रीति करनी है, मोह नहीं करना है, मोह करोगे तो तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। मानो देखो, जो माता यह जानती है कि तुझे कुछ योग्य बनाना है माता मदालसा की भांति, माता मदालसा ने जब वह मनुवंश में संस्कृत मानो हुई और उन्होंने जब तीन पुत्रों का जन्म हुआ, तीनों पुत्रों से प्रेम किया, मोह नहीं किया, और मोह न करने से प्रेम किया और प्रेम ने उन्हें ब्रह्मवेत्ता बना दिया। पांच वर्ष का ब्रह्मचारी ब्रह्म की उड़ान उड़ रहा है, ब्रह्म से वार्त्ता प्रगट कर रहा है, माता से प्रश्न कर रहा है, शास्त्रार्थ कर रहा है और वह माता प्रेम से उन्हें ब्रह्म का उपदेश दे करके, ब्रह्मवेत्ता बना रही है। वही माता मोक्ष को चली गई। माता मदाल्सा का जीवन जब स्मरण आता है, तो वह तीन सन्तानों को जन्म दे करके एक को राजा बना करके और गायत्री छन्दों का पठन-पाठन करके, मानो देखो, वह श्रुति में परिणत हो करके, परमपिता परमात्मा को इच्छा प्रकट कह करके शरीर को प्राण के द्वारा त्याग दिया। प्राण के द्वारा त्याग करके वह मोक्ष के आंगन में प्रवेश हो गई। मोक्ष नहीं हुआ, मोक्ष के निकट हो गए, मानो देखो, निकटतम में अगले अरूप लोकों में जन्म ले करके उसका मोक्ष हो गया।

तो परिणाम क्या? मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ महानन्द जी के विचारों के ऊपर टिप्पणियां दे रहा हूँ, और वह टिप्पणियां क्या है कि मानव को विचारना है, क्या देखो, हम व्यापक विचारों में जब हम चले जाएंगे, तो हमारा वास्तव में मोक्ष हो जायेगा। मानो देखो, यह विचार एक आक्रमणीय विचार है कि देवियां मोक्ष में नहीं जा सकतीं। अरे जब यह आत्मा है, जब यह ज्ञानी बन सकती है, देखो, ज्ञान और कर्म इनकी आत्मा का मौलिक गुण, वह सर्वत्रता में इस प्रकार का क्रिया-कलाप जब कर सकते हैं, तो मोक्ष में क्यों नहीं जा सकते। आज का देखो, यह विचार, क्या मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय दिया है।

मुझे स्मरण आता रहता है, मैं त्रेता के काल की, द्वापर के काल को भी चर्चा करता रहता हूँ। मानो देखो, जब मुझे यह वाक् स्मरण आता है कि रामं ब्रह्मे राम वन को जा रहे हैं और माता कौशल्या प्रसन्न हो करके कह रही हैं, जाओ, वन चले जाओ। माता रूदन नहीं कर रही है, मोह नहीं कर रही है क्योंकि वह यह जानती थीं कि तूने तपस्वी बालक को जन्म दिया है। मेरे पुत्रों! मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय मुझे इसकी नाटकीय चर्चा प्रगट कराई, मैं यह कहता रहता हूँ क्या नाटकीय चर्चा नहीं होनी चाहिए, इससे साहित्य और

महानता का ह्रास होता है। माता रूदन नहीं कर रही है, मानो देखो, वह कहती है कि राजा को मोह है, राजा की मृत्यु हो गई है और मुझे मोह नहीं है, जाओ, तुम वन जाओ। मानो देखो, राजा की मृत्यु होने वाली है, माता ये कह रही है क्योंकि वह यह जानती थी कि राजा की मृत्यु हो जायेगी। मेरे प्यारे! माता प्रसन्न हो रही है, और कहती है कि भयंकर वन में जा करके इस समाज को तुम्हें ऊँचा बनाना है, इस समाज को तुम्हें महान् बनाना है। मैंने तुम्हें जन्म दिया, यह कहकर के राम को आज्ञा दी। देखो, कैकेई की तो आज्ञा द्वेषपूर्ण नहीं थी, कौशल्या की भी भावना पवित्र थी, जब माता के इस प्रकार के विचार होते हैं। उन विचारों में स्वर्ग आ गया है और वही विचार जब ऊर्ध्वा (पुस्तक से) गति में चले जाते हैं वही विचार उड़ान के साथ में चित्त के मण्डल से पार हो करके मोक्ष की पगडंडी को प्राप्त कर सकते हैं। तो इस प्रकार का विचार मैं देना चाहता हूँ। मुझे वह साहित्य स्मरण आता रहता है कौशल्या जी से बहुत ऋषि-मुनियों ने कहा, आचार्यो ने कहा कि तुम राम को आज्ञा दे रही हो? उन्होंने कहा, मैंने तो जन्म दिया है, मेरे जन्म का अभिप्राय यह नहीं है, वास्तव में इसका जन्मदाता प्रभु है और मैंने इसको विचार दिया है इन विचारों से मैं अपनों को सार्थक बनाना चाहती हूँ, यह माता कौशल्या ने कहा।

तो विचार-विनिमय क्या? मैं ये बिखेरे विचारों को तुम्हें इसलिए दे रहा हूँ कि मेरे प्यारे महानन्द जी ने वर्णन कराया कि कुछ देवियों का मोक्ष हुआ। परन्तु देखो, यह तो हम कह रहे हैं, यह कहते हैं कि कुछ देवी आत्माएं थीं परन्तु वाक् इनका विकृतता में चला गया। वह वाक् यथार्थ नहीं, क्योंकि आत्मा तो एक लिंग है वह पुलिंग या स्त्रीलिंग नहीं कहलाता। इसलिए उनका यह अद्भुत उच्चारण करना, यह राष्ट्र बन जाता है। विचार-विनिमय क्या? उस समय ब्रह्मयन् ब्रह्मः कृतानाम् तो इसीलिए विचार मेरा यह चल रहा है कि संसार में प्रेम होना चाहिए। संसार में कर्त्तव्य होना चाहिए, अकर्त्तव्य में मोह आ जाता है। अकर्त्तव्य में विडम्बना आ जाती है। वही विडम्बना राष्ट्र और समाज का विनाश कर देती है। तो विचार-विनिमय क्या? आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, कि बिना विवेक के राष्ट्र का पालन नहीं हुआ करता है, यह परम्परागतों का वाक् है। राजाओं ने देखो, परम अतीत के काल में अनुष्ठान किए हैं, तपस्याएं की हैं और जब उन्होंने ब्रह्मवेत्ताओं ने उन्हें राष्ट्र की उपासना प्रदान की हैं।

युद्धोपरान्त भगवान राम का तप

मुझे स्मरण आता रहता है जब राम लंका को विजय करने के पश्चात् अयोध्या में आए, प्रतीक्षा हो रही है और देखो, सर्वत्र नगर प्रतीक्षा कर रहा है। जब राम अयोध्या में पधारे तो ऋषि-मुनि भी प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब राम आए तो उनका ऋषि-मुनियों ने स्वागत किया और स्वागत करने के पश्चात् देखो, उन्होंने यह वाक् अपने से उच्चारण किया कि मैं राष्ट्र का अधिकारी नहीं हूँ। वशिष्ठ मुनि बोले राम! तुम क्यों नहीं अधिकारी हो? उन्होंने कहा मैंने एक राष्ट्र को क्रांति की है, कर्त्तव्य में, अपने विचारों को मेरे अन्तःकरण में जो संस्कार संग्राम के बने, जो भी विचित्र वृत्तियां बनी हैं, उन्हें जब तक मैं समाप्त नहीं कर लूंगा, सात्विकता नहीं आयेगी, तब तक मैं राष्ट्र का या प्रजा का पालन नहीं करूंगा। तो राम ने बारह वर्षों तक और तप किया और तप करने के पश्चात् जब वे इस अयोध्या में आए, तो उस समय वशिष्ठ मुनि, महर्षि लोमश ने और आदि-आदि ऋषियों ने राम का राजतिलक किया और वह राष्ट्र के अधिकारी बने। उन्होंने प्रजा में कहा कि मैं अब राष्ट्र का अधिकारी बन गया हूँ, मेरे में गायत्री माता का प्रभाव आ गया है, वेदध्वनि मेरे में ध्वनित हो गई है, मुझे विवेक हो गया है। मैं वास्तव में राष्ट्र को चाहता नहीं हूँ, परन्तु जब ऋषि-मुनियों की आज्ञा है, तो मैं इनकी आज्ञा का पालन

करूंगा, मैं राष्ट्र का अभिलाषी नहीं हूँ। तो राम ने यह वाक् कह करके और राष्ट्र को अपनाया। तो राम की जो स्थापना हुई है राष्ट्र की, वह बड़ी विचित्र रही है। राम ने माताओं का पूजन किया और यह घोषणा की राष्ट्र में कि मेरे राष्ट्र में एक मानव हो तो एक उसकी देवी होनी चाहिए, परन्तु दोनों का परस्पर प्रेम होना चाहिए। द्वितीय नियम उन्होंने लगाया कि राष्ट्र में याग होना चाहिए, याग विचारों का हो, ब्रह्मयाग का हो अथवा देखो, देवयाग, वेदों की ध्वनि प्रत्येक गृह में से आनी चाहिए। मेरे गृह में भी यही ध्वनि आती रहेंगी। तो राम ने यह नियमावली बनाई और राष्ट्र के बहुत से उद्गीत बनाए परन्तु वैज्ञानिक हुए, उन वैज्ञानिकों की धाराओं में रत्त रहने लगे।

तो विचार-विनिमय क्या, राम ने यह कहा कि राष्ट्र हमारा याग रहेगा और यज्ञ राष्ट्र में रहेगा और राष्ट्र यज्ञ में रहेगा। तो प्रत्येक मानव कर्त्तव्य का पालन करेगा और जब कर्त्तव्य का पालन करेगा तो राष्ट्र में एक-दूसरे में कुरीति नहीं आएंगी। अपने-अपने सामान्यता में, अपने क्रिया-कलापों को करता रहेगा। तो राम ने देखो, यह घोषणा की और अयोध्यापुरी स्वर्ग बन गया, अयोध्यापुरी महान् बन गया।

विचार-विनिमय यह है कि बिना तप के राष्ट्र का पालन नहीं होता, क्योंकि तप होगा तो बुद्धि होगी और बुद्धि होगी तो ज्ञान होगा और ज्ञान होगा तो कर्तव्य का पालन कर सकेगा और प्रजा में एक महानता का दर्शन करा सकेगा। मानव दर्शन कर सकेगा और देखो, वह महापुरुषों की आज्ञा पा करके राष्ट्र को त्यागते समय, उसे विडम्बना नहीं होगी। वह राष्ट्र को त्याग करके पुनः तपस्या भी कर सकता है और जब तक तपस्या नहीं आती, तब तक देखो, राजा के राष्ट्र में विकृतता रहती हे, मृत्यु हो जाती है। हे राजा! तेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए, वेद का ऋषि कहता है। तेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए और तेरी मृत्यु किस काल में होती है, जब होती है, जब तेरे राष्ट्र की प्रजा एक-दूसरे प्राणी से मानो विडम्बित रहती है और राजा तेरे से प्रजा विडम्बित रहती है। परन्तु देखो, इस प्रकार जो राष्ट्रीय प्रणाली है, वह विचित्र होनी चाहिए। यदि, जिस राजा के राष्ट्र में मेरी पुत्रियां अपने श्रृंगार को हनन करके अपने उदर की पूर्ति करती हैं, वह राष्ट्र नहीं हुआ करता है। यह वाक् ही तो हमारे यहाँ पुरातनकाल के ऋषि-मुनियों ने कहा है और जैसे मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे प्रगट कराया है और इन्होंने अपना वक्तव्य दिया है, मानो अपना विचार दिया है। इन्होंने विचार देते हुए कहा हे सम्भवा लोकां ब्रह्म वाचो प्रवह्लं मेरे प्यारे महानन्द जी ने विचार यह दिया कि राजा हिंसक बना हुआ है। अरे, हिंसक नहीं अहिंसा परमो धर्मः का पालन करना है, भगवान् मनु के राष्ट्र का अनुमोदन करो, भगवान् राम की विचित्रता और भगवान् राम और मनु जी के सिद्धान्त को लो। मनु जी जैसे एक मछली की रक्षा कर रहे हैं और देखो, वही आज मेरे प्यारे महानन्द जी यह कहते हैं कि उनका भक्षण किया जाता है। यह कोई राष्ट्रीयता की नियमावली नहीं है।

प्रतापी राजा दिलीप

आज का हमारा विचार यह कहता है कि मानव यह कहता है कि आहार कहाँ से आए, यदि इसका भक्षण न करें। मेरे प्यारे! महानन्द जी ने एक समय कहा था, उसका उत्तर यह महानन्द जी ने दिया और हमने भी उसमें कुछ टिप्पणियां दीं कि मानव को तो, प्रत्येक मानव को अपने विचारों को महान् बनाना है। परन्तु देखो, वह दूसरे के विचारों को महान् उसी प्रकार की टिप्पणियां न देता हुआ, जब प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक मानव अपने में कर्त्तव्य का पालन, अपने में अहिंसा परमोधर्मः का पालन करता रहेगा, तो यह समाज महान् पवित्र बनेगा। सर्पराज तुम्हारे आंगन में खिलवाड़ करेंगे, सिंहराज आ करके तुम्हें भक्षण नहीं करेंगे, जैसा मैंने पुरातनकाल में पुत्र को वर्णन करते हुए कहा था कि महाराजा! दिलीप जब नन्दनी के पीछे अपना गमन कररहे

थे, ब्रह्म वर्चोसी का पालन कर रहे थे, तो मृगराज ने नन्दनी के ऊपर आक्रमण किया और राजा कहता है हे सिंहराज! तू मुझे आहार कर, यह मेरी पूज्य है। तो सिंहराज उनके तप के आगे मौन हो गया और नन्दनी को त्याग दिया और यह अपने विचारों में कहा कि मैं ऐसे प्रतापी राजा का आहार नहीं कर सकता, जिसमें हमारी मृत्यु न होती हो, जिस राजा के राष्ट्र में कोई मृगराजों पर, सिंहराजों पर आक्रमण करने वाला नहीं मनुष्य है, तो ऐसे प्रतापी राजा को ऐसे विवेकी राजा को जो गौ की रक्षा कर रहा है, प्रत्येक प्राणी की रक्षा कर रहा है, उसकी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। तो मैं बहुत दूरी न चला जाऊं, इस संसार को बहुत समय हो गया दृष्टिपात करते हुए, ब्रह्माण्ड मस्तिष्क में विद्यमान है। मैं इस ब्रह्माण्ड में से वार्त्ता ला-ला करके तुम्हारे समीप लाता रहता हूँ। विचार-विनिमय क्या है, जब माता के शरीरों में आत्मा है, मानवता है और उत्पन्न करने की शक्ति है, शिक्षा देने की महानता और क्षमता है तो वह मोक्ष को क्यों नहीं प्राप्त हो सकती। मुझे कोई उत्तर नहीं देता इस वाक् का संसार का प्राणी, कोई भी उत्तर नहीं देता। यह कहते हैं कि संकीर्णता है, तो मानव मानव को दमन करते रहो तो उसमं संकीर्णता आ जायेगी। मेरे प्यारे! पुत्र ने बहुत से वाक् बड़े विचित्र प्रगट किए, परन्तु आज का हमारा विचार केवल उन विचारों की टिप्पणी पर चला गया है।

गर्भस्थ शिशु के लिए याग

विचार क्या है? आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, याग जैसे कर्मों को जो हमारे ऋषि-मुनियों ने यह कहा है कि हे माता!तू पुत्र को जन्मीय संस्कार करना चाहती है, गर्भ में बिन्दु का प्रवेश करना चाहती है तो उसके पश्चात् भी तू याग कर। जब गर्भ में तीन माह का बिन्दु हो जाएं, वहाँ भी याग कर, जब वह आपूर्त्त हो जाएं, वहाँ भी याग कर, जन्म हो जाए, संसार में आज, वसुन्धरा से पृथ्वी की गोद में आ जाए, तो वहाँ भी याग कर। यागों से मानव का जीवन साहित्यकारों ने भरण कर दिया है। वाह रे साहित्यकारों! तुम्हें धन्य है, तुमने वैदिक वाक्यों में इसे नाना प्रकार के विचार दिए हैं। मुझे स्मरण आता रहता है एक हमारे यहाँ अगस्त मुनि हुए हैं जो मैंने कई कालों में प्रगट किया है वहाँ उनकी माता का नाम अरुणकेतु था। अरुणकेतु माता ने अपने विचार दिये हैं एक पोथी उन्होंने लेखनीबद्ध की है और उस पोथी में मानव के देखो, बिन्दु के प्रवेश और जन्म होने से पूर्व से उन्होंने लेखनियां बद्ध कीं। गर्भ में क्या, बाल्यकाल में क्या, युवा तक देखो, उस अन्नाद् को प्राप्त होने तक उन्होंने लेखनियां बद्ध कीं। और वह पोथी विद्यमान है। उसको हमारे यहाँ जीवन सारिणी पोथी कहा जाता है। उस पोथी में संसार की सर्वत्र वार्त्ताएं है। जब यह विचार मेरे समीप आते रहे हैं तो माताओं का कितना ऊर्ध्वा सहयोग रहा है और माता तपस्या करते-करते बालक को योगी बना दिया, पति देवयोगी बन गए। स्वतः योग में प्रवेश हो करके मोक्ष की पगडंडी को ग्रहण कर लिया।

परमात्मा की आराधना

तो विचार-विनिमय क्या, आज का विचार यह कि परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, तू मोक्ष की पगडंडी को ग्रहण कर। हे मानव! तू अपने आनन्द की पगडंडी को ग्रहण कर। हे मानव! तू प्राणशक्ति को जानने वाला बन। आज का विचार क्या, आज के विचारों का उचारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, और गौमेध याग करते चले जाएं। गौमेध याग का वर्णन क्या है कि अज्ञान से प्रकाश में जाने का नाम गौमेध याग कहा जाता है। जो मानव गौमेध याग करना जानता है, गौ कहते हैं देखो, पशु को, गौ नाम इन्द्रियों का है, गौ नाम बुंद्धि का है, गौ नाम पृथ्वी का है, गौ के नाना पर्यायवाची शब्द है।

परन्तु विचार यह है उनके मूल में यह कि जो गौ गौ है जो अन्धकार से प्रकाश में पहुंचाता है वह गौमेध याग कर रहा है।

यह है आज का वाक् कल मुझे समय मिलेगा, शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, मानव जीवन को सार्थक करें। आज मैं याग के ऊपर अपना एक विचार दे रहा हूँ आज का विचार समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

७ महानन्द जी द्वारा आधुनिक समाज का वर्णन 16 03 1986

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमंत्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं और जो भी मानव उसका वरण कर लेता है, अथवा उसे वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। आज का हमारा वेदमंत्र उस परमपिता परमात्मा की आनन्दमयी, श्रोत्रमयी महिमा का गुणगान गाता चला जा रहा था। क्योंकि प्रत्येक वेद-मंत्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाता रहता है, मानव उसी आभा का वर्णन कर रहा है। इसलिए हमें वेद मंत्रों को अपने में गान रूपों में गाना चाहिए, क्योंकि वही तो गाता रहता है, वही तो आभा में नियुक्त रहने वाला है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, प्रायः अनुसंधान करता रहता है। हमने इससे पूर्वकाल में महानन्द जी के विचारों के ऊपर अपनी नाना प्रकार की टिप्पणियां प्रगट कीं। उन टिप्पणियों को देते हुए हमारे यहाँ साहित्य की जो कुरीतियां नहीं रहनी चाहिए, क्योंकि महानन्द जी ने मुझे साहित्य की कुरीतियों के ऊपर अपनी चर्चाएं की है। जब भी साहित्य में कुरीतियां हो जाती हैं, उसी काल में मानव समाज का ह्रास हो जाता है। नवीन जो प्राणी आता है संसार में वह भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न और प्रायः उत्तर करता रहता है। परन्तु जब उनका उत्तर हमें प्राप्त नहीं होता, तो हम उसमें मौन हो जाते हैं और मौन होने का अभिप्राय यह कि ज्ञान से शून्य हो गया है। इसी प्रकार हमें विचार विनिमय करना है।

मानव जीवन की चार धाराएं

आज मैं पुनः से इस वाक्यों को प्रकट कर रहा हूँ जैसा मेरे पुत्र महानन्द जी के विचार रहते है। परन्तु उन विचारों में एक सार्थकता, निर्भयता का हमें बोध होता है। हमारे यहाँ नाना प्रकार की ज्ञान की धारायें हमें उपलब्धियों में प्राप्त होती रही है क्योंकि ज्ञान और विज्ञान का मानव के आत्मतत्त्व से उसका समन्वय रहता है। इसीलिए हमें आत्मतत्व के ऊपर विचार विनिमय करना है, क्योंकि दो प्रकार का विज्ञान हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, मानवीय मस्तिष्कों में नृत्य करता रहा है, एक भौतिक विज्ञान है और एक आध्यात्मिक विज्ञान है। आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता तो यह कहता है कि मैं आत्मा को जान करके प्रभु के राष्ट्र में जाना चाहता हूँ और वही मुझे मृत्युञ्जय बनना है। परन्तु भौतिक विज्ञानवेत्ता यह कहता है कि वह राष्ट्रवाद मानव समाज को एक अणुवाद और परमाणु चित्रवलियों में ले जाना चाहता है। परन्तु दोनों प्रकार का विज्ञान अपने में अनूठा है। बहुत पुरातन काल हुआ, जब इस विज्ञान के ऊपर हमारे यहाँ एक बड़ी विचित्र उपलब्धियां रहीं है और अपने में मानव अनुसंधान करता रहा है और विचार विनिमय करता रहा है कि हमारे जीवन की सार्थकता इन वार्त्ताओं को प्रगट कर रहा है। (शब्द ध्वनि से) एक मानव दर्शन है, मानव दर्शन उसे कहते हैं जब मानव अपने को स्वतः अपने में दर्शन करता है। अपने में दर्शन करता हुआ, मानव अपनेपन की आभा को नियुक्त करता रहता है। हमारे यहाँ नाना ऋषि हुए है। नाना राष्ट्रवेत्ता हुए हैं, जिन्होंने अपने आत्मीयता को जान करके मानव जीवन के दर्शन में जाने का उन्होंने प्रयास किया है।

मेरी प्यारी माताओं के संबंध में, इससे पूर्वकाल में नाना विचार प्रगट कर चुका हूँ और प्रगट करता हुआ यह उच्चारण कि मानव के जीवन की चार प्रकार की धाराएं होती है। सबसे प्रथम ब्रह्मवर्चोसि है जिसका ब्रह्मचर्य बन गया है, जिसका ब्रह्मचर्य ऊर्ध्वा में गति कर गया है, तो वह मानव का प्रारम्भिक जीवन, महान्

बनना चाहिए। उसके सहयोग के लिए माता-पिता और आचार्य और गुरुजनों की मानो एक सद्भावना होती है और द्वितीय गृह आश्रम में प्रवेश हो करके, दर्शनशास्त्रों का, दर्शनों का अध्ययन करते हुए, परमात्मा का चिन्तन करते हुए, उसमें ज्ञान की जो हमने बाल्यकाल में जाना, अपने में उपार्जन कराया है उस उपार्जन से हमें अपने जीवन को ले करके चलना है। उसके पश्चात् वानप्रस्थ परम्परा आती है। वह जो अग्नि गृह वैश्वानर नाम की अग्नि की वह पूजा करता हुआ, मानव अपने को सजातीय ब्रह्मवरणो ब्रह्म में लीन होने के लिए, वह विद्यालयों में आचार्य और ब्रह्मचारियों को शिक्षा देना है। परन्तु उसके पश्चात् जब उससे भी उपराम होता है मानो इस भौतिक विज्ञान से, ज्ञान से और इस प्रकृतिवाद से जब मानव का अन्त समय आता है, वह उपराम होता रहता है। और जब वह इससे उपराम हो जाता है तो आगे चल करके इसकी उपलब्धियां मानो देखो, आग्नेय विचारों में परिणत हो जाती है। हमारे यहाँ एक काल है, एक समाज है जिसे निर्माण करते हुए कहा है कि इस मानव समाज में एक संन्यास आश्रम आता है जो अन्तिम चरण है, जीवन का। उस संन्यास आश्रम में जब जाता है, तीनों आश्रमों से (पुस्तक से) वह उपराम हो जाता है, उससे वह महानता की प्रतिभा में परिणत हो जाता है। तो संन्यास किसे कहते हैं?

सन्यास का स्वरूप

मैंने बहुत पुरातनकाल में अपने प्यारे महानन्द जी को यह प्रगट कराया, यह वर्णन कराया कि संन्यास उसे कहते हैं जब ज्ञान में इतना रत्त हो जाता हो जैसे अग्नि की धारा होती है, जैसे अग्नि रूपों में परिणत होती रहती है अपने में इसी प्रकार आग्नेय वस्त्रों को संन्यास अपने में कहता है, विचार देता है कि इस संन्यास को ले करके मैं मोक्ष की पगडंडी को ग्रहण करना चाहता हूँ। मैं संसार से उपराम होता हुआ ज्ञान की उपलब्धियां करता हुआ, मैं अपने जीवन को बनाता हुआ, मैं क्रियाओं में जाना नहीं चाहता हूँ और केवल तपस्या के क्षेत्र में जीवन बिताऊं तपस्या किसे कहते हैं? बुद्धि, मेधा दोनों के क्रियाकलापों का नामकरण क्षेत्र माना गया है। परन्तु जब यह आगे चल करके बुद्धि और मेधा को जान करके जब ऋतंभरा में प्रवेश होता है, उस संन्यास की दशा को हमारे यहाँ ऋतंभरा में प्रवेश होता है, उस संन्यास की दशा को हमारे यहाँ ऋतम्भरा कहा जाता है। जहाँ वह सर्वत्र प्रकृति के मंडल को जान करके, चित्त के मंडल को जान करके, आत्मवेत्ता बनने के लिए वह तीनों आश्रमों को त्याग करके,उस संन्यास के क्षेत्र में पहुंच जाता है, वहाँ पर प्रभु का चिंतन करता है। अपने विचारों को अग्नीय बना लेता है जैसे अग्नि यज्ञशाला में प्रदीप्त हो रही है, उसका जैसा रंग रूप माना गया है वही आभा में नियुक्त होता हुआ, वह संन्यास उसे इसी प्रकार की आभा में नियुक्त करा देता है।

तो विचार आता रहता है बेटा! मैं तुम्हें उच्चारण कर रहा हूँ कि परमात्मा के क्षेत्र में जाने के लिए मानव संघर्ष को प्राप्त होता है। वह आचार्य को संन्यासी ब्रह्मवेत्ता को अपने को समर्पित कर देता है और समर्पित करके सर्वभूतेषु बन जाता है। सर्वभूतेषु किसे कहते हैं,जो जितनी भी भूतादि ब्रह्मा चाहे वह प्रकृति का मण्डल हो, चाहे वह मानो जड़वत् हो, चाहे चैतन्य हो उस सब में उस अपने प्रभु को निहार करके वह मौन हो जाता है, निहारता रहता है और निहारकर वह मौन हो जाता है और वह जो मौन प्रवृत्ति है, वही उसकी देखो, विज्ञान के, आध्यात्मिक विज्ञान के क्षेत्र में ले जाती है मनसा-वाचा-कर्मणा इनको त्याग देता है। प्रकृति का मण्डल भी शान्त हो जाता है। यह संन्यासी क्या करता है कि यह लोक लोकान्तरों में क्या, एक-एक अणु और परमाणु में वह मानव दार्शनिक बन करके प्रभु का दर्शन करता है। उस समय जब यह प्रभु का दर्शन करता है, उसी के पश्चात् आभा का जन्म होता है, कौन-सी आभा है, जिसमें लोक-लोकान्तरों का अध्ययन करता हुआ, लोक-

लोकान्तरों की प्रतिभा में रत्त होता हुआ, इस ब्रह्माण्ड में उस प्रभु का ही जो दर्शन करता है। वही तो मानवीय दर्शन है, उसी दर्शन के आधार पर आग्नेय जीवन बन जाता है। संन्यास का अभिप्राय यह है कि जिस समय हम अपने वस्त्रों को परिवर्तित करते हैं, अपने वस्त्रों को आग्नेय जीवन या सबसे प्रथम मानव की आग्नेय प्रवृत्ति होनी चाहिए, आग्नेय ज्ञान होना चाहिए क्योंकि देखो, ज्ञान अग्नि है। ज्ञान दाह करने वाली है, वह पापों का शोषण करने वाला, ज्ञान हमारे समीप आना चाहिए। इस प्रकार हमारा वैदिक साहित्य कहता है। वैदिक साहित्य में कहते हैं कि संन्यास में ज्ञान होना चाहिए। संन्यासी में ज्ञान होना चाहिए वह परमात्मा के निकट जाने वाला हो, अन्यथा देखो, वह नार्किक जीवन बन जाता है तो विचार विनिमय क्या है? आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मेरे भद्र ऋषि मण्डल, मेरे मानव समाज! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। इनका वाक् एक बड़ा विचित्र चल रहा था। आज जिस स्थली पर यह हमारी आकाशवाणी जा रही है, उस स्थली पर यागों का पूर्णत्व को प्राप्त होने वाला याग हुआ है। मेरा हृदय बड़ा प्रसन्न रहता है जब मैं इन यागों की ध्वनियों को वेदध्वनियों को, अपने में श्रवण करता रहता हूँ। क्योंकि जब मेरा बाल्यकाल था, तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा जब मैं अध्ययन करने लगा।

याग मे साकल्य

तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यागों के क्रियाकलाप में लगाया और वह याग भौतिक याग (शब्द ध्वनि से) जैसे यह साकल्प अग्नि में प्रदान किया जाता है तो इस अग्नि साकल्य में तीन प्रकार के पदार्थों का प्रतिपादन किया जाता है। एक सुगन्धित होता है एक पौष्टिक होता है, एक रूग्णनाशक होता है। तो तीन प्रकार के पदार्थों, साकल्यों को ले करके हम यज्ञशाला में आहुति प्रदान करते है। सुगन्धि से वायुमण्डल पवित्र होता है और पौष्टिक पदार्थों से यजमान् के हृदय में, होताजनों के हृदय में पुनः से देखो, उनका हृदय विचित्र और पौष्टिक बन जाता है, सूक्ष्म तरंगों के द्वारा, पौष्टिक पदार्थ मानो देखो, एक तरल पदार्थों के रूप में, अन्तरिक्ष में छा जाता है। वही अन्तरिक्ष में जब छायमान होता है, मानो देखो, वही वृष्टि के मूल में परिणत हो जाता है और द्वितीय वाक् यह रोग नाशक, रूग्णवादी हृदयों में जब वह परमाणु जाता है, तो उनके हृदय में मानों एक चेतनता जागरूक हो जाती है। तो मैं इस याग की चर्चा इसलिए कर रहा हूँ कि याग का समापन हुआ है, याग के कर्मकाण्ड की पद्धतियों से मानव विचित्र हुआ है।

बरनावा का पूर्वकाल

विचार-विनिमय क्या? मैं तो यजमान् का साथी बना रहता हूँ, यजमान् के हृदय को सदैव यह उलास देता रहता हूँ हे यजमान्! तेरा मानवीय हृदय पवित्र होना चाहिएं, हे यजमान्! तेरे हृदय की कामनाएं सदैव मानो देखो, पूर्णता को प्राप्त होती रहे। यजमान् यज्ञशाला में विद्यमान हो करके हूत कर रहा है, अपनी श्रद्धामयी, घृतमयी आभा की आहुतियां प्रदान कर रहा है। परन्तु देखो, इन वाक्यों को ले करके मैं अग्रणीय नहीं बनाना चाहता हूँ। आज जिस स्थली पर यह चतुर्वेद पारायण याग हो रहा हे मेरा अन्तर्हृदय इससे प्रसन्न रहता है कि बहुत समय के पश्चात् हृदय का मङ्गल हुआ, सूर्य का उदय हुआ। देखो, यहाँ मुझे स्मरण है, मुझे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव स्मरण कराते रहते थे, भ्रमण कराते रहते थे, जिस स्थली पर यह चतुर्वेद पारायण याग हो रहा है। कुछ भाग तो इस स्थली का नदी के देखो, नदी की बहती धारा में समाप्त हो गया, परन्तु देखो, कुछ भाग रह रहा है इस भाग पर विद्यालय रहा है, वह भाग कुछ नदी के आंगन में भी प्रवेश हो गया है। परन्तु यहाँ इन यागों ब्रह्म

बाह्य इसी भूमि पर किसी काल में कौन ब्रह्मः है पाण्डु पुत्रों ने यहाँ शिक्षा का भी अध्यापन किया है और गुरु द्रोणाचार्य ने यहाँ शिक्षा की प्रणाली बड़ी विचित्रता में लाने का प्रयास किया है। परन्तु देखो, यही भूमि काल आता रहा है जहाँ यागों का चलन होता रहा, तपस्वी अपने में तपस्या करते रहे, वही काल आने के पश्चात् मानो समाज में महाभारत काल के पश्चात् जो निर्लज्जता संसार में इस काल में आई, कुछ वाममार्ग से आई, कुछ जैन काल से आई है, कुछ यवनकाल में आई है। मेरी पुत्रियों का हनन करना, मानो देखो, मेरी पुत्रियों के सतीत्व को हनन करने का क्रियाकलाप भी होता रहा है। आज मैं साहित्य तो देना नहीं चाहता हूँ केवल ये मेरा उद्गार है कि जिस भूमि पर मानो देखो, शमशान बन जाता है वहाँ पुनः से देखो, वेदों की ध्वनि का प्रसार हो गया है। यह मेरा हृदय मानो देखो, पवित्रता में परिणत होता हुआ यह कहता है हे मानव समाज! मानो देखो, यह सौभाग्य का विषय है, जब वेद के मन्त्रों के आधार पर आहुति साकल्प प्रदान कर रहा है, वायुमण्डल पवित्र हो रहा है, मानो ब्राह्मण अपना-अपना उद्गीत गा रहा है। यह तो मेरे आनन्द का एक विषय है। आज मैं बहुत पुरातनकाल से इस वायु मण्डल में भ्रमण करता रहता हूँ। मेरे जीवन में पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे जीवनमुक्त बनाया, परन्तु देखो, मुझे मोक्ष नहीं दिया। विचार क्या? मैं मोक्ष चाहता भी नहीं, मेरा तो जीवन मुक्त, जीवन बना रहे, तो मानो देखो, मैं इस संसार को निहारता रहूँ। मैं ब्रह्माण्ड को निहारता रहूं और ज्ञान और विज्ञान की वार्त्ता में पूज्यपाद गुरुदेव के उस आभा में उनके वाक्यों का पालन करता रहूँ। मेरा तो हृदय इसी में निहित है।

पूज्य महानन्द जी का जीवन

परन्तु देखो, मोक्ष और देखो, यह जीवन मुक्तता क्या है? मानो मेरे जीवन में पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे याग के माध्यम से इस भौतिक याग से ले करके आगे आध्यात्मिकवाद में ले गये और आध्यात्मिक वाद में उस परमाणुवाद में ले गये, जहाँ मानव अपने परमाणुओं को जान करके जैसे माता के गर्भस्थल में परमाणुओं से शिशु का निर्माण होता है, ऐसे ही योगीजन जो जीवन मुक्त होते हैं, जो चित्त के मंडल से प्रवृत्तियों में उपराम हो जाते है। मानो देखो, उनका जीवन एक अभ्योदय होता रहता है। मैंने इससे पूर्वकाल में वर्णन किया था, मैं इन वाक्यों को जानने लगा था। इससे पूर्व यह वाक् मैंने प्रगट किया पूज्यपाद गुरुदेव ने भी इसकी टिप्पणियां की है। मानो देखो, जैसे मानव समाज है, मानव समाज का सृष्टि के प्रारम्भ में जो जन्म हुआ है मानो देखो, वह यौगिक आभाओं से हुआ है, मानो देखो, जीवन मुक्तवादी प्राणियों ने परमाणुओं से किया है, वह परमाणु से अपने स्थूल शरीर को भी प्राप्त हो जाते हैं, सूक्ष्म शरीर को भी प्राप्त हो जाते हैं और कारण इनमें जा करके मोक्ष की पगडंडी उसे प्राप्त होती है। परन्तु देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मै तो इतना ही जानता हूँ कि सूक्ष्म कारण और स्थूल शरीरों की प्रतिक्रिया जान करके, मैं उसे स्थूल ही बना लेता हूँ और मानो इसे सूक्ष्म भी बना लिया जाता है और कारण में जा करके प्रभु के, चित्त के दर्शन में मैं परिणत हो जाता हूँ। ऐसी अनन्य आत्माएं इस वायुमण्डल में भ्रमण करती रहती हैं। आज मैं इस आभा में भी जाना नहीं चाहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक वाक् जैसे मेरे वाक्यों पर इन्होंने टिप्पणियां की, कि मानव समाज का जीवन तो ऐसे हुआ, जैसे मानो यह जो सिंहराज है और जो नाना प्रकार की जो योनियां हैं इनका जन्म कैसे होता है, ये बड़ा एक विचारीणाय प्रसंग है। इस संसार में मैं इस विचार को पुनः से देता रहता हूँ, क्योंकि योगीजन जो होते हैं यह अपनी-अपनी भूमिका में सब योनियों को प्राप्त हो जाते है। वह योनियां प्रभु के नियम के मानो देखो, आधार पर उन कणों को के करके, कोई सिंहराज बनता है, कोई मृगराज बनता है, और मानो देखो, कोई किसी प्रकार के देखो, गौ

आदि योनियों को प्राप्त हो करके अपने-अपने सृष्टि के कर्म का प्रारम्भ हो जाता है। सृष्टि का कर्म इसी प्रकार प्रारम्भ होता है क्योंकि मैंने बहुत पुरातनकाल में पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न किया था, वह जो स्थावर सृष्टि है वह एक दूसरे के सहयोग से वायुमण्डल, प्रकृति के, ब्रह्म के सहयोग से स्थावर सृष्टि का जन्म होता है सबसे पूर्व। इसी प्रकार मुनिवरों देखो, कोई आत्मा अंडज में प्रवेश कर गयी, कोई अंडज सृष्टि की प्रकृति में से परमाणु ले करके कोई जंगम बन गयी, कोई स्थावर बन गई और यह सृष्टि का कर्म प्रारम्भ हो गया।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में इसके ऊपर विचार दिया। और यह कहा कि हे पुत्र! गहे किरणस्वस्ती सुप्रजाः ऐसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा, मानो देखो, उन विचारों में, मैं तो जाना नहीं चाहता हूँ, मैं केवल तुम्हें संक्षेप से देने के लिए आया हूँ कि युवावस्था में देखो, सब प्राणियों का जन्म होता है। जिससे पालना में मानो देखो, सहयोगिता को प्राप्त होते रहते हैं जैसा मैंने बहुत पुरातनकाल में अपने तीनों शरीरों को जान करके वह स्थूल, सूक्ष्म और कारण मानव प्रवृत्तियों में मानो इस आत्मा को देखो, इस शरीरों में भ्रमण कराता रहता हूँ। इसी प्रकार अहम् आत्मा में एक आत्मा हूँ, परन्तु देखो, आत्म ब्रह्मा, ब्रह्माण्ड और देखो, विज्ञानवेत्ता भी मानो देखो, उसका सार्थक बन जाता है।

यज्ञ में बलि का अभिप्रायः

तो विचार विनिमय क्या, आज मैं पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन करा रहा हूँ, वहीं आना चाहता हूँ, आज जो यज्ञमान् याग कर रहा है, मेरी अन्तरात्मा बड़ी प्रसन्न हो रही था। परन्तु यागों की ध्वनि में अपने में ध्वनित होता हुआ। समाज अपनी आभा में रत हो रहा है। इसी प्रकार हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। परन्तु देखो, महाभारत काल के पश्चात् मानो देखो, विकृति आना प्रारम्भ हुआ। याग जैसे कर्मों में यज्ञमान् को प्रसाद दिया जाता है और वह प्रसाद देखो, हिंसा का प्रसाद ले करके देखो, अहिंसा न रह करके वह देखो, गो मेध याग में गौ के मांस की आहुति देना और अजामेध याग में बकरी के मांस की आहुति देना, इसी प्रकार देखो, अश्वमेध याग में घोड़े के मांस की आहुति देना और इसी प्रकार बलि की प्रथा प्रारम्भ हुई। इस मानव समाज ने बलि को नहीं जाना फिर बलि कहते किसे हैं? वाजपेयी यागों में बलि का वर्णन है और भी नाना यागों में बलि का वर्णन माना गया है। परन्तु बलि का अभिप्राय यह नहीं है कि प्रत्येक मानव के जीवन को हमारे ऋषि मुनियों ने उसको याग से कटिबद्ध किया है, याग से उसका समन्वय किया है और वह याग से कैसे समन्वय किया है? मुनिवरों! देखो, बलि का अभिप्राय यह है कि अपने जीवन को क्रियात्मक बनाना और अपने को हूत कर देना। हूत का अभिप्राय यह कि मैंने अपने जीवन में परिश्रम किया है, परिश्रम का देखो, ऊर्ध्वा में नाम एक बलि के रूपों में परिणत किया गया है। बलि का अभिप्राय यह नहीं है कि प्राणी को हनन किया जाए। यह वाजपेयी यागों में बैल के बछड़े की बलि का वर्णन आता है। यह सब पामरों का विचार है। परन्तु वैदिक साहित्य वालों का यह विचार रहा है, हमारा यह विचार रहा है, पूज्यपाद गुरुदेव आदि, ऋषियों का यह विचार रहा है कि बैल की बलि का वर्णन आता है कि पृथ्वी से वृष्टि होती है, वृष्टि हो करके ही मानो देखो, याग का प्रतीक है, उस समय बैल की बलि का वर्णन है। बल की बलि का वर्णन यह कि पृथ्वी के मांस को उस देव की चमड़ी को उधेड़ करके, उसके मांस में बीज की स्थापना की जाती है। तो देखो, वह परिश्रम का नाम एक बलि के रूपों में परिणत किया है। तो जो मन से देखो, अपने को समर्पित कर देता, वही तो बलि के आभा में परिणत होता है। परन्तु देखो, महाभारत काल के पश्चात् वेदों के मंत्रों के ऊपर टिप्पणियां की, उसके ऊपर अनर्थ हुआ और वेदमंत्रों में देखो, हिंसा का चलन किया, इन स्वार्थियों ने, इस वाममार्ग

समाज ने, मानो देखो, ब्राह्मण समाज ने उसी प्रकार उन वाक्यों को अपना करके अपना व्यवसाय बनाया। देखो, वह धर्म ले ले करके, व्यवसाय बना, व्यवसाय बन करके वही हमारे अज्ञान का मूल बन गया।

बहुत पुरातन काल में यही आभा एक यूनान नामक राष्ट्र है, यूनान नाम करके राष्ट्र के व्रीतकेतु नामक एक पुरुष था, वह बैल की बलियों का वर्णन करता रहता था। उन्होंने वाममार्ग समाज से किया, उन्होंने भी उसका खण्डन किया, परन्तु उसके पश्चात् बैल की बलि का वर्णन है। वह अप्रतं ब्रह्मा वृहा **यह जो जैन काल से पूर्व, जो मूसा का काल आया, मूसा के काल में, इन वाममार्गियों ने यह प्रथा ले ली।** प्रत्येक दिवस आता है वह मुहम्मद के मानने वालों में भी आता है। मुहम्मद ने इस वाक् के ऊपर यह कहा है कि यह बैल की बलियां जो दी जा रही हैं, यह बन्द होनी चाहिएं, मानो देखो, अजामेध की यह अशुद्ध है। यह नहीं देना चाहिए। परन्तु देखो, यह योगियों की प्रथा व मुहम्मद समाज के मानने वालों ने प्रतीत हुई और उसी का देखो, मुहम्मद के वाक् को न मान करके, अपनी रसना के स्वाद में आ करके, देखो, यहाँ प्राणियों की हिंसा प्रारम्भ की, इनका वध प्रारम्भ किया। वह उनकी कुर्बानी कहने लगे, बलि कहने लगे। अरे, यह सब वाममार्ग से ही प्रथा, दूसरे विचारों में परिणत हुई है। उन्होंने वाममार्ग की अपनी रसना का स्वाद तो ले लिया, परन्तु देखो, वेद के मंत्र को नहीं विचारा। वेद के मन्त्र को, साहित्य को नही विचारा उसका परिणाम यह हुआ कि मुहम्मद के मानने वाला हो, चाहे ईसा के मानने वाला हो, चाहे मानो देखो, राम की ध्वनि करने वाला हो, किसी भी प्रकार का प्राणी हो, राम जैसे जिन्होंने अपने जीवन में देखो, वह सात्विक आहारों को पान करते थे। राजा हो करके यागों का चलन करते थे। आज उनके नामों का कीर्तन है परन्तु गृहों में मांस का भक्षण हो रहा है। जब मैं यह दृष्टिपात करता हू, अरे, यह कैसा दुर्भाग्य है। भगवान् कृष्ण भी महारानी रूक्मिणी से यह कहते देवी! संसार में आहार पवित्र होना चाहिए, आहार नहीं होगा तो व्यवहार नहीं बनेगा और व्यवहार नहीं बनेगा तो हमारी मानवीयता नहीं बनेगी और मानवीयतव नहीं बनेगी तो किसी को ऊर्ध्वा में पहुंचा नहीं सकेंगे। हम अपने विचारों से समाज को महान् नहीं बना सकते। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है भगवान् कृष्ण जब रूक्मिणी से यह कहते थे। आधुनिक काल में देखो, कृष्ण का कीर्तन हो रहा है। राधा जो अपने जीवन में दुर्गन्ध पदार्थों का पान नहीं करती थी, उसे कहते हैं राधा और द्वितीय रूपों में उसे कृष्ण पत्नी कहते है। राधा कृष्ण दोनों का संकीर्तन हो रहा है परन्तु देखो, कीर्तनवादी, मुझे ऐसा दृष्टिपात आता है कि वह मांस का भक्षण कर रहे है। उनका जीवन, उनका विचार, विचारों को त्याग दिया है केवल यह चाहते हैं कि नाम कीर्तन से हमारी मुक्ति हो जाए। **अरे, मुक्ति तो उस काल में होगी, जब मानव अपने कर्म वचन से ऊँचा बनेगा, जब मन कर्म वचन तीनों उनके होंगे**, तभी तो यह मानव समाज ऊँचा बनेगा। जब मैं विचारता रहता हूँ राम का काल, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे प्रगट कराते रहते हैं, मुझे भी उस काल को दृष्टिपात करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। **उनके जीवन में केवल कन्दमूल का आहार करते थे, तपस्या काल में उन्होंने देखो, अरूषा से पत्रों को पान किया और अरूषा से कृत पत्रों को पान करके उसमें औषधियों का पान करके बारह-बारह वर्ष जब तक अनुष्ठान करते रहते थे। तपस्या का जीवन तपस्या का होता है।**

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते है। आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार यह कि मानो देखो, इस प्रकार का यागों का चलन यागों के ऊपर जब आक्रमण प्रारम्भ हुआ, वही मनोविज्ञान उसमें वैज्ञानित हो गया प्रत्येक याग की प्रतिभा का व्रत न ले करके, अज्ञानता की वेदी पर परिणत हो रहा है। आज मैं विचार यह देने के लिए आया हूँ, और मेरा विचार यह था कि मै अपने पूज्यपाद गुरुदेव एक विचार दे

रहे थे, और विचार यह था कि अन्तिम चरण मानव के जीवन का संन्यास है। जब मैं संन्यास के क्षेत्र में आधुनिककाल में जाता हूँ तो आधुनिककाल का समाज संन्यासी यह कहता है अहम् ब्रह्मऽस्मि मैं ब्रह्म बन गया हूँ। परन्तु जब उसके एक कांटा भी लग जाता है, तो ब्रह्म को अपने से दूरी कर देता है, परन्तु उस समय ब्रह्मा की आभा समाप्त हो जाती है जब मैं यह विचारता हूँ कि वह दुर्गन्ध पदार्थों का पान कर रहे हैं, अपने ऐश्वर्य में रसना को इतना दूषित विचार लिया है कि देखो, मानो देखो, बीस के लगभग प्राणी उसके जीवन से अपने जीवन को हनन कर लेते है। वह मानो देखो, भगवा वस्त्रों से कोई लाभ नहीं होता है। मानो देखो, वह सुरापान में लगा हुआ है, आधुनिक काल का पूज्यपाद सन्यास भी सुरा-पान में लग गया है, देखो, मानो सुल्फावाद में लग गया है, वह अपने जीवन को समाप्त कर रहा है। तो मुझे तो इस पर दुखदता ही प्रतीत होती है। मानो देखो, जिन महापुरुषों ने संन्यास लेने के पश्चात् वह घोषणा राजा को कर रहे हैं, राजा से कहते हैं, राजा राष्ट्र को ऊँचा बना, अन्यथा हम तेरे से आ करके विरोध करेंगे। परन्तु देखो, राजा नम्र हो करके ऋषि के चरणों को छू रहा है। आज का राजा ऐसा है कि संन्यासी घोषणा करते हैं उसकी मृत्यु कर देता है। जब मैं यह वाक् लाता हूँ कि उसकी मृत्यु होने जा रही है देखो, यहाँ प्राणियों के ऊपर कहते हैं, संन्यासी कहता है मृत्यु बन्द होनी चाहिए राष्ट्र में, परन्तु राजा उनके वाक्य को प्रजा की दृष्टि से नहीं दृष्टिपात कर रहा है। उनके वाक्यों को एक आभा में परिणत होने जा रहा है।

अश्वपति के राष्ट्र में गुरुदेव

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक समय में महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में पहुंचे भ्रमण करते हुए और राजा ने अपना आश्चर्य स्वीकार किया कि ऋषि का आगमन कैसे हुआ। उन्होंने कहा प्रभु! आइये आप कुछ पान कीजिए। तो पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा कि मैं इस अन्न को पान नहीं करूंगा। राष्ट्र का अन्न दूषित अन्न होता है, राष्ट्र का अन्न मानो दूषित होता है, मैं इसको पान नहीं करूंगा। परन्तु देखो, आधुनिक काल का संन्यासी का कोई द्रव्यपति, विशेष द्रव्यपति राष्ट्र से जिसका सम्बन्ध हो गया है, वह शिष्य बन जाए तो वह अपने में यह स्वीकार करता है कि मेरे द्वारा तो राजा महाराजा शिष्य बने हुए है। उन्हीं का आहार करके अपनी आत्मा का हनन कर रहे है। मानो देखो, उस अन्न को पान करके वह अपना हनन कर रहे है। इसीलिए देखो, महापुरुषों का एक तिरस्कार हो रहा है। महर्षियों का तिरस्कार हो रहा है। अरे, सन्यास का ह्रास हो रहा है। उच्चारण करना तो प्रियता है, परन्तु मौन रह करके राजा को या समाज को ऊँचा बनाना, यह ज्ञानी पुरुषों का कर्त्तव्य रहा है, यह परम्परागतों से रहा है। मैं यह कहता रहता हूँ मैं पूज्यपाद गुरुदेव को आधुनिक काल में संन्यास की परम्परा का वर्णन विलासियों का जीवन स्वीकार किया। संन्यासियों का जीवन दृष्टिपात करो, उनमें विलासिता है, लोलुपता है, द्रव्यता है। उच्चारण करने की क्षमता तो उनमें आ जाती है, परन्तु देखो, आत्मा को शोधन करने की क्षमता नहीं आ पाती। परन्तु देखो, मैं उच्चारण कर रहा हूँ कि आधुनिककाल में मेरा जो ऋषियों का समाज है वह कितना दूषित हो गया है, वह कितना भ्रष्ट हो गया है। तपस्वियों के यहाँ राजा जाते हैं और राजा नम्रता से चरणों को स्पर्श करके ये कहते हैं कि भगवन! हमें कोई मार्ग दीजिए, जिससे हम आत्मकल्याणी बनें। उन राजाओं को ऋषि-मुनि देखो, शिक्षा देते थे, ऋषि-मुनि राजाओं को संन्यास दे करके ब्रह्मवेत्ता बनाते थे। मानो देखो, आज यदि उन राजा से साधु की, संन्यासी की मित्रता हो जाए, तो अपना सौभाग्य वह स्वीकार कर रहा है, अपने में सौभाग्यशाली बन रहा है। परन्तु देखो, यह विचारा नहीं कि राजाओं को तो मार्ग देने वाले ऋषि-मुनि होते हैं, तपस्वी होते हैं, जो अपने मन और प्राण का समन्वय करना जानते हैं,

ओ३म् को अपनी आभा में रत्त करना जानते हैं, वही तो समाज को एक मार्ग दे सकते हैं, विचित्रता प्रदान कर सकते हैं। परन्तु देखो, मानव भी प्रसन्न हो रहा है। हमारे यहाँ एक महापुरुष तप रहा है वह मानो बारह वर्ष हो गए हैं, वह विश्राम भी नहीं कर रहा है, वह मानो देखो, खड़ा ही रहता है, परन्तु देखो, उसमें अवगुण कितने हैं उसको कोई नहीं दृष्टिपात कर सकता। परन्तु देखो, वह सुरापान कर रहा है, सुल्फापान कर रहा है, अपने अच्छाई के परमाणुओं को नष्ट कर रहा है, और वह समाज को और दूषित कर रहा है। भगवान् कृष्ण ने ऐसे तप का निषेध किया है, हम परम्परागतों से निषेध करते चले आए हैं क्योंकि देखो, हमारे यहाँ तो यह है कि अध्ययन करना चाहिए आत्मकल्याण के लिए, मानव का दर्शन होना चाहिए। जहाँ मानव का दर्शन होता है वहीं तो मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है, ज्ञानी अपने में पवित्र कहलाता है।

इसी प्रकार जब में यह विचारता हूं तो मैं मैं साधुओं की निन्दा नहीं कर रहा हूँ मैं केवल उनके अवगुणों की चर्चा कर रहा हूँ और गुणों का प्रतिपादन कर रहा हूँ। उनमें मानो देखो गुण होने चाहिए, जहाँ चला जाय वहाँ आनन्द की वृष्टि होती चली जाए। आधुनिककाल में देखो, एक विचार देता है, अपनी लोलुपता के लिए एक सन्यासी विचार देता है कि देखो, अमुक अग्रहे में, राष्ट्र में चला गया, मुझे ऐसी सिद्धियां हो गई, उन सिद्धियों से मैंने दूसरे राष्ट्रों में भ्रमण किया। परन्तु भ्रमण करने से राष्ट्रों में तू ऊँचा नहीं बन गया। तू ऊंचा तो जब बनेगा जब मानो देखो, द्वितीय राष्ट्र के प्राणी तेरे तपोमयी जीवन को पान करने के लिए तेरे चरणों की वन्दना करेगा। मानो देखो, तू जाता है, भ्रमण कर रहा है बड़ी विचित्रता है, परन्तु यह कोई आश्चर्य नहीं है। आश्चर्य जब होता है जब वह राजा आ करके तेरे चरणों की वन्दना करते हैं। राष्ट्र का राजा तेरी वन्दना करता है और मानो तू अपने ऋषि-मुनियों के वेद का उपदेश दे करके और उनको सदमार्ग पर ले जाता है। तो तेरी सादगीयता उस काल में महान् और पवित्र बन जाती है।

परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यह प्रगट कर रहे थे कि संन्यासी अग्नेमय जीवन होता है, ज्ञानी होता है। अग्नेमय का अभिप्राय यह कि जैसे अग्नि प्रदीप्त होती है और प्रदीप्त हो करके अग्नि के द्वारा न उसके साथ में सिंह आता है, न मृगराज आता है, अग्नि का दाह हो रहा है। परन्तु देखो, इसी प्रकार जब सन्यासी अपने में ज्ञान रूपी अग्नि का याग करता है, हृदय में तपस्या का स्रोत बह रहा है, वही अपनी इन्द्रियों का साकल्य बना करके आत्मीय याग कर रहा है। उस यज्ञशाली, उस सन्यासी महापुरुष के द्वारा प्रत्येक राजा और प्रत्येक प्राणी उसके चरणों की वन्दना करता है और उसके तप की सुगन्धि सुगन्धित हो जाती है और सुगन्धि को ले करके देखो, अपनी आभा को प्राप्त हो जाता है।

मानो मैं अपना विचार विशेष नहीं देना चाहता हूँ क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी मानो नाना वाक् प्रगट किए हैं। मैं उन्हीं वाक्यों को ले जा करके कह रहा हूँ कि आधुनिक काल का न गृह रहा है, न ब्रह्मवर्चोसि रहा है, और न देखो, वानप्रस्थ रहा है, क्योंकि राजा की पद्धति भ्रष्ट होने पर ये तीनों आश्रम अपने आप ही भ्रष्ट हो गए हैं। इसी प्रकार देखो, जब यह तो राष्ट्रीय क्रिया-कलाप है, ब्रह्मचारियों को वानप्रस्थ शिक्षा दे और गृह आश्रम, मानो देखो, अपने पन में पनपता रहे, अपनी क्रिया में लगा रहे और देखो, ज्ञान और विज्ञान की वार्त्ताएं प्राप्त करके अन्त में वह त्यागी बन करके भयंकर वनों में तप करने वाला ब्रह्ममयी याग करने वाला हो। वह आनन्द को प्राप्त हो जाता है, ये मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी प्रगट किया है। मैं अपने विशेष चर्चा न देता हुआ, मैं अपने विषय पर वहीं आना चाहता हूँ कि मानव ब्रह्म वर्णा देखो, यागां रूद्र भव सम्भवा अव्रसम्व्रहे हे यजमान्! मेरा तो अन्तरात्मा तेरे साथ रहता है, तेरे जीवन का सौभाग्य अखंड बना रहे,

आयु में पवित्रता आ जाए, यह मेरी सदैव कामना रहती है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा चाहता हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपना बड़ा विचित्र पुनः से मेरे हृदय में एक क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। जैसे विचारों की क्रान्ति, इनके हृदयों में रहती है, हमारे हृदयों में उस क्रांति का पुनः से प्रादुर्भाव न हो जाए, इनके विचारों को श्रवण करके। परन्तु विचार केवल इतना ही है कि मानव को अपने जीवन में महान् और तपस्या में परिणत हो जाना चाहिए, दुर्गुणों को त्यागना है और अच्छाइयों को ग्रहण करना है, ये हमारे इन वाक्यों का अभिप्राय है। परन्तु देखो, सृष्टि की वार्त्ताएं मेरे पुत्र ने प्रगट की। इसके ऊपर टिप्पणी प्रगट करेंगे, आज इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है। आज का विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, सबमें सब देखो, सबकी सम्मति महान बनें, सबके विचार पवित्र हों, राष्ट्र ऊँचा बनें, अपने देखो, विधि-विधान वाला हो। आज का वाक् अब समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।